संपादकीय जागरण
सोमवार, 26 जनवरी, 2026 : माघ शुक्ल – 8 वि. 2082

अधिकारों के साथ कर्तव्यों का बोध भी उतना ही आवश्यक है

विकसित गणतंत्र

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण करते हुए जिस तरह यह कहा कि सभी भारतवासी जीवंत गणतंत्र को शक्तिशाली बना रहे हैं, उसका सीधा संदेश यही है कि देश की प्रगति में हर किसी का योगदान होता है। यह उनके संबोधन से तब स्पष्ट भी हुआ, जब उन्होंने सेनाओं के साथ अर्धसैनिक बलों एवं पुलिस के जवानों से लेकर स्वास्थ्यकर्मियों, शिक्षकों, विज्ञानियों, इंजीनियरों समेत किसानों, सफाईमित्रों आदि का उल्लेख किया। निश्चित रूप से किसी भी देश के विकास में उसके सभी नागरिकों का योगदान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। भारत ने गणतंत्र के रूप में पिछले 76 वर्षों में जो भी प्रगति की है, उसके लिए सभी को गर्व होना चाहिए। यह एक तथ्य है कि तमाम समस्याओं और चुनौतियों के बावजूद भारत ने एक ओर जहां स्वयं को एक सफल गणतंत्र सिद्ध किया है, वहीं दूसरी ओर विश्व के प्रमुख राष्ट्र के रूप में भी उभारा है। आज अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत की स्थिति कहीं अधिक सुदृढ़ है। इसी सुदृढ़ता के कारण 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखा जा रहा है। इस स्वप्न को साकार करने के लिए संकल्पित होने का यह सही समय है। यह संतोष का विषय तो है कि देश सही दिशा में बढ़ता हुआ दिखने के साथ विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां भी प्राप्त कर रहा है, लेकिन इसे लेकर सजग रहने की भी आवश्यकता है कि विकसित भारत के लक्ष्य को पाने के लिए अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति कैसे हो, इसकी चिंता शासन-प्रशासन के लोगों के साथ आम जनता को भी करनी होगी।

यह स्वाभाविक है कि शासन एवं प्रशासन की ओर से देश को आगे ले जाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जो कदम उठाए जा रहे हैं, उनका राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में विस्तार से उल्लेख किया, लेकिन इसके बाद भी यह नहीं कहा जा सकता कि देश एकजुट होकर उस लक्ष्य को पाने के लिए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, जिसकी चर्चा प्रधानमंत्री की ओर से बार-बार की जा रही है। यदि देश को वास्तव में 2047 तक विकसित राष्ट्र बनना है तो सरकारी कामकाज के तौर-तरीकों में मूलभूत परिवर्तन लाना आवश्यक है। यह ठीक नहीं कि जिन समस्याओं से हमें अब तक मुक्ति पा लेनी चाहिए, वे पीछा नहीं छोड़ रही हैं। यह आभास गहराई से किया जाना चाहिए कि नौकरशाही का भ्रष्टाचार, वायु एवं जल प्रदूषण में वृद्धि, शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर उठते प्रश्न और शहरी ढांचे में अपेक्षित सुधार के अभाव आदि ने हमारी प्रगति को बाधित कर रखा है। यह समझा जाना चाहिए कि इन बाधाओं को दूर करके ही विकसित देश के सपने को साकार किया जा सकता है।

हाई अलर्ट के बीच हत्या

यमुनापार के शास्त्री पार्क क्षेत्र में प्रापर्टी डीलर की चौक पर सरेआम गोलियां मारकर हत्या कर देना अत्यंत चिंताजनक है। यह कानून व्यवस्था की दृष्टि से एक बड़ा प्रश्न इसलिए भी है कि गणतंत्र दिवस के कारण पूरी दिल्ली हाई अलर्ट पर है। ऐसे में सुरक्षा व्यवस्था को धता बताते हुए बदमाशों ने उस पर आठ राउंड फायर किए, जिसमें से पांच गोलियां उसे लगीं। मामला तब और भी गंभीर हो जाता है, जब सामने आता है कि गोलियों से घायल व्यक्ति के दोस्त द्वारा वहां मौजूद लोगों से उसे अस्पताल पहुंचाने की गुहार लगाने के बावजूद लोग टस से मस नहीं हुए। इस बीच दोस्त का भाई वहां पहुंचा फिर दोनों एक रेहड़ी पर लिटाकर व्यक्ति को अस्पताल ले गए, लेकिन उसने रास्ते में दम तोड़ दिया।

> गणतंत्र दिवस की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच चौक पर युवक की हत्या यह दर्शाती है कि दिल्ली में बदमाश बेखौफ हैं

गणतंत्र दिवस की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच ये घटना कानून व्यवस्था पर बड़े सवाल खड़े करती है। अपराधी बिना मुंह ढके वारदात कर पैदल ही हथियार लहराते हुए चले गए, जो दर्शाता है कि क्षेत्र में बदमाशों को पुलिस का तनिक भी भय नहीं है। राष्ट्रीय राजधानी में अपराध की यह स्थिति किसी सूरत में स्वीकार नहीं की जा सकती। दिल्ली पुलिस के आला अधिकारियों को इस घटना का संज्ञान लेना चाहिए और उन पुलिसकर्मियों पर भी कार्रवाई की जानी चाहिए, जिन पर क्षेत्र में कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या यूरोपीय संघ के साथ व्यापार समझौते से अमेरिका पर दबाव बनेगा?

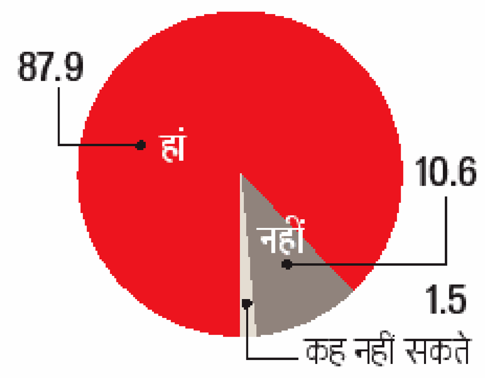

आज का सवाल
क्या एक गणतंत्र के रूप में भारत की अभी तक की यात्रा संतोषजनक रही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

हम भारत के लोग और हमारे दायित्व

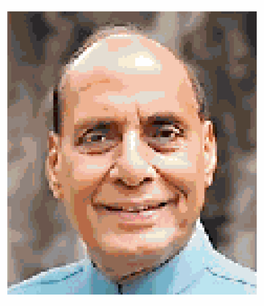

राजनाथ सिंह

गणतंत्र दिवस ऐसा संकल्प लेने का भी अवसर है कि हम अपने लोकतांत्रिक एवं गणतांत्रिक मूल्यों को गहराई से आत्मसात कर उन्हें आचरण में उतारें

देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने 16 मई, 1952 को पहली लोकसभा को संबोधित करते हुए संसद सदस्यों को उनके लोकतांत्रिक दायित्वों की गंभीरता का स्मरण कराया था। उन्होंने स्पष्ट किया था कि संविधान लागू होते ही राष्ट्रपति के निर्वाचन और पहले आम चुनाव के साथ स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक यात्रा का प्रथम चरण पूरा हो चुका है और देश अब ऐसे दूसरे चरण में प्रवेश कर रहा है, जिसमें कोई विराम नहीं होगा। वस्तुतः, संविधान और लोकतंत्र की पूरी व्यवस्था के केंद्र में 'हम भारत के लोग' हैं और उनके सामाजिक और आर्थिक उत्थान का ही ध्येय है। यह ध्येय सदैव भारत की राजनीतिक चेतना का अभिन्न अंग रहा है। प्राचीन भारत में 'योग-क्षेम' का सिद्धांत व्यक्ति के कल्याण और सुरक्षा से जुड़ा हुआ था। महात्मा गांधी के सर्वोदय के विचार के केंद्र में भी सभी का उत्थान है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' और 'अंत्योदय' के सिद्धांत भी व्यक्ति के संपूर्ण विकास और वंचित वर्गों के उत्थान पर केंद्रित हैं। विकास के केंद्र में नागरिकों को रखने की यह परंपरा वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीति 'सबका साथ, सबका विकास' में भी निहित है। वर्ष 2014 से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में जनता केंद्रित शासन व्यवस्था का यह सोच सरकार की नीतियों और कार्यों में स्पष्ट दिखता है। इससे संवैधानिक उद्देश्यों की पूर्ति को गति और शक्ति मिली है।

संविधान में उल्लिखित नीति निदेशक तत्वों के अंतर्गत राज्य पर श्रमिकों के लिए मानवीय और न्यायपूर्ण परिस्थितियां सुनिश्चित करने का दायित्व है। इसी दिशा में केंद्र सरकार ने हाल में ही 29 श्रम कानूनों को चार श्रम संहिताओं में पिरोया है। यह श्रमिकों के लिए बेहतर आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। संविधान राज्य को निर्देश देता है कि वह आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति तभी संभव है, जब समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा और रोजगार के समान अवसर उपलब्ध हों। पिछले कुछ वर्षों में लिए गए कई महत्वपूर्ण नीतिगत फैसलों के चलते आज अवसरों की यह समानता हर स्तर पर बढ़ी है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण स्टार्टअप इंडिया जैसी पहल है, जिसके हाल ही में दस वर्ष पूरे हुए हैं। इसके अंतर्गत प्रदान किए जाने वाले नीतिगत सहयोग, आर्थिक मदद और मेंटरशिप के माध्यम से आज किसी भी व्यक्ति के लिए कोई उद्योग शुरू करना बहुत सुगम हुआ है।

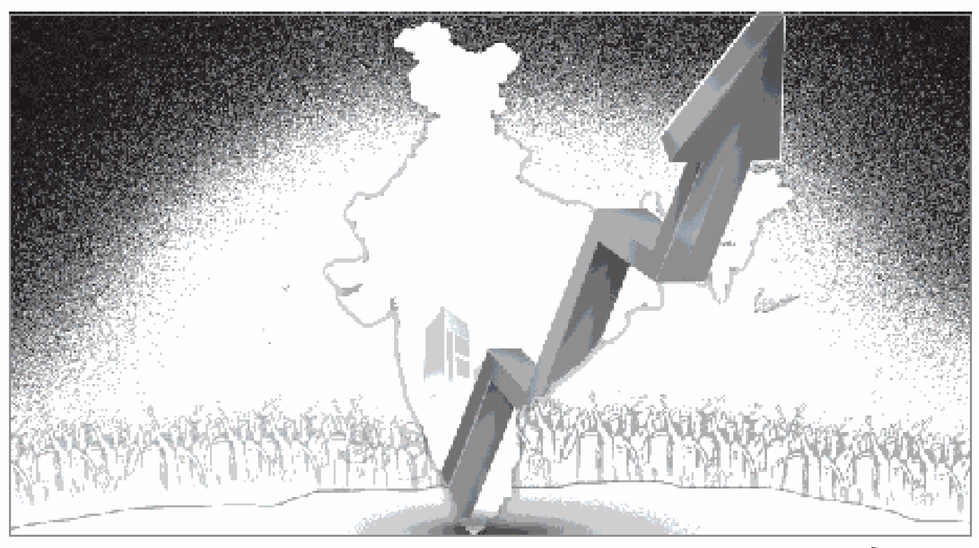

अवधेश राजपूत

आर्थिक प्रगति तभी समावेशी बनती है, जब अवसरों की समानता हो। यह आय असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पिछले 12 वर्षों में सभी आर्थिक नीतियां इसी विचार से प्रेरित रही हैं। इसी का परिणाम है कि आज भारत की आर्थिक प्रगति का लाभ प्रत्येक नागरिक तक समान रूप से पहुंच रहा है। विश्व बैंक के 'स्प्रिंग 2025 पावर्टी एंड इक्विटी ब्रीफ' के अनुसार भारत ने पिछले दशक में 17.1 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी की रेखा से बाहर निकाला है। सामाजिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को भी आरक्षण का लाभ दिया गया है। केंद्र सरकार ने समावेशी विकास के साथ-साथ लोगों के लिए गरिमापूर्ण जीवन और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने पर भी निरंतर ध्यान केंद्रित किया है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 और मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 2019 जैसे कानूनों के माध्यम से सामाजिक न्याय को और मजबूती मिली है। गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने की इसी भावना का एक अच्छा उदाहरण स्वच्छ भारत मिशन भी है। जनकल्याण की यही भावना प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' और 'प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना' जैसी पहलों में भी साफ दिखती है। अन्न योजना के तहत 80 करोड़ से अधिक लोगों को निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।

जब प्रधानमंत्री मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' का आह्वान किया था, तो वह केवल अर्थव्यवस्था के स्तर तक ही सीमित नहीं था, बल्कि नागरिकों के भीतर आत्मनिर्भरता की भावना बढ़ाने का भी प्रयास था। इसलिए मुद्रा योजना और स्किल इंडिया मिशन जैसी पहलों के माध्यम से नागरिकों को स्वावलंबी और उद्यमशील बनाने पर बल दिया गया है। इन योजनाओं के केंद्र में आत्मनिर्भर नागरिक बनाना है, जो आत्मनिर्भर भारत का आधार भी बन रहे हैं। इसी क्रम में आयुष्मान भारत योजना एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुई है। इससे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को बहुत लाभ हुआ है, जो संसाधनों के अभाव में अच्छी स्वास्थ्य सेवा से वंचित थे। इसी तरह जन-धन योजना ने बड़ी संख्या में नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़कर वित्तीय सुरक्षा प्रदान की है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रविधान किया गया है। इस अधिनियम में लोकतंत्र के तीनों सिद्धांत सशक्त अभिव्यक्ति पाते हैं, क्योंकि विधायी संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ने से संप्रभुता का सामाजिक आधार तो बढ़ेगा ही और नीति-निर्माण भी ज्यादा समावेशी होगा।

लोकतांत्रिक सिद्धांतों के मूल में समाहित जन-कल्याण एक सतत दायित्व है, जिसे हर पीढ़ी को अपने समय में निभाना पड़ता है। गणतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती सिर्फ इस बात पर ही निर्भर नहीं है कि उसकी संस्थाएं कितनी मजबूत और दीर्घजीवी हैं, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि शासन व्यवस्था जनता के जीवन में कैसा बदलाव लाती है। हमें यह स्मरण रखना है कि भारतीय गणतंत्र की यात्रा सतत जारी रहनी चाहिए। यह हमारी जिम्मेदारी भी है। यह 77वां गणतंत्र दिवस सिर्फ इस दायित्व को स्मरण करने का ही अवसर नहीं है, बल्कि उससे आगे बढ़ कर यह संकल्प लेने का भी है कि हम भारत के लोग अपने लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक मूल्यों को और अधिक गहराई से आत्मसात करें, उन्हें आचरण में उतारें और सुनिश्चित करें कि शासन की हर दिशा और हर निर्णय के केंद्र में जनता और उसका कल्याण ही सर्वोपरि रहे।

(लेखक रक्षामंत्री हैं)
response@jagran.com

अपनी संस्कृति से जुड़ते युवा

डा. आशीष त्रिपाठी

वैश्विक उथल-पुथल के दौर में देश के जेन-जी का अध्यात्म के मार्ग पर बढ़ना एक अच्छा संकेत है

हाल में गुजरात स्थित सोमनाथ मंदिर में चार दिवसीय 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का आयोजन किया गया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सम्मिलित हुए। यह उत्सव भारत के लोगों और भारत की सभ्यता की जीवटता का सर्वोत्तम प्रमाण है। इस देश को अनेक आततायियों ने लूटा, यहां के लोगों पर बर्बरता की और यहां की सभ्यता को नष्ट करने के क्रूर प्रयास किए, लेकिन भारत की संतति ने संघर्ष किया और बार-बार उठ खड़े होकर अपनी अमूल्य धरोहर को संजोने और संरक्षित करने का अटूट प्रयास किया। पिछले एक दशक में देश ऐसी कई घटनाओं का साक्षी रहा है जिसमें भारत के खोए हुए स्वाभिमान और गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया गया है। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण इस बात का अनुपम उदाहरण है। एक बड़े संघर्ष के बाद जब यहां मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ तो रामलला के दर्शन लाभ के लिए देश-विदेश से श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। आज भी प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंच रहे हैं। इन श्रद्धालुओं में सर्वाधिक संख्या देश के युवाओं की है। पिछले वर्ष प्रयागराज में हुए महाकुंभ में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। इन श्रद्धालुओं में भी देश के युवा वर्ग की संख्या सर्वाधिक देखी गई। इस प्रकार के धार्मिक आयोजनों में भारत के युवाओं की बढ़ती सहभागिता देखना अपने आप में एक बहुत ही सुखद अनुभव है। इंटरनेट मीडिया के इस युग में युवा अपनी इस सांस्कृतिक विरासत को लेकर बहुत ही मुखर हैं। वे इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर भी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विषय में अपने विचार साझा कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में धार्मिक यात्राओं और भारत के तीर्थों पर पहुंचने वाले तीर्थयात्रियों में देश के युवा वर्ग की भागीदारी बड़ी मात्रा में देखी जा सकती है। भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित मंदिरों और तीर्थ स्थलों पर देश के कोने-कोने से युवा पहुंच रहे हैं। तकनीकी, मेडिकल, प्रबंधन, मानविकी और दूसरे अनेक क्षेत्रों में शिक्षा हासिल कर रहे ये नौजवान अध्यात्म और धर्म को लेकर बहुत ही आग्रही दिखाई पड़ते हैं। वे हर वर्ष ग्रीष्मकाल में होने वाली चार धाम यात्रा में जा रहे हैं। वे प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में केदारनाथ धाम जाने के लिए दुर्गम पहाड़ी मार्गों पर ट्रैकिंग करते हुए दिखाई देते हैं। वे अपनी इन यात्राओं की सुंदर स्मृतियों को इंटरनेट मीडिया पर भी साझा करते हैं और दूसरों को भी ऐसी आध्यात्मिक-धार्मिक यात्रा के लिए प्रेरित करते हैं। भारत के सुदूर इलाकों में स्थित मंदिरों, मठों और आश्रमों तक इन युवाओं की पहुंच के कारण आसपास के स्थानीय लोगों को सामाजिक और आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो रहे हैं।

धर्म और अध्यात्म से जुड़ती नई पीढ़ी ● फाइल

पिछले दिनों उत्तराखंड सरकार के एक सर्वे में उत्तराखंड के प्रसिद्ध कैंची धाम के विषय में कुछ आंकड़े सामने आए जिससे यह पता चलता है कि बाबा नीब करौरी के इस स्थान पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इन श्रद्धालुओं में अधिकतम संख्या 15 से 30 वर्ष के युवाओं की है। इससे यह भी पता चला कि यहां आने वाले युवा आध्यात्मिक उन्नति और शांति के लिए ऐसे स्थानों पर प्रवास करते हैं। सूचना के अनगिनत माध्यमों ने भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक जगत की जानकारी हर वर्ग और समूह तक पहुंचा दी है, जिससे प्रभावित होकर आज की युवा पीढ़ी ऐसे स्थानों पर जा रही है और संस्कृति का विस्तार कर रही है।

आज भारत के संतों और आध्यात्मिक चिंतकों के विचारों से प्रभावित होकर भी युवा आध्यात्मिक धारा से जुड़े रहे हैं। जैसे कि ईशा फाउंडेशन के संस्थापक सद्गुरु जग्गी वासुदेव अपने संबोधनों में अध्यात्म को विज्ञान से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। वे वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से आध्यात्मिकता के सूक्ष्म सूत्रों को उद्घाटित करते हैं। उनके अभियानों और आयोजनों में हजारों की संख्या में युवक-युवतियां सहभागी होते हैं। वृंदावन में निवास करने वाले सुप्रसिद्ध संत प्रेमानंद जी महाराज के विचारों से भी सैकड़ों की संख्या में लोग प्रेरित हो रहे हैं। प्रेमानंद जी अपने वक्तव्यों में धर्म को सेवा और आचरण से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। उनकी कही बातों का प्रभाव युवाओं पर खासा दिखाई पड़ता है।

आज भारतीय समाज में इस प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन बेहद सुखद और संतोषप्रद हैं। दुनिया के अनेक देशों में राजनीतिक उथल-पुथल है और वहां का युवा वर्ग हिंसक आंदोलनों में सड़कों पर है। ऐसी परिस्थिति में भारत के युवाओं का अपनी जड़ों से जुड़ना और आध्यात्मिक मार्ग पर बढ़ना एक अच्छा संकेत है। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा था कि 'अपने राष्ट्र को, इसकी महान संस्कृति को, इसकी सभ्यता, यहां के धर्म को जानो और अपने महिमापूर्ण अतीत को मत भूलो, स्मरण करो कि हम कौन हैं? किन महान पूर्वजों का रक्त हमारी शिराओं में प्रवाहित हो रहा है? एक ऐसे महान भारत की नींव रखो, जो विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सके।' इससे प्रेरित हो देश की युवा पीढ़ी योग, ध्यान और आध्यात्मिकता को अपने जीवन में आत्मसात कर, अपने महान पूर्वजों को स्मरण कर देश के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में एक अमूल्य योगदान दे रही है। भारत की पुरातन सभ्यता और संस्कृति से आज के समाज का पुनर्जागरण हो रहा है। यह परिवर्तन भारत को एक नई दिशा दे रहा है और नए भारत का निर्माण कर रहा है।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

आध्यात्मिक नवयात्रा

समय के बदलते प्रवाह में मनुष्य ने अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं, परंतु इसी गति में कहीं न कहीं जीवन-मूल्य, विश्वास और आस्था की जड़ें कमजोर भी पड़ी हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम जागें, केवल बाह्य रूप से नहीं, बल्कि भीतर से। नए सोच के साथ नए सफर की शुरुआत तभी संभव है, जब चेतना का दीप प्रज्वलित हो और आत्मिक दृष्टि स्पष्ट हो। आध्यात्मिक परिवेश में जागरण का अर्थ है-अपने भीतर छिपे सत्य, करुणा और विवेक को पहचानना। विश्वास केवल किसी व्यक्ति, संस्था या व्यवस्था पर नहीं टिकता, वह आत्मा की सुदृढ़ता से जन्म लेता है। जब व्यक्ति स्वयं पर विश्वास करता है, तब समाज और राष्ट्र पर विश्वास की इमारत स्वतः खड़ी होने लगती है।

जब आस्था को स्वार्थ से जोड़ दिया जाता है, तब वह बोझ बन जाती है। इसलिए नए सोच का पहला कदम है-आस्थाओं का शोधन। उन्हें मानवीय मूल्यों, अहिंसा, सह-अस्तित्व और करुणा से जोड़ना। आध्यात्मिकता का सार यही है कि वह मनुष्य को मनुष्य के निकट लाए। जहां परिवर्तन है, परंतु परंपरा का तिरस्कार नहीं। जीवन-मूल्यों की सुरक्षा तभी संभव है, जब सत्य, संयम, सहिष्णुता और सेवा जैसे तत्व हमारे आचरण में उतरें। ये मूल्य किसी कानून से नहीं, आत्मानुशासन से सुरक्षित रहते हैं।

आज आवश्यकता है कि हम पुनः भीतर की यात्रा प्रारंभ करें। यह यात्रा आत्मशुद्धि और आत्मनिर्माण की है। जब व्यक्ति भीतर से स्थिर और जागरूक होता है, तब बाहरी चुनौतियां उसे विचलित नहीं कर पातीं। आध्यात्मिक चेतना ही टूटती आस्था को जोड़ सकती है और बिखरी आस्था को नया आकार दे सकती है। नए सोच के साथ नया सफर एक नारा ही नहीं, अपितु संकल्प है। ऐसा संकल्प जो व्यक्ति को श्रेष्ठ मनुष्य, समाज को सशक्त और राष्ट्र को संस्कारित बना सके। यही आध्यात्मिक नवयात्रा का सार है।

ललित गर्ग

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सुरक्षा के उपाय आवश्यक

'अनियोजित और असुरक्षित शहरी विकास' शीर्षक से लिखे आलेख के माध्यम से संजय गुप्त ने देश की बेहद गंभीर समस्या की ओर ध्यानाकर्षित किया है, क्योंकि विकास के सारे दावे बेमानी हो जाते हैं, जब अनियोजित और असुरक्षित विकास की कीमत युवराज मेहता जैसे नागरिक को अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है। देश की राष्ट्रीय राजधानी से सटा होने के कारण नोएडा और ग्रेटर नोएडा ने बेहद तीव्र गति से विकास किया। इस अति तीव्र गति के विकास में अधिकारियों और बिल्डरों के गठजोड़ ने नियम-कानूनों को ताक पर रखकर नोएडा को असुरक्षित तरीके से विकसित होने दिया। इसी असुरक्षित और अनियोजित विकास ने युवराज मेहता को असमय मौत के मुंह में पहुंचा दिया। इस मार्मिक घटना की सबसे दुखद बात यह रही कि तमाम सरकारी मशीनरी मौत के उस विशाल गड्डे के निकट खड़ी उस युवा को काल के गाल मे समाती देखती रही। नोएडा की इस घटना से सबक लेकर जिन अन्य नगरों में सुरक्षा के आवश्यक उपाय अवश्य किए जाएं।

राजीव वार्ष्णेय, पुरानी पैंठ, चंदौसी

आपदा में अवसर

ग्रीनलैंड के मामले में यूरोप के देशों पर डोनाल्ड ट्रंप ने पहली फरवरी से 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा की थी, पर उन देशों की जवाबी कार्रवाई से डरकर उन्होंने अपने कदम वापस खींच लिया। उन्होंने भारत पर भी 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगा रखा है, और अपेक्षा कर रहे हैं कि भारत रूस से तेल क्रय करना बंद कर देगा। पर भारत ने उसका खामोशी से उत्तर दिया। उसने आपदा में अवसर ढूंढा। अपने उत्पादों के लिए नए बाजार खोज निकाले। अमेरिकी टैरिफ में वृद्धि के पूर्व जितना निर्यात होता था, भारतीय निर्यात उससे अधिक हो गया है। वैसे बढ़े टैरिफ से हानि अमेरिकी जनता को ही है, क्योंकि अंततः बढ़े मूल्य का भुगतान उसे ही करना होगा। महंगाई बढ़ेगी।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

बदलता भारत

स्वनिधि क्रेडिट कार्ड योजना प्रधानमंत्री द्वारा रेहड़ी-पटरी वालों और छोटे स्वरोजगार करने वालों के लिए एक बड़ी उम्मीद बनकर सामने आई है। यह योजना उन लोगों के लिए है, जो रोज कमाते हैं, रोज खर्च करते हैं और अक्सर बैंकों की औपचारिक व्यवस्था से बाहर रह जाते हैं। ऐसे में स्वनिधि क्रेडिट कार्ड उन्हें आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास है। इस योजना के तहत पात्र लाभार्थियों को कम ब्याज दर पर बिना ज्यादा कागजी कार्रवाई के ऋण उपलब्ध कराया जाता है। इससे रेहड़ी-पटरी वाले व्यापार बढ़ा सकते हैं, नया सामान खरीद सकते हैं। आपात स्थिति में साहूकारों पर निर्भर होने से बच सकते हैं। समय पर ऋण चुकाने पर उन्हें आगे चलकर अधिक क्रेडिट लिमिट और बेहतर बैंक सुविधाएं भी मिलती हैं। स्वनिधि क्रेडिट कार्ड का लाभ यह है कि यह लाभार्थियों को आर्थिक आत्मनिर्भरता और सम्मान देता है। डिजिटल भुगतान व बैंकिंग की आदत उन्हें भविष्य के लिए मजबूत बनाती है।

-कमल सिंह भाकुनी, दिल्ली

अधूरी मेट्रो सुविधा

पिछले कई वर्षों से पुराने उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद का नए गाजियाबाद की ट्रांस-हिंडन क्षेत्र की अनेक कालोनियों के वैशाली मेट्रो स्टेशन से संपर्क नहीं हो पाया है। इस कारण पुराने गाजियाबाद के निवासियों को समुचित मेट्रो सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए नए गाजियाबाद के वैशाली मेट्रो स्टेशन को पुराने गाजियाबाद के मोहन नगर मेट्रो स्टेशन से जोड़ा जाना आवश्यक है। इसी प्रकार पुराने गाजियाबाद की साहिबाबाद क्षेत्र की कालोनियां पिछले छह वर्षों से नोएडा सेक्टर-62 मेट्रो स्टेशन से जुड़ी नहीं हैं तथा पुराने गाजियाबाद का रेलवे स्टेशन भी पिछले छह वर्षों से पुराने गाजियाबाद के न्यू बस अड्डा मेट्रो स्टेशन से संपर्क से वंचित है। इस प्रकार इतने लंबे समय से इन सभी मेट्रो विस्तारों के अभाव के कारण पुराने गाजियाबाद, नए गाजियाबाद, नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा के लाखों यात्रियों को दिल्ली-एनसीआर के व्यापक मेट्रो नेटवर्क के किसी भी हिस्से तक उचित पहुंच नहीं मिल पा रही है। इन कालोनियों के लाखों यात्रियों को मेट्रो सेवाओं से वंचित करने के साथ-साथ, ये मेट्रो अंतराल इन क्षेत्रों में गंभीर यातायात जाम और प्रदूषण की समस्याओं को भी बढ़ा रहे हैं। अतः उत्तर प्रदेश सरकार, दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन तथा भारत सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय को जनहित में इन मेट्रो संपर्क-विच्छेदों को यथाशीघ्र दूर करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए।

-डा. एनके धूपर, गाजियाबाद

पोस्ट

मार्क टुली ने हमारी पीढ़ी के मेरे जैसे तमाम पत्रकारों को पत्रकारिता से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उनके जैसे दिग्गज की कमी महसूस की जाएगी।
विक्रम चंद्रा@vikramchandra

पद्म सम्मान के तमाम नाम यही दर्शाते हैं कि सरकार ने गुमनाम नायकों को सम्मानित करने की परंपरा को जारी रखा है।
सिद्धांत सिब्बल@sidhant

देर-सबेर बांग्लादेश को यह महसूस होगा कि विश्व कप को लेकर अपने अड़ियल रवैये की कितनी भारी कीमत चुकानी पड़ी है। इसके दूरगामी परिणाम अनुमान से भी कहीं अधिक घातक होंगे।
शिवानी शुक्ला@iShivani_Shukla

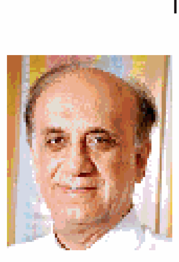

एशियाई क्रिकेट के मंच को हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहिए। अन्यथा पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देश खेल के परिदृश्य को इसी प्रकार विषाक्त बनाते रहेंगे। एशिया कप जीतने के महीनों बाद तक भारत ट्राफी से वंचित रहा। आतंक का समर्थन करने वाले देशों के साथ क्रिकेट खेलना एकदम बंद होना चाहिए।
मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

जनपथ

अगर सुरक्षित चाहते हैं अपना गणतंत्र,
गांठ बांध लें नागरिक ये इकलौता मंत्र।
ये इकलौता मंत्र देश की शक्ति बढ़ेगी,
विश्वगुरू की थीम तभी परवान चढ़ेगी।
सीमाओं के साथ होयं घर के दुश्मन चित,
चाह रहे हम लोग देश को अगर सुरक्षित!
– **ओमप्रकाश तिवारी**

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 192

इस्लामिक 'नाटो' का खतरा!

पश्चिम एशिया में सैन्य संगठन नाटो की तर्ज पर इस्लामिक नाटो आकार ले रहा है। इसके पीछे इस्लामी विचारधारा और सामरिक जरूरतें हैं। सऊदी अरब और पाकिस्तान सितंबर, 2025 में पहले ही सैन्य समझौता कर चुके हैं। इस समझौते मे कहा गया है कि एक देश पर बाहरी हमला दूसरे देश पर हमला माना जाएगा। नाटो सैन्य संगठन में भी ऐसा ही प्रविधान है। अब तुर्किये भी इस समझौते में शामिल होना चाहता है। सऊदी अरब का फंड, तुर्किये की टेक्नोलाजी और पाकिस्तान का परमाणु बम इस इस्लामिक नाटो को सामरिक रूप से मजबूत करते हैं। संगठन में पाकिस्तान और तुर्किये की मौजूदगी भारत के लिए गंभीर रणनीतिक चुनौतियां पैदा करती हैं। आपरेशन सिंदूर में तुर्किये पाकिस्तान के साथ मजबूती से खड़ा नजर आया था। इस्लामिक नाटो के इस उभार से भारत के लिए पैदा होने वाले खतरों और इसकी काट के लिए संभावित विकल्पों की पड़ताल प्रासंगिक है...

आर्थिक और सामरिक ताकत

तुर्किये
- मजबूत घरेलू रक्षा उद्योग
- उन्नत रक्षा तकनीक
- नाटो के सदस्य के तौर पर सैन्य अनुभव

जीडीपी 1.5 ट्रिलियन डालर | रक्षा खर्च 26.6 अरब डालर

सऊदी अरब
- बड़े पैमाने पर वित्तीय संसाधन
- अमेरिकी लड़ाकू विमान और एयर डिफेंस सिस्टम

जीडीपी 1.37 ट्रिलियन डालर | रक्षा खर्च 78 अरब डालर

पाकिस्तान
- परमाणु बम
- बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता
- युद्ध का अनुभव रखने वाली सेना

जीडीपी 410.5 अरब डालर | रक्षा खर्च 9 अरब डालर

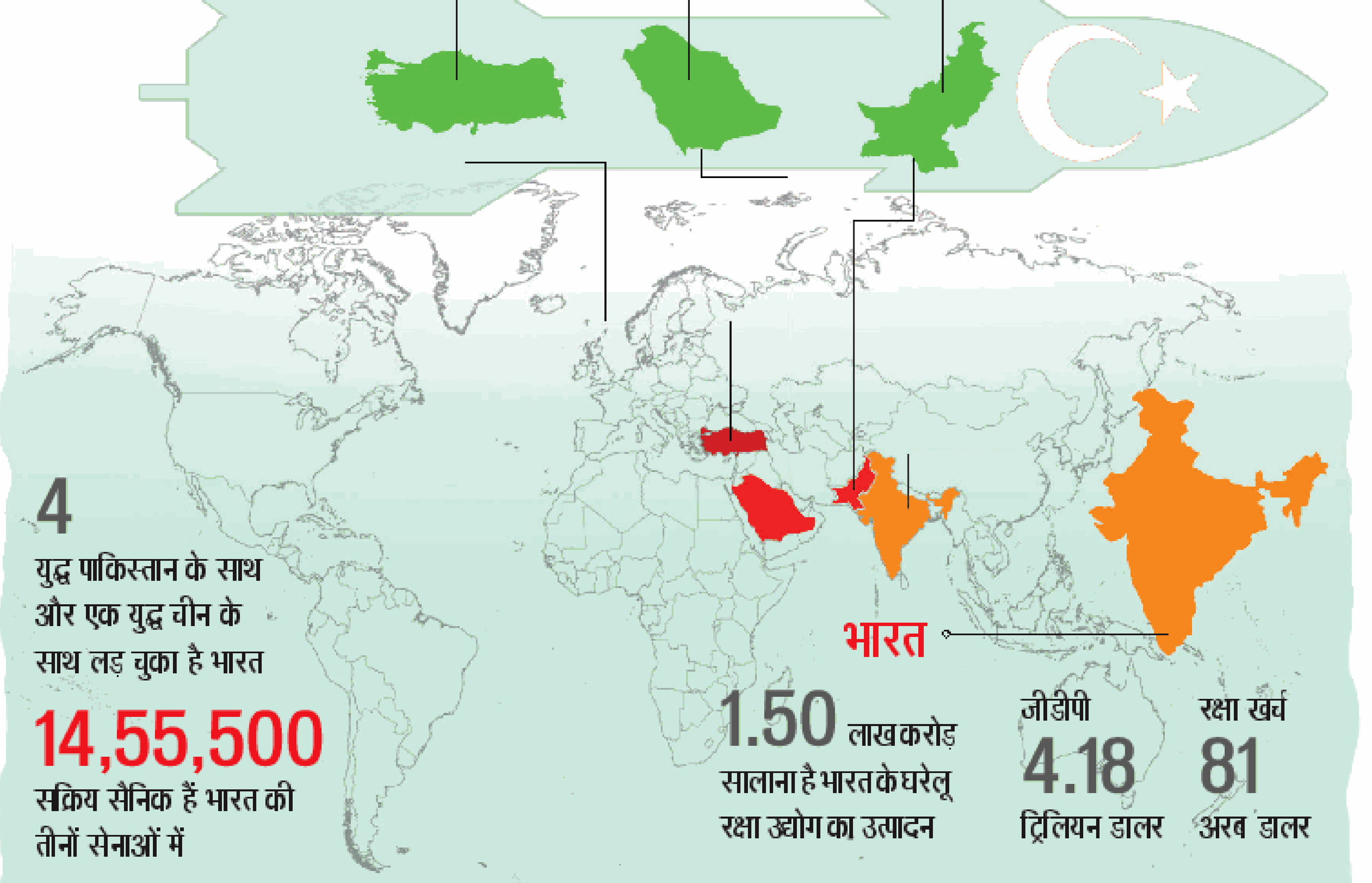

सैन्य संगठन से बदल जाएगा पश्चिम और दक्षिण एशिया का शक्ति संतुलन

सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये मिल कर एक सैन्य संगठन बनाने की ओर बढ़ रहे हैं, जिसे इस्लामिक नाटो कहा जा रहा है। सुरक्षा जरूरतों के अलावा इन तीनों देशों को एक साथ लाने के पीछे साझा विचारधारा इस्लाम है। अगर यह इस्लामिक नाटो मूर्त रूप लेता है तो इससे दक्षिण एशिया का शक्ति संतुलन बदल जाएगा और भारत को पाकिस्तान के खिलाफ अपनी सामरिक रणनीति नए सिरे से तैयार करनी हेगी। इस्लामिक नाटो के और इसकी साझा सामरिक क्षमताओं पर प्रकाश डाल रहे हैं **महेन्द्र सिंह...**

क्या है इस्लामिक नाटो

इस्लामिक नाटो चुनिंदा मुस्लिम-बहुसंख्यक देशों के बीच एक संभावित सैन्य और रणनीतिक गठबंधन को कहा जाता रहा, जो नाटो (नार्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन) के माडल से प्रेरित है। नाटो सामूहिक रक्षा के सिद्धांत पर काम करता है, जिसमें एक सदस्य पर हमला सभी पर हमला माना जाता है और सभी सदस्यों को इस हमले का जवाब देना पड़ता है। इसी तरह, प्रस्तावित इस्लामिक नाटो का मकसद अपने सदस्यों - पाकिस्तान, सऊदी अरब और संभावित रूप से तुर्किये - के बीच आपसी सुरक्षा गारंटी देना है, जिससे एक सामूहिक बचाव तंत्र बन सके। पारंपरिक नाटो में 32 देश हैं और यह वैश्विक सुरक्षा के लिए काम करता है। वहीं, इस्लामिक नाटो काफी हद तक क्षेत्रीय है, जो दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व और मध्य एशिया पर केंद्रित है। बताया जा रहा है कि यह गठबंधन साझा सुरक्षा चिंताओं, वैचारिक तालमेल और सुन्नी इस्लामी दुनिया में नेतृत्व स्थापित करने की महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित है।

इस्लामिक नाटो का मकसद

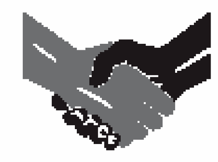

- **इस्लामिक दुनिया का नेतृत्व:** तुर्किये और सऊदी अरब दोनों ही इस्लामिक दुनिया का नेतृत्व करना चाहते हैं। पाकिस्तान भी अपने परमाणु हथियारों की वजह से खुद को इस्लामिक दुनिया में सबसे शक्तिशाली देश के तौर पर स्थापित करना चाहता है।

- **ईरानी प्रभाव का मुकाबला:** ज्यादातर सुन्नी देश होने के नाते, ये तीनों देश शिया-नेतृत्व वाले ईरान के क्षेत्रीय दबदबे को कम करने के लिए एक गुट बनाना चाहते हैं।
- **सत्ता का खालीपन भरना:** अमेरिका के खाड़ी क्षेत्र से रणनीतिक रूप से पीछे हटने के संकेत देने के साथ, ये देश एक नया सुरक्षा गठबंधन बनाना चाहते हैं, जिसका एक मकसद इज़राइल के प्रभाव का मुकाबला करना भी है।
- **प्रभाव का विस्तार:** यह गठबंधन तुर्किये को अपने क्षेत्र से बाहर दक्षिण एशिया तक अपनी रणनीतिक पकड़ बढ़ाने की अनुमति देगा, जिससे एक भू-राजनीतिक खिलाड़ी के रूप में उसकी स्थिति मज़बूत होगी। इस समूह का लक्ष्य मध्य एशिया, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया को कवर करने वाले एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र को नियंत्रित करना है।

भारत के लिए सुरक्षा चिंताएं

- **भविष्य के संघर्षों में दखल:** सबसे अहम सवाल यह है कि क्या तुर्किये और सऊदी अरब भारत और पाकिस्तान के बीच भविष्य में होने वाले किसी भी संघर्ष में सक्रिय रूप से शामिल होंगे। सामूहिक रक्षा क्लाज के अनुसार वे ऐसा करने के लिए बाध्य होंगे।
- **सीमित रणनीतिक विकल्प:** इस तरह के दखल से भारत की रणनीतिक बढ़त कम हो सकती है, जिससे पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने की उसकी आजादी सीमित हो सकती है।

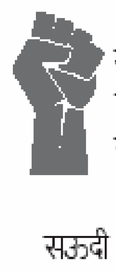

- **शक्ति संतुलन पर असर:** यह गठबंधन दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व में शक्ति संतुलन को बदल सकता है। भारत को अपने हितों के खिलाफ बने एक एकजुट गुट से राजनयिक, आर्थिक और सैन्य दबाव का सामना करना पड़ सकता है।
- **हथियारों का प्रसार:** इस बात की चिंता है कि सऊदी अरब को दिए गए अमेरिकी हथियार पाकिस्तान को ट्रांसफर किए जा सकते हैं और इनका इस्तेमाल भारत के खिलाफ किया जा सकता है।

भारत के लिए बढ़ सकती है चुनौती

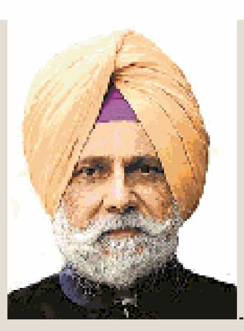

केसी सिंह
पूर्व राजदूत

> विश्व में नेतृत्व के मोर्चे पर खालीपन पैदा हो रहा है। इजरायल द्वारा पश्चिम एशिया और खाड़ी में अपने प्रतिद्वंद्वियों को खत्म करने या कमजोर करने से इस्लामिक नाटो जैसे नए सुन्नी गठबंधनों को जगह मिल रही है। कूटनीतिक रूप से मजबूत हो रहा पाकिस्तान, नए सैन्य गठबंधनों से भारत को चुनौती देगा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 21 जनवरी को दावोस में वर्ल्ड इकोनमिक फोरम को संबोधित किया। इससे पहले बोलते हुए कनाडाई प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने कहा कि वैश्विक व्यवस्था 'टूटने' का सामना कर रही है, जिसे दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका ने बनाने में मदद की थी। पीएम कार्नी ने यह भी तर्क दिया कि अमेरिकी वर्चस्व ने 'खुले समुद्री रास्ते, एक स्थिर वित्तीय प्रणाली, सामूहिक सुरक्षा और विवाद समाधान ढांचे' सुनिश्चित किए थे। हालांकि, उन्होंने कहा कि इस प्रणाली में कमजोरियां थीं जिनका बड़ी शक्तियों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार और भू-राजनीति में फायदा उठाया। जब 1991 में सोवियत संघ का पतन हुआ, तो अमेरिका एकमात्र प्रमुख शक्ति बन गया, जिससे एकध्रुवीय दुनिया बनी। हालांकि, हाल के दशकों में हुए घटनाक्रमों ने अमेरिका और उसके जी-7 और नाटो सहयोगियों के प्रभुत्व को कम कर दिया है। सबसे पहले, चीनी आर्थिक और सैन्य शक्ति में भारी वृद्धि हुई, खासकर 2008 के पश्चिमी वित्तीय संकट के बाद। साथ ही, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका जैसी मध्यम शक्तियां भी आर्थिक शक्तियों के रूप में उभरीं। चीन और रूस के साथ मिलकर उन्होंने ब्रिक्स बनाया। आज चीन के पास वैश्विक विनिर्माण का 30 प्रतिशत हिस्सा है। उसने पश्चिमी शक्तियों को मात देते हुए विश्व व्यापार संगठन द्वारा देखरेख की जाने वाली वैश्विक व्यापार प्रणाली में महारत हासिल कर ली। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो का अपहरण करने से कुछ दिन पहले, 19वीं सदी के मोनरो सिद्धांत को पुनर्जीवित किया गया, जिसमें 'पश्चिमी गोलार्ध' पर अमेरिकी प्रधानता पर जोर दिया गया। इसी से ग्रीनलैंड और कनाडा पर अमेरिकी दावे सामने आते हैं। ग्रीनलैंड पर अमेरिकी कब्जा नाटो गठबंधन को तोड़ देगा। 2022 से यूक्रेन युद्ध ने यूरोप के लोगों पर बोझ डाला है। 2023 से गाजा संकट ने खाड़ी और पश्चिम एशिया में इसी तरह की अनिश्चितता पैदा की है। इजरायल ने हमास को निशाना बनाने के लिए बिना किसी सवाल के अमेरिकी समर्थन का इस्तेमाल किया, भले ही इससे 67,000 नागरिकों की मौत हुई हो, जिसमें 78 प्रतिशत संरचनाएं नष्ट हो गईं। इजरायल ने हिजबुल्लाह के नेतृत्व को भी खत्म कर दिया, जिससे वह सैन्य रूप से कमजोर हो गया। 9 सितंबर, 2025 को कतर में हमास के कब्जे वाले आवासों पर इजरायली बमबारी ने खाड़ी के शासक परिवारों का अमेरिका पर भरोसा हिला दिया।

नतीजतन, 17 सितंबर को सऊदी अरब और पाकिस्तान ने एक रणनीतिक आपसी रक्षा समझौता (एसएमडीए) किया, जिसमें पाकिस्तानी परमाणु छाते का एक अघोषित विस्तार भी शामिल था। सऊदी अरब और यूएई के बीच बढ़ता तनाव तब और बढ़ गया जब सउदी अरब ने यूएई की सेनाओं को दक्षिण यमन से बाहर निकलने के लिए मजबूर किया, साथ ही लाल सागर क्षेत्र और अदन की खाड़ी के पास यूएई की मौजूदगी को भी निशाना बनाया।

यूएई के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन जायद की दिसंबर में पाकिस्तान यात्रा पाकिस्तान को सऊदी से अलग करने में विफल रही। असल में पाकिस्तान ने अभी-अभी इस्लामाबाद हवाई अड्डे को संचालित करने के लिए यूएई का पट्टा रद्द कर दिया है। जनवरी में भारत की उनकी बिना तय दो घंटे की यात्रा शायद एसएमडीए जैसे रक्षा समझौते की तलाश में थी। भारत ने समझदारी से ध्रुवीकृत क्षेत्र में तटस्थ रहना चुना। तुर्किये भी एसडीएमए में शामिल हो सकता है। अमेरिका-इजरायल-यूएई धुरी अब पाकिस्तान-सऊदी अरब-तुर्किये गठबंधन का सामना कर रही है। पाकिस्तान के परमाणु हथियार, तुर्किये का उन्नत रक्षा उद्योग (नाटो सदस्यता द्वारा सक्षम) और सऊदी अरब का पैसा एक मजबूत सैन्य गठबंधन बना सकते हैं। तीनों राष्ट्रपति ट्रंप के बोर्ड आफ पीस में शामिल हो गए हैं। दावोस में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके सेना प्रमुख की मौजूदगी बता रही है कि राष्ट्रपति ट्रंप को साधने के लिए, पाकिस्तान किस हद तक जा सकता है। ईरान में शासन-परिवर्तन का अमेरिका-इजरायल का प्रयास, अगर सफल होता है, तो क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को और बदल सकता है। ईरान पश्चिम एशिया में अपने शिया सहयोगियों का उपयोग करके सुन्नी देशों के किसी भी गठबंधन को संतुलित करता है। भारत के लिए ईरान की उपयोगिता पाकिस्तान को संतुलित करने में है। दुनिया में नेतृत्व का बढ़ता खालीपन और इजरायल द्वारा पश्चिम एशिया और खाड़ी में अपने प्रतिद्वंद्वियों को खत्म करने या कमजोर करने से, एसएमडीए जैसे नए सुन्नी गठबंधनों को जगह मिल रही है। अमेरिका के समर्थन से कूटनीतिक रूप से मजबूत हो रहा पाकिस्तान, नए सैन्य गठबंधनों से भारत को चुनौती देगा।

आपकी आवाज

सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये के बीच सैन्य गठजोड़ पाकिस्तान को अप्रत्यक्ष सैन्य व कूटनीतिक संबल प्रदान करेगा, जिससे भारत विरोधी गतिविधियों को हवा मिलने की आशंका बढ़ जाती है। तुर्किये और पाकिस्तान द्वारा कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाना भारत के लिए अतिरिक्त कूटनीतिक चुनौती बन सकता है। यदि सऊदी अरब इस दिशा में सक्रिय होता है, तो इस्लामिक देशों के मंचों पर दबाव बढ़ सकता है। हालांकि, सऊदी अरब के भारत के साथ गहरे आर्थिक और ऊर्जा संबंध इस गठजोड़ की सीमाएं भी तय करते हैं। भारत की मजबूत सैन्य क्षमता, बहुपक्षीय कूटनीति और वैश्विक साझेदारियों के चलते यह धुरी भारत के लिए तत्काल खतरा नहीं बन पाएगी, लेकिन भारत को इस सैन्य गठजोड़ पर नजर बनाए रखनी चाहिए।
- ई हिमांशु शेखर

हमारे देश की सैन्य ताकत बहुत मजबूत है और हमारा देश युद्ध क्षमता में भी किसी से कम नहीं है, लेकिन हमें अपने दुश्मन को कभी भी कमजोर समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये के सैन्य गठजोड़ को हल्के में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि इनके हमदर्द अमेरिका और चीन है। यह दोनों अपने हथियार बेचने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। **-राजेश कुमार चौहान**

सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये आपस में मिल कर क्या करते हैं, इस पर हमारा नियंत्रण नहीं हो सकता है। अगर यह तीनों देश एक सैन्य गठजोड़ को अंतिम रूप देते हैं, तो हमारे लिए चुनौतियां बढ़ेंगी। हालांकि हम पहले से ही चीन जैसी बड़ी वैश्विक शक्ति और जटिल पड़ोसी से गंभीर रणनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में हमारे पास सिर्फ एक विकल्प है। देश की आर्थिक और सैन्य शक्ति बढ़ाना। इसी से हम किसी भी बाहरी खतरे का सामना कर सकते हैं।
- शिव शंकर साहू

विरोधाभास में फंसी है इस्लामी दुनिया

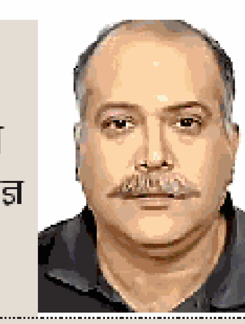

सुशांत सरीन
सामरिक विशेषज्ञ

> इस्लामिक नाटो बनना इतना आसान नहीं है। अगर बन भी गया तो यह नाटो जैसा मजबूत और प्रभावी होगा, इसमें संदेह है क्योंकि इस्लामी दुनिया का कोई सर्वमान्य नेता नहीं है। कम से कम चार देश इस्लामी दुनिया के नेतृत्व का दावा करते हैं और यह आपसी विरोधाभास में फंसे हुए हैं

पश्चिम एशिया में अमेरिका को अब उस तरह से एक भरोसेमंद सहयोगी के तौर पर नहीं देखा जा रहा है, जो क्षेत्र को सुरक्षा की गारंटी था। ऐसे में पश्चिम एशिया के देश नए समीकरणों की तलाश में हैं। हाल के वर्षों में इस क्षेत्र में चीन का प्रभाव भी बढ़ा है।

ऐसे में इन दिनों एक इस्लामिक नाटो की चर्चा तेज हो गई है। पहले बात करते हैं सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुए सैन्य समझौते की। इस समझौते का मसौदा सार्वजनिक नहीं किया गया है। यह साफ नहीं है कि इसमें कौन देश क्या योगदान करेगा। प्रेस रिलीज में जो सबसे अहम बात सामने आई है, उसमें कहा जा रहा है कि एक देश पर हमला दूसरे देश पर हमला माना जाएगा। यह बातें पहले भी बोली जा चुकी हैं। चीन और पाकिस्तान के बीच जब कोई द्विपक्षीय समझौता होता है तो कहा जाता है कि एक का दुश्मन दूसरे का दुश्मन। सऊदी अरब के साथ यही कहा गया है। अब यह देखना होगा कि सऊदी अरब पर अगर हमला होगा तो पाकिस्तान वहां जाकर लड़ेगा। अभी तक सऊदी अरब ने ऐसी कोई लड़ाई की नहीं है। दूसरा जब हाल में अफगानिस्तान से पाकिस्तान पर हमले हुए तो सऊदी अरब पाकिस्तान के पक्ष में नहीं आया। ऐसे में समझौता कहां गया यह जब पूछा जाता है तो कोई उत्तर नहीं आता। ऐसे में यह देखने वाली बात होगी कि भविष्य के संघर्षों में चीजें कैसे सामने आती हैं। दूसरी बात जो स्पष्ट नहीं की गई है लेकिन समझौते में स्ट्रैटेजिक शब्द का इस्तेमाल किया गया है। इसका यह मतलब निकाला जा रहा है कि पाकिस्तान सऊदी अरब को न्यूक्लियर अंब्रेला कवर देगा। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है, लेकिन क्या पाकिस्तान सऊदी अरब के पक्ष में जाकर न्यूक्लियर अंब्रेला देगा? पहली बात तो यह है कि सऊदी अरब पर परमाणु हमला कौन करेगा। इजरायल सऊदी अरब के साथ पंगा नहीं लेगा, जब तक सऊदी अरब इजरायल के साथ पंगा नहीं लेगा। 2023 के पहले तक सऊदी अरब और इजरायल के रिश्ते बेहतरी की तरफ जा रहे थे, अब जरूर दोनों के बीच थोड़ी तल्खी है लेकिन हालात सुधर भी सकते हैं। सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच जो समझौता हुआ, उसमें तुर्किये को लग रहा है कि हम अलग थलग न हो जाएं, तो वह भी इसमें शामिल होना चाहता है कि उसकी भी पश्चिम एशिया और दक्षिण में थोड़ी पकड़ बने। तुर्किये का इस समझौते में आने का जो तर्क बनता है वह यह है कि लड़ाई में जो लोग मरेंगे कटेंगे, वह पाकिस्तानी होंगे क्योंकि उनके पास कुछ और तो है नहीं। पैसा सऊदी अरब देगा क्योंकि उनके पास पैसा है, लेकिन लड़ने का दमखम नहीं है और रक्षा साजो सामान तुर्किये देगा। इससे तुर्किये को भी फायदा होगा। पाकिस्तानी भी खुश हैं उनको लग रहा है कि पैसा मिलेगा और पाकिस्तानी जहां पैसा मिलता है, वहां चले जाते हैं।

अब जो यह समीकरण बन रहा है, उसमें कहा जा रहा है कि और देश आएंगे। सवाल यह है कि यह संगठन कैसा होगा, इसमें कौन कितना हिस्सा डालेगा, संगठन की अगुआई कौन करेगा। ऐसे बहुत से सवाल हैं क्योंकि नाटो संगठन में अमेरिका का वर्चस्व है। वहां फैसले सभी देशों की सहमति से लिए जाते हैं। इस्लामिक नाटो फैसले कैसे लेगा, इसमें किस देश की कितनी चलेगी, ऐसे बहुत सारे सवाल हैं। इसके अलावा मुस्लिम दुनिया में आपस में भी बहुत विरोधाभास हैं। इस्लामी वर्ल्ड में प्रमुख रूप से चार केंद्र बिंदु हैं। एक ईरान है। वह शिया इस्लाम का नेतृत्व करता है उनकी अपनी सभ्यता है। इस्लामी दुनिया में उसकी अपनी दावेदारी है। इसके अलावा सबसे अमीर इस्लामी देश के तौर पर सऊदी अरब की अपनी दावेदारी है। वहां मक्का मदीना है और दुनिया भर के मुसलमान वहां जाते हैं। सऊदी अरब अपने आप को मुस्लिम दुनिया का वैसे ही नेता मानता है। तीसरा तुर्किये मानता है कि उस्मानिया सल्तनत की 500- 600 साल तक इस्लामी दुनिया में हुकूमत थी, ऐसे में वह भी अपने को मुस्लिम दुनिया का खलीफा मानता है। चौथा केंद्र बिंदु आप मिस्र को मान सकते हैं। पाकिस्तान का यहां कोई वजूद नहीं है लेकिन उनको लगता है कि हमारे पास पैसा नहीं है तो चलो फौज को बेच लेते हैं। खबरें आ रहीं है कि पाकिस्तान के अधिकारी सऊदी अरब जाकर पैसा मांग रहे हैं। कह रहे हैं कि हमारे यहां ऊर्जा क्षेत्र में दिक्कतें हैं तो हमें 36 अरब डालर का कर्ज दो। सऊदी अरब ने अपने अच्छे दिनों में भी इतना पैसा पाकिस्तान को कभी नहीं दिया और अब तो उनके पास पहले की तरह पानी की तरह बहाने के लिए पैसा नहीं है। उनका बहुत सा पैसा एक नया शहर बसाने में फंस गया है। लग रहा है कि यह प्रोजेक्ट सफल नहीं हो पाएगा। ऐसे में उनके लिए भी पाकिस्तान को कर्ज देना आसान नहीं है। तो अभी इस्लामिक नाटो की बस बातें ही हो रहीं हैं।

राष्ट्रीय जागरण

12 बजे सोकर उठने वाले 'बबुआ' को नहीं थी गरीबों की चिंता : योगी

राब्यू, लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के 18 लाख 78 हजार 726 विद्यार्थियों के बैंक खातों में 944.55 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम से भेजी। इस दौरान उन्होंने पूर्ववर्ती सरकारों की कार्यशैली पर सवाल उठाया। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का नाम लिए बिना कहा कि 12 बजे तक सोकर उठने वाले 'बबुआ' को गरीब बच्चों की पढ़ाई और भविष्य की चिंता कैसे हो सकती है। पहले छात्रवृत्ति कई स्तरों पर भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती थीं। अब तकनीक के माध्यम से एक क्लिक में छात्रों के खातों में बिना किसी भेदभाव के धनराशि पहुंची है।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित समारोह में योगी ने कहा सरकार शिक्षा को समाज के अंतिम पायदान के व्यक्ति तक पहुंचाने को प्रतिबद्धता से काम कर रही है।

सरहिंद रेल धमाका : एनएसजी व एनआइए ने मौके से जुटाए सैंपल

- लुधियाना-अंबाला पूर्वी डेडिकेटिड फ्रेट कारिडोर पर शुक्रवार रात हुआ था धमाका
- पुलिस, जीआरपी, आरपीएफ, काउंटर इंटेलिजेंस, आइबी व अन्य एजेंसियां जांच में जुटीं

जागरण संवाददाता, फतेहगढ़ साहिब : पंजाब के फतेहगढ़ साहिब जिले में सरहिंद के पास डेडिकेटेड फ्रेट कारिडोर पर गणतंत्र दिवस से दो दिन पहले हुए धमाके की जांच में राष्ट्रीय सुरक्षा ग्रुप (एनएसजी) और राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनआइए) भी जुट गई है। दोनों की टीमों ने घटनास्थल पर पहुंच कर तीन जगह से सैंपल जुटाए। इन सैंपल की दोनों की तरफ से अलग-अलग जांच की जाएगी। वहीं, इस मामले में जीआरपी और पंजाब पुलिस ने दो अलग-अलग केस दर्ज किए हैं।

शुक्रवार रात नौ बजकर, 50 मिनट पर गांव खानपुर के पास लुधियाना-अंबाला पूर्वी डेडिकेटिड फ्रेट कारिडोर रेल लाइन पर हुए धमाके की चपेट में आने से मंडी गोबिंदगढ़ में कोयला उतार कर लौट रही मालगाड़ी आ गई थी। इससे उसका इंजन और रेल लाइन क्षतिग्रस्त हो गए थे। हादसे में इंजन के शीशे टूटने से उसमें सवार सुरक्षा अधिकारी अनिल शर्मा घायल हो गए थे। रविवार को दिल्ली से एनएसजी की बम डिस्पोजल यूनिट की टीम मौके पर पहुंची। टीम ने रेल लाइन और आसपास की जांच की। रेल लाइन व उसके आसपास कोई अन्य संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। एनआइए की टीम ने भी घटनास्थल का मुआयना किया। दोनों टीमों ने मौके से कुछ सैंपल जांच के लिए कब्जे में लिए हैं। इनकी जांच कर पता लगाने का प्रयास किया जाएगा कि धमाके में किस विस्फोटक सामग्री का प्रयोग किया गया।

प्रतिशोध : एक महिला ने पूर्व प्रेमी की डाक्टर पत्नी को लगा दिया एचआइवी का इंजेक्शन

- अपने प्रेमी को खोने के प्रतिशोध में दिया घटना को अंजाम
- आंध्र के कुरनूल का मामला, साजिश में शामिल चार गिरफ्तार

कुरनूल, प्रेट्र : आंध्र प्रदेश में एक महिला के प्रेम में प्रतिशोध लेने का एक विचित्र मामला सामने आया है। अपने पूर्व डाक्टर प्रेमी से विवाह करने में नाकाम रही एक महिला ने प्रेमी की डाक्टर पत्नी को जानलेवा संक्रामक एचआइवी वायरस का इंजेक्शन लगा दिया। पुलिस ने इस मामले में महिला समेत चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

गिरफ्तार आरोपितों की पहचान कुरनूल निवासी बीबोया वसुंधरा (34), अदोनी के निजी अस्पताल में कार्यरत नर्स कोंगे ज्योति (40) व वसुंधरा की 20 साल से अधिक आयु की दो संतानों के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि उन्हें 24 जनवरी को गिरफ्तार किया गया। एक अधिकारी ने बताया, ''आरोपित वसुंधरा ने तीन अन्य के साथ साजिश रचकर स्कूटर सवार महिला डाक्टर का हादसा कराया और उसके पूर्व प्रेमी की पत्नी और डाक्टर को अस्पताल पहुंचाने के बहाने से एचआइवी वायरस का इंजेक्शन लगाया।'' आरोपितों ने सरकारी अस्पताल में इलाज करा रहे मरीजों से एचआइवी संक्रमित रक्त के नमूने प्राप्त किए थे। इसके लिए उन्होंने नमूनों का अनुसंधान करने का बहाना बनाया। आरोपितों का दावा है कि उन्होंने संक्रमित रक्त को एक रेफ्रिजरेटर में संग्रहित किया। अपने पूर्व प्रेमी के किसी अन्य महिला से शादी करने को स्वीकार नहीं कर पाने के कारण आरोपित ने इस जोड़े को अलग करने की साजिश रची।

पुलिस ने बताया कि नौ जनवरी को 2.30 बजे कुरनूल के एक निजी मेडिकल कालेज में असिस्टेंट प्रोफेसर पीड़िता लंच के लिए ड्यूटी के बाद स्कूटर से घर लौट रही थीं, तब दो व्यक्तियों ने जानबूझकर उनके स्कूटर को केसी कनाल के पास विनायक घाट पर टक्कर मारी, जिससे वह घायल हो गईं। आरोपित फिर मदद का बहाना बनाकर उनके पास पहुंचे। आटो रिक्शा में ले जाने का प्रयास करते समय वसुंधरा ने एचआइवी इंजेक्शन लगाया। पीड़िता डाक्टर ने जब शोर मचाया, तो वह भाग गई। पीड़िता को तुरंत उपचार मिला और अब वह ठीक हैं। अधिकारी ने कहा, ''पीड़िता डाक्टर हैं वह परीक्षण व दवाओं के बारे में जानती थीं। अन्य डाक्टरों ने उन्हें तीन सप्ताह बाद काम पर लौटने की सलाह दी है क्योंकि यह म्यूटेशन का समय है।

छात्रा के अंत:वस्त्र पर मिले स्पर्म के अवशेष, बन रहा डीएनए प्रोफाइल

जासं, पटना: पटना के चित्रगुप्त नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत एक हास्टल में नीट-यूजी की तैयारी कर रही छात्रा की मौत के मामले में शनिवार को एफएसएल ने भी बायोलाजिकल जांच रिपोर्ट एसआइटी को भेज दी। रिपोर्ट में कहा गया कि परीक्षण के क्रम में कथित रूप से घटना के समय पहने गए एक अंत:वस्त्र से मानव स्पर्म के अवशेष प्राप्त हुए हैं। एफएसएल की बायोलाजिकल जांच में जो साक्ष्य मिले हैं, अब उसका डीएनए प्रोफाइल तैयार किया जा रहा। एक से दो दिनों में डीएनए प्रोफाइल तैयार कर लिया जाएगा। इसके बाद गिरफ्तार आरोपित और एसआइटी द्वारा चिह्नित अन्य संदिग्धों का डीएनए मिलान किया जाएगा। अब इस मामले में सीआइडी की भी इंट्री हो गई है। रविवार को सीआइडी की टीम गर्ल्स हास्टल पहुंची। उनके साथ एसआइटी के एक-दो पुलिस पदाधिकारी भी थे। सीआइडी की टीम दो घंटे तक जांच-पड़ताल में जुटी रही। इसके बाद वहां से चली गई। फोरेंसिक रिपोर्ट सामने आने के बाद सूचना संकलन और समुचित कार्यवाही करने में विफलता के आरोप में चित्रगुप्त नगर थाने की प्रभारी रोशनी कुमारी और कदमकुआं के अवर थानाध्यक्ष को निलंबित कर दिया गया है।

मालूम हो कि चित्रगुप्त नगर थाना क्षेत्र स्थित हास्टल में नीट की तैयारी कर रही छात्रा की मौत के मामले में प्रारंभिक जांच का हवाला देकर पटना पुलिस पहले ही यौन हिंसा की बात से इन्कार कर दिया था, लेकिन दो जांच रिपोर्ट से पुलिस की कार्यप्रणाली ही सवालों के घेरे में आ गई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी यौन हिंसा से इन्कार नहीं होने की बात कही गई। उसके बाद आई फोरेंसिक रिपोर्ट ने भी इसी ओर इशारा किया है। अब पुलिस की पूरी थ्योरी ही बदल गई है।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य ★ सार्थक ★ सदैव

गणतंत्र की गरिमा

देश आज अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह अवसर है, अपने गौरवशाली अतीत के स्मरण का, स्वतंत्रता सेनानियों व संविधान रचयिता पूर्वजों के प्रति श्रद्धा जताने का और उन सभी कर्मयोगियों का आभार जताने का, जिन्होंने बीते 76 वर्षों में भारतीय गणराज्य को दुनिया की पहली कतार में पहुंचाने में अपना योगदान दिया है। यह सफर आसान नहीं रहा। एक गणतंत्र के रूप में हमने जब अपना पहला कदम बढ़ाया था, तब देश की आबादी करीब 36 करोड़ थी, आज यह 140 करोड़ से ऊपर है। तब सदियों के शोषण और दमन से मुक्त हुए देश ने लगभग शून्य से शुरुआत की थी। हमारे कर्णधारों के सामने 36 करोड़ लोगों को दो वक्त भरभेट भोजन मुहैया कराने की गंभीर चुनौती थी। देश बंगाल के दुर्भिक्ष को भूला न था। इसलिए सरकार ने अनाज के मामले में देश को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया। भाखड़ा-नांगल बांध जैसी कोशिशें शुरू हुईं और हमारे कर्मयोगी किसानों ने पहली पंचवर्षीय योजना से ही अनथक परिश्रम कर अगले कुछ दशकों में यह सफलता अर्जित कर ली। आज देश न सिर्फ 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज बांटने की स्थिति में है, बल्कि कई देशों को भी अन्न मुहैया करा रहा है।

भारतीय गणतंत्र की स्थापना के साथ राजनीतिक सत्ता सीधे जनता के हाथों में आ गई थी। तब से आज तक 18 बार जनता ने अपनी लोकप्रिय भारत सरकार चुनी है, मगर यह सवाल आज अपनी जगह कायम है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने शासकों और नागरिकों से जो अपेक्षाएं की थीं, क्या हम उन पर पूरी तरह खरे उतरे हैं? निस्संदेह, हम अपनी राजनीतिक स्थिरता, सत्ता के सफल हस्तांतरण, गरीबी उन्मूलन की दिशा में मिली सफलता पर गर्व कर सकते हैं, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई तरक्की पर भी कमोबेश संतोष जता सकते हैं, मगर हमारे संविधान निर्माताओं ने सबके लिए समान अवसर का जो सपना देखा था, उस दिशा में अब भी मंजिल दूर दिखती है। शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ धर्म व जाति के संकीर्ण दायरों के टूटने और एक समतामूलक समाज के निर्माण का जो सपना देखा गया था, आज 80 प्रतिशत साक्षर हो चुका भारत इसकी ठोस आश्वस्ति नहीं दे रहा। धर्म व जाति की गोलबंदियां ज्यादा मजबूत होती दिखती हैं।

हमारे गणतंत्र की कामयाबी में स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वायत्त निर्वाचन आयोग, जिम्मेदार विधायिका और आकाशधर्मा शिक्षा केंद्रों की मुख्य भूमिका रही है।

हमारे गणतंत्र की कामयाबी में इसकी संस्थाओं की महती भूमिका रही है। स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वायत्त निर्वाचन आयोग, जिम्मेदार विधायिका और आकाशधर्मा शिक्षा केंद्र दुनिया भर में भारतीय गणराज्य की कीर्ति के आधार-स्तंभ रहे। इसलिए जब कभी विधायिका ने अपनी सीमाओं का अतिक्रमण किया, न्यायपालिका ने उसे संविधान दिखाकर अपने कदम पीछे खींचने को बाध्य किया, जब न्यायपालिका की तरफ से ऐसी कोई सक्रियता दिखी, तो विधायिका ने उसे आईना दिखाने का काम किया। दुर्योग से, इन तमाम इदारों में 'गण' की आस्था कुछ कमजोर पड़ी है और यह भारतीय गणराज्य के लिए सुखद बात नहीं हो सकती। सबसे ज्यादा सवालों में तो इस समय देश का निर्वाचन आयोग है, जो गण के अधिकारों का प्रतिनिधि संगठन है। उसके 'मत के अधिकार' का संरक्षण इस संस्था की पहली पवित्र जिम्मेदारी है। सिर्फ चुनावों में मतदाताओं की भागीदारी गणराज्य को गौरवशाली नहीं बनाता, कमजोर से कमजोर मतदाता की संतुष्टि से वह महान बनता है। सुप्रीम कोर्ट का बार-बार हस्तक्षेप बताता है कि चुनाव आयोग को अपनी कार्यशैली पर गौर करने की दरकार है। भारतीय गणराज्य की गरिमा अक्षुण्ण रखने के लिए यह बहुत जरूरी है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 26 जनवरी, 1951

गणराज्य की वर्षगांठ

जनवरी 26 भारत के इतिहास में सुनहरा दिन है। इस दिन को हमने पहली बार सन् 1930 में मनाया था। उस दिन भारतीयों ने यह शपथ ली थी कि वे उस समय तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक अपने देश को पूर्ण स्वतंत्र, मुकम्मल आजाद नहीं कर लेंगे। यह दिन आता था और हमको अपनी शपथ को पूरा करने की नयी प्रेरणा देता था। आखिर हमारी शपथ पूरी हुई। हमने अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंका और देश को पूर्ण स्वतंत्र देखने का हमारा संकल्प सत्य हुआ। देश के लोगों ने अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा देश का संविधान तैयार किया और उसे इसी 26 जनवरी के ऐतिहासिक दिन को प्रचारित किया। उस दिन भारतीय गणराज्य अस्तित्व में आया, जो इस देश की पूर्ण स्वायत्तता का प्रतीक है। आज के दिन देश के इतिहास में नये अध्याय का आरम्भ हुआ है। मनुष्य के जीवन में विश्राम के लिए अवकाश कहां है? जब तक जीवन है तब तक उसे जूझना है। वह मृत्यु की गोद में ही विश्राम पाता है। किन्तु राष्ट्र का जीवन व्यक्ति के जीवन से इस अर्थ में भिन्न है कि उसका कहीं अन्त नहीं है; यह सदा आगे और आगे बहता चलता है। राष्ट्र ने पहले विदेशी राज को हटाने के लिए संघर्ष किया। अब उसे नव-निर्माण के लिए संघर्ष करना है और यह संघर्ष पहले की अपेक्षा कम कठिन नहीं है। संहार की अपेक्षा निर्माण हमेशा ही कठिन होता है। यह हमारे पौरुष को चुनौती देता है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि गणराज्य का प्रथम वर्ष हमारे लिए कठिनाइयों और विपत्तियों का वर्ष रहा है। अन्तरराष्ट्रीय जगत में तीसरे महायुद्ध के मेघ मंडराते रहे हैं। नया महायुद्ध संसार के लिए अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध होगा। पिछले दो महायुद्धों का अनुभव हमको बता रहा है कि युद्ध से कोई समस्या हल नहीं होती, बल्कि अनेक नयी समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। नेहरूजी ने यूरोप के तीन सप्ताह के दौरे से वापस लौटने के बाद राष्ट्र के नाम जो रेडियो-भाषण दिया है, उसमें वह कहते हैं, किसी भी व्यक्ति को यह नहीं समझना चाहिए कि युद्ध से उसका अथवा उसके देश का भला होगा। युद्ध से न केवल असीम विनाश होगा, बल्कि जो बच रहेंगे, उनकी आत्माओं को भी वह कलुषित कर देगा।' दुनिया को इस युद्ध की महाविपत्ति से बचाने के लिए भारतीय गणराज्य ने अपनी समस्त शक्ति से प्रयत्न किया है।

आदर्श गणराज्य की ओर बढ़ता भारत

यहां स्कैन करें

मीरा कुमार | पूर्व लोकसभा अध्यक्ष

इस दिन देश की राजधानी के कर्तव्य पथ पर पूरे विश्व की निगाहें टिकी रहती हैं। दुनिया जानना चाहती है कि भारत में कितनी तरक्की हुई है? इसने कितनी आर्थिक उन्नति की?

आज गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मैं सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करती हूं। उन्हीं की कुर्बानियों की वजह से आज हम भारत जैसे गौरवशाली गणतंत्र के नागरिक हैं। खुली हवा में सांस ले रहे हैं। निस्संदेह, हमारा गणतंत्र हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

आजादी के बाद हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था ने गणतंत्र की परिकल्पना की और उसे साकार रूप दिया। यह राजनीतिक व्यवस्था समता पर आधारित है। देश में जितने भी वयस्क हैं, उन्हें मत देने का बराबर का अधिकार हासिल है। चाहे वे धनवान हों या निर्धन, स्त्री हों या पुरुष, किसी भी जाति अथवा धर्म के हों, सबको एक वोट देने का अधिकार है।

इस राजनीतिक व्यवस्था में प्रत्येक स्तर पर चुनाव का प्रावधान है। पंचायत, विधानसभा, विधान परिषद, लोकसभा, राज्य सभा और राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद के लिए निर्वाचन की व्यवस्था है। हमारे आम चुनाव के समय समता का ऐसा विशाल और सुंदर दृश्य देखने को मिलता है, जैसा दुनिया में कहीं और नजर नहीं आता। विश्व के सभी देश अचरज करते हैं कि यह कैसे संभव होता है।

जनतंत्र तो बहुत से उन्नत और प्रगतिशील देशों में भी है। किंतु कई देशों में सर्वोच्च पद के लिए चुनाव की व्यवस्था नहीं है। या तो वहां राजशाही है या कोई अन्य व्यवस्था। कई ऐसे देश हैं, जहां एक ही दल का शासन है। कहने को वहां चुनाव होते हैं, लेकिन वहां अनेक दल नहीं हैं, जिनकी अलग-अलग विचारधाराएं हों और जनता उनमें से किसी एक का चयन कर सके।

भारत में ऐसा नहीं है। यहां विभिन्न विचारधाराओं को अपना राजनीतिक दल बनाकर चुनाव में खड़े होने का अवसर दिया जाता है और जनता को भी मौका मिलता है कि वह उनमें से किसी एक को चुने। यह एक अद्भुत व्यवस्था है। यह व्यवस्था देश के मतदाताओं की परिपक्व सोच पर विश्वास करती है।

हमारा जनतंत्र प्रगति-पथ पर अग्रसर है, किंतु दो बाधाएं मार्ग में हैं। उनको दूर करना आवश्यक है, नहीं तो रास्ता भटक जाने की आशंका है। अन्य संकट भी आ सकते हैं। उनसे अपनी अमूल्य जनतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा करने के लिए शीघ्र ही, तत्परता के साथ आवश्यक कार्रवाई करनी होगी।

हमारे गणतंत्र के बढ़ते कदमों को रोकने वाली सबसे बड़ी बाधा है- गरीबी। आंकड़े चाहे जो भी कहें, वास्तविकता यही है कि दुनिया में सबसे ज्यादा गरीबों की संख्या हमारे देश में है। इसलिए गरीबी से निपटना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह गरीबी हमारे जनतंत्र को खोखला कर रही है। चुनावों में गरीबों के वोट खरीद लेने से जनतंत्र की तो दुर्दशा हो ही जाती है, गरीब भी ठगे से रह जाते हैं। निस्संदेह, वे निर्धन हैं, मगर स्वाभिमानी भी हैं। उनके स्वाभिमान का सम्मान करते हुए उनकी गरीबी दूर करना हमारे जनतंत्र की प्रगति के लिए अनिवार्य है।

जनतंत्र के बढ़ते हुए कदमों को रोकने वाली और विकृत बेड़ी है- जाति व्यवस्था। 'जाति व्यवस्था और जनतंत्र साथ-साथ नहीं चल सकते।' यह मेरे पिता बाबू जगजीवन राम अक्सर कहते थे। जनतंत्र में लगा जातिवाद रूपी दीमक धीरे-धीरे इसे समाप्त कर देगा और यह केवल जनतंत्र का मुखौटा रह जाएगा। उसकी आत्मा नष्ट हो जाएगी। हमारे देश और समाज को इस पर गंभीरता से विचार कर कारगर कदम उठाना होगा।

गणतंत्र दिवस हमारे लिए हर्षोल्लास लेकर आता है। इस दिन देश की राजधानी के कर्तव्य पथ पर पूरे विश्व के देशों की निगाह रहती है कि भारत में कितनी तरक्की हुई है? इसने कितनी आर्थिक उन्नति की है? देश की रक्षा को सदृढ़ करने के लिए हमारे पास आयुधों और अस्त्र-शस्त्र का कैसा विपुल भंडार है? कर्तव्य पथ पर परेड करते और राष्ट्रपति को सलामी देते सेना के तीनों अंगों- थल सेना, वायु सेना और नौसेना के जांबाज रणबांकुरों पर भारत की जनता का मस्तक गर्व से ऊंचा उठ जाता है। स्कूली छात्र-छात्राएं जब *सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा...* गाती हैं और कदम से कदम मिलाती मार्च करती हैं, तब लगता है कि हमारे देश के क्षितिज से नई सुबह की सुनहरी किरण धरती पर उतर आई है। *जय हिंद* का उद्घोष, राष्ट्रगान में समाहित देशभक्ति और देश के लिए सर्वस्व त्यागने का भाव, 21 तोपों की गगनभेदी सलामी, आकाश में तिरंगे के रंगों को लहराते, तरह-तरह की कलाबाजियां दिखाते वायु सेना के हवाई जहाज और उनके निर्भीक पायलट- ये सब वहां उपस्थित दर्शकों को तो रोमांचित करते ही हैं, टेलीविजन के करोड़ों दर्शकों को भी गौरवान्वित कर देते हैं।

मुझे गर्व है कि मेरे माता-पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। बाबूजी ने लंबे अरसे तक अंग्रेजों की जेल की यातना सही। वह केंद्र में कैबिनेट मंत्री थे, जब 26 जनवरी, 1950 को देश ने पहला गणतंत्र दिवस मनाया। पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद पद की शपथ लेने के बाद इंडिया गेट के पीछे नेशनल स्टेडियम में गणतंत्र समारोह में सलामी लेने आए। मैं उस समय बहुत छोटी थी, परंतु मां-बाबूजी के साथ उस गणतंत्र समारोह में शामिल होने की यादें आज भी हैं। उसके बाद मैं हर साल बाबूजी और मां के साथ गणतंत्र दिवस की परेड देखने जाती थी। अगली पंक्ति में उनके साथ बैठती थी या बच्चों के लिए सामने बिछी कालीन पर। खूब तालियां बजाती थी।

हर वर्ष इंडिया गेट के राजमार्ग किंग्सवे, जो बाद में राजपथ कहलाया और अब कर्तव्य पथ कहलाता है, पर परेड होती है। 1972 की 26 जनवरी विजय चौक पर मनाई गई। यह विशेष आयोजन था, जो मेरे बाबूजी ने रक्षा मंत्री के रूप में करवाया था। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अभूतपूर्व विजय मिलने के उपलक्ष्य में यह गणतंत्र समारोह विशेष था। मां-बाबूजी के नहीं रहने पर भी मैं गणतंत्र समारोह में जाती रही हूं- केंद्रीय कैबिनेट मंत्री या लोकसभा अध्यक्ष के रूप में।

गणतंत्र दिवस प्रतिवर्ष यही संदेश देता है कि हम एक महान देश के वासी हैं। प्रेम और सद्भाव से आगे बढ़ना हमारा ध्येय है। जय हिंद!

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

गांव-गांव घूमकर भारत को समझते रहे मार्क टली

यहां स्कैन करें

राजेश प्रियदर्शी | वरिष्ठ संपादक, बीबीसी

भारत में *बीबीसी* की पहचान रहे सर मार्क टली का जाना दुखद है। *बीबीसी* परिवार के लिए तो मानो पितामह के गुजर जाने जैसा है। मेरी खुशकिस्मती है कि उनसे कई बार मिलने और बातें करने का अवसर मिला, लेकिन हमसे पहले वाली पीढ़ी ज्यादा खुशकिस्मत थी, जिसने उनको और ज्यादा करीब से, उनकी सक्रियता वाले दौर में देखा।

मार्क टली पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे, लेकिन कुछ महीनों पहले तक *हिन्दुस्तान टाइम्स* में उनका कॉलम देखकर यह आश्वस्ति होती थी कि वह ठीक हैं। उनसे सीखने लायक अनेक बातों में से एक बात तो यही थी कि मार्क टली हर किसी से, हर समय सीखते रहते थे। भारत के समाज और राजनीति की उनकी समझ बहुत गहरी थी, लेकिन वह अक्सर अपने वाक्य की शुरुआत कुछ यूं करते, 'मुझे तो ज्यादा मालूम नहीं, आप बताइए कि...।' जिन बातों की उन्हें पक्की जानकारी होती थी, उनके बारे में भी वह यही कहते थे, 'जहां तक मुझे मालूम है...।'

मुझसे कई बार वह झारखंड के बारे में पूछते थे। मार्क टली से बात करते हुए डर कभी नहीं लगा, क्योंकि उनके व्यक्तित्व में ज्ञान के आतंक की जगह विनम्र विद्वता की आभा थी, लेकिन इस बात का एहसास मुझे हमेशा रहता था कि वह संथालों और मुंडाओं के बारे में उतना ही जानते थे, जितना उत्तर प्रदेश के निषादों और बिहार के मुसहरों के बारे में या फिर केरल के पानियन या मुथुवन लोगों के बारे में। उनकी किताब *नो फुल स्टॉप इन इंडिया* हर उस व्यक्ति को पढ़नी चाहिए, जो भारत को गहरे समझना चाहता है। वह सबसे पहले अच्छी तरह यही समझाते हैं कि भारत समझ में क्यों नहीं आता? टली ने एक ब्रितानी अर्थशास्त्री के हवाले से कहीं लिखा था- 'भारत के बारे में जो आप सच कह सकते हैं, उसके ठीक विपरीत बात भी सच होती है।'

जैसी लोकप्रियता उन्हें मिली, वह शायद ही किसी और पत्रकार को मिले, पर उन्होंने खुद को सेलिब्रिटी होने की संभावना से हमेशा दूर रखा। स्मृति शेष :

तकरीबन 90 साल पहले ब्रिटिश शासन के दौरान जन्मे मार्क टली हर तरह से एक खांटी हिन्दुस्तानी थे। ज्यादातर समय खादी के कुरते और सैंडल पहनने वाले टली साहब लंबे समय तक दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में रहे और धूप में घूमते रहने के कारण उनका गोरा रंग एक उम्र के बाद लगभग तांबई हो गया था। कोई अनजान आदमी उन्हें देखकर एकबारगी यह नहीं कह सकता था कि वह अंग्रेज हैं।

कई दशकों तक भारत और दक्षिण एशिया की ऐतिहासिक घटनाओं पर शानदार पत्रकारिता करने वाले मार्क टली को आपातकाल के दौरान उनकी रिपोर्टिंग के कारण कुछ समय के लिए यहां से निकाल दिया गया था। वह लगातार निडर, लेकिन संतुलित पत्रकारिता करते रहे। मेरे *बीबीसी* पहुंचने से तीन साल पहले ही1994 में उन्होंने इस संस्थान से इस्तीफा दे दिया, लेकिन वह लगातार सक्रिय बने रहे। मार्क टली ने कोई दस किताबें लिखी हैं, जो बहुत ही दिलचस्प और पठनीय हैं।

मेरी उनसे पहली लंबी बातचीत सन् 2001 के कुंभ मेले के दौरान हुई थी। तब उन्होंने बहुत विस्तार और गहराई से समझाया कि विदेशी लोग कुंभ मेले में क्यों खिंचे चले आते हैं? किसी भी विषय पर मार्क टली से बात करने का मतलब समझ की एक नई खिड़की का खुलना होता था। उन्होंने भारत को गांव-गांव घूमकर समझा था। वह हमेशा ऐसे लोगों के बीच रहना चाहते थे, जो उनको 'फर्स्ट हैंड' जानकारी दें। वह दिल्ली में संपादकों और बड़े पत्रकारों से जानकारी लेने में कम ही यकीन रखते थे।

एक और बात, जो उन्हें विलक्षण बनाती थी, वह थी सहृदयता। मैंने कभी मार्क टली के मन में किसी के प्रति कटुता या दुराव का भाव नहीं देखा। उनको पसंद करने वालों की संख्या लाखों में थी, क्योंकि उन्हें नापसंद करने का कोई वास्तविक कारण खोजना मुश्किल काम था। मार्क टली को जैसी लोकप्रियता और प्रतिष्ठा मिली, वह शायद ही किसी और पत्रकार को नसीब हो, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने व्यक्तित्व को सेलिब्रिटी होने की सहज संभावना से दूर रखा।

मार्क टली से हर मुलाकात के बाद यह विस्मय रह जाता था कि वह इतने अद्भुत कैसे हैं? एक ऋषि जैसा जीवन जीकर विदा हुए सर मार्क टली को श्रद्धांजलि!

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

अधूरी इच्छाओं को जी लें

कहते हैं, सास भी कभी बहू थी, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि वह बहू कभी एक लड़की भी थी- आजाद, स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाली। अपना व्यक्तित्व था जिसका, रंगीन सपने थे जिसके। शादी होते ही वह एक पत्नी, मां और सास की भूमिका में आ जाती है और अपना वजूद भूल जाती है। उसे फिर से जीने का एक बेहतरीन समय है, जब उसके बेटे का ब्याह हो जाता है। वह हर स्त्री के जीवन में एक नया मोड़ हो सकता है।

बेटे का विवाह होते ही परिवार में एक नया सत्ता-केंद्र तैयार हो जाता है। जो बेटा अब तक आज्ञाकारी प्रजा का हिस्सा था, वह पत्नी के आते ही एक सत्ताधीश बनता है और स्वायत्तता चाहता है। इस परिवर्तन को माता-पिता समझ नहीं पाते और न ही वे उसके लिए तैयार होते हैं। वे सोचते हैं कि इस घटना की जिम्मेदार उनकी बहू है। मां पच्चीस साल मेहनत करके बेटे को काबिल बनाती है और एक अनजान लड़की आकर पच्चीस मिनट में उसे अपने वश में कर लेती है। मां के पल्लू से झूलने वाला बेटा अब पत्नी के आंचल में उलझ जाता है।

मां यह कभी समझ ही नहीं पाती कि इसमें दोष उस लड़की का नहीं, बल्कि बेटे की काम ऊर्जा का है। इसको आप दोष भी नहीं कह सकते, क्योंकि उसी की तृप्ति के लिए तो शादी कराई जाती है, फिर शिकायत कैसी? विवाह, बेटे का रूपांतर है पति के रूप में। कोई मां अपने बेटे की सेक्सुअलिटी को समझ ही नहीं पाती। भारतीय परिवारों में दमन इतना ज्यादा है कि बेटे का वह पहलू मां के आगे उजागर नहीं हो सकता। अतः मां के सामने बेटे का एक चेहरा होता है और पत्नी के सामने बिल्कुल दूसरा। इन दो चेहरों के बीच कोई तालमेल नहीं होता। संघर्ष यहीं से शुरू होता है।

दूसरी बात, मां की बेटे पर अत्यधिक पकड़ होती है। बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया, इसका यह मतलब यह तो नहीं कि आप उसकी आत्मा के मालिक हो गए। यदि सास-बहू की विभीषिका से बचना हो, तो कुछ उपाय करने होंगे। एक तो शुभ यही होगा कि बेटे के विवाह से पहले मां को प्रशिक्षण दिया जाए कि सास कैसे बना जाए। यह एक नया किरदार है, जिसके लिए वह प्रशिक्षित नहीं है।

विवाह के बाद बेटे से मुक्त हो जाएं मां और अपना जीवन जिएं। याद करें वह दौर, जब वे एक स्वतंत्र लड़की थीं, खुद को विकसित करना चाहती थीं। वह लड़की अब भी उनके भीतर बैठी है।

उस प्रशिक्षण का एक हिस्सा यह भी हो कि अब वह बेटे से मुक्त हो जाए और अपना जीवन जिए। याद करे वह दौर, जब वह एक स्वतंत्र लड़की थी, खुद को विकसित करना चाहती थी। वह लड़की अब भी उसके भीतर बैठी इंतजार कर रही है। वह उससे दोस्ती कर ले, उसे अपनाए और अधूरी इच्छाएं पूरी करने के बारे में सोचे। वह परिवार के लिए उपलब्ध तो होगी, लेकिन साथ में अपना विकास भी करेगी। जब घर का हर सदस्य आनंदित और संतुष्ट होगा, तब पूरा परिवार जगमगा उठेगा।

अमृत साधना

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

दुनिया भर में नस्लवाद, राष्ट्रवादी विद्वेष और धार्मिक कट्टरता के बोझ तले समाज के टूटने का खतरा है। हमें ऐसे समाज बनाने चाहिए, जहां हर किसी की पहचान का सम्मान हो और सभी साझा नागरिक मूल्यों से बंधे हों।

अतीत का सम्मान, भविष्य की दृष्टि

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस प्रत्येक भारतीय के दिल में गर्व, सम्मान और राष्ट्रीय एकता की अमर ज्योति जलाते हैं। यह दिन केवल हमारे गणराज्य की स्थापना का उत्सव नहीं है, बल्कि लोकतंत्र के आदर्शों, हमारी संस्कृति और भारतीयता की अनंत भावना का विशाल महोत्सव है। ये दिवस हमारे गौरवशाली इतिहास का अभिवादन करते हुए हमें स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करते है। ये दिन हमें याद दिलाते हैं कि भारत की ताकत उसकी विविधता में है, जिसका हर राज्य, हर क्षेत्र, हर समुदाय अपनी अनोखी पहचान और संस्कृति लिए हुए है। हमारे पूर्वजों ने जो संस्कृति और परंपराएं सौंपी हैं, उन्हें संरक्षित करना और आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर पिछले एक साल के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में अपना पराक्रम और शौर्य दिखाने वाले सैन्य जवानों और नागरिकों को भी सम्मानित किया जाता है। इसके पीछे भावना यह रहती है कि लोग इनसे प्रेरणा लें और देश को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

'स्वर्णिम भारत' की बात केवल विरासत तक सीमित नहीं है, यह विकास की बात भी करती है। हमारे सामने एक ऐसे भारत का निर्माण करने का लक्ष्य है, जहां इसके हरेक नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के समान अवसर मिलें। यह विकास का वह मार्ग है, जो हमें एक समावेशी, टिकाऊ और न्यायपूर्ण समाज की ओर ले जाता है। जब राजपथ (अब कर्तव्य पथ) पर अनुशासनबद्ध कदमताल करती हमारी सैन्य परेड प्रारंभ होती है, तब यह केवल भारत की सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं होती, बल्कि हमारे सैनिकों के अदम्य साहस व अटूट संकल्प का जीवंत उदाहरण भी होती है यह परेड। यह दृश्य भारत की राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनकर हर हृदय को गर्व और प्रेरणा से भर देता है। विभिन्न राज्यों की झांकियां हमारी सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध विरासत का अद्भुत चित्रण करती हैं, जो ये सिखाती हैं कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में निहित है। क्या यह भव्यता हमारे समाज की सच्चाई को भी प्रतिबिंबित करती है? क्या संविधान में लिखी स्वतंत्रता और समता जैसी बातें हमारे जीवन में भी साकार होती हैं, या वे केवल किताब तक सीमित हैं?

गणतंत्र दिवस का असली अर्थ सिर्फ परेड और उत्सव तक सीमित नहीं है, यह हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, पर क्या वास्तव में हमारे नागरिकों को लोकतांत्रिक मूल्यों को जीने का अवसर मिलता है? लोकतंत्र को हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा होना चाहिए।

आरके जैन अरिजीत, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
गणतंत्र दिवस

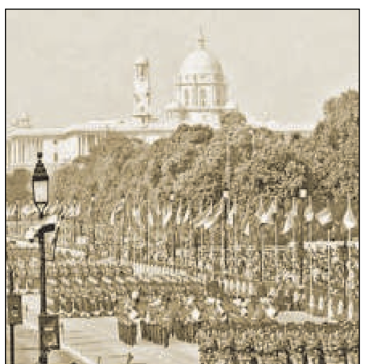

सुपात्रों की पहचान स्वयं समाज करे

गणतंत्र दिवस के मौके पर एक बार फिर पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई। यद्यपि सरकार के सत्प्रयासों से योग्य पात्रों के चयन में पारदर्शिता आई है, तथापि सरकार के साथ-साथ समाज की भी जिम्मेदारी बनती है कि ये पुरस्कार सुपात्रों के मस्तक की ही मणि बनें। पिछले कुछ वर्षों के नाम आम आदमी को प्रेरित, आह्लादित करते हैं, जन-सामान्य को ऐसे व्यक्तियों की खोज, मूल्यांकन और नामांकन कराने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। जो लोग किसी दिखावे के लिए, आडंबरवश या निहित स्वार्थ के कारण नहीं, बल्कि आत्मानंद या परमार्थवश समाज-कल्याण के कार्यों में जुटे हैं, उन्हें ही ये सम्मान मिलने चाहिए। ऐसे लोग इन कार्यों का बीड़ा किसी जुनून, किसी घटना से प्रेरित होकर उठा लेते हैं व उन्हें इस बात का बिल्कुल गुमां नहीं होता कि उन्होंने समाज या राष्ट्रहित में कितना बड़ा योगदान दे दिया है! आज सोशल मीडिया के प्रचार-प्रसार के बाद हालांकि स्व-प्रदर्शन की होड़ सी लग गई है, मगर ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नहीं, जो प्रचार से दूर अपनी सेवा में तन्मयता से लगे हैं। ऐसे दशरथ मांझियों और वृक्ष-माताओं को खोजने का दायित्व हमारा है। ये हमारे सच्चे प्रेरणा-स्रोत हैं, आदर्श हैं। समाज को इन 'गरूड़ों' को पद्म पुरस्कारों वाले नीलगगन तक पहुंचाने में सहायता करनी चाहिए, ताकि कोई 'कपोत' इन्हें इस सम्मान से वंचित न कर दे।

मनोज कुमार शर्मा, टिप्पणीकार

हमारे देश को आजाद कराने के लिए बहुत सारे देशभक्तों ने अपना सब कुछ, यहां तक कि अपनी जान भी हंसते-हंसते कुर्बान कर दी थी। इसलिए हमें अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की अब ऐसी मजबूत नींव रखनी चाहिए कि हमारी स्वतंत्रता के लिए कभी कोई खतरा न पैदा हो सके।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अंग्रेजों के दांत खट्टे करने के लिए 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' की जैसी ललकार दी थी; सरदार भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और अन्य नौजवान क्रांतिकारियों ने अपनी खेलने-कूदने की उम्र में जिस तरह अपने अंदर देशभक्ति की भावना भरी, क्या आज ऐसा हो रहा है? नहीं! अगर ऐसा होता, तो आजादी के इतने वर्षों बाद हमारा देश इतनी सारी समस्याओं से घिरा न होता, देश के राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में इतने दोष न आए होते, अमीरी-गरीबी की खाई यूं न बढ़ती, युवा वर्ग नशे की राह पर न चलता। यह बेहद अफसोस और शर्म की बात है कि जिन्हें आजादी की पकी-पकाई खीर मिली है, चाहे वे राजनेता हों या फिर आम जनता, वे संविधान बनाने वालों का उपहास उड़ाते हैं, उनमें कमियां निकालने में जुटे रहते हैं।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

आज के डिजिटल गणतंत्र में, डिजिटल साक्षरता पारंपरिक साक्षरता की तरह ही महत्वपूर्ण है। - निकी वर्द

नई चुनौतियों के बीच

आज जब भारत अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है, तब यह अवसर सिर्फ संविधान को स्मरण करने का नहीं, बल्कि उसके जीवंत स्वरूप के मूल्यांकन का भी है। दुनिया भर के गणतंत्रों में जो स्थितियां बन रही हैं, उस संदर्भ में हमारा लोकतंत्र बाकियों की तुलना में अधिक मजबूत नजर आता है। जाहिर है कि हममें कोई तो शक्ति निहित है, जिसकी बदौलत न तो बाहरी दबाव और न ही आंतरिक चुनौतियां इसे विचलित कर पा रही हैं। हमारे गणतंत्र की वास्तविक स्थिति समझनी हो, तो पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे तथाकथित घोषित गणतंत्रों की ओर देखना ही पर्याप्त है, जहां लोकतांत्रिक संस्थाएं बार-बार सैन्य या राजनीतिक हस्तक्षेप का शिकार होती रही हैं। दूसरी तरफ, वेनेजुएला और यूक्रेन जैसे देश हैं, जहां चुनाव तो होते हैं, लेकिन वैश्विक शक्तियां अपने हितों के अनुसार उन्हें दबाए रखती हैं। इसके उलट, भारत में कुछ बात तो है कि उस पर कोई हाथ तक नहीं डाल पाता। यह 'कुछ बात' हमारी संस्थागत परिपक्वता, सांविधानिक निरंतरता और नागरिकों की लोकतांत्रिक चेतना का सम्मिलित परिणाम है। हालांकि गणतंत्र की मजबूती केवल चुनावों से नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन की सुरक्षा और सम्मान से भी मापी जाती है। ग्रेटर नोएडा में हाल ही में युवा पेशेवर के साथ हुआ हादसा संविधान की भावना पर ही प्रश्नचिह्न लगाता है। इसी पृष्ठभूमि में हाल ही में सरकार ने पुराने श्रम कानूनों की जगह चार नई श्रम संहिताएं लागू करने की घोषणा की है, जिसे स्वतंत्रता के बाद श्रमिकों के लिए सबसे बड़े और प्रगतिशील सुधारों में से एक माना जा रहा है। यह गणतंत्र दिवस हमें संघीय ढांचे की चुनौतियों पर सोचने के लिए भी बाध्य करता है। दक्षिण के राज्यों में राज्यपाल और निर्वाचित मुख्यमंत्रियों के बीच बढ़ते टकराव ने सांविधानिक मर्यादाओं पर बहस को और तेज कर दिया है। दोनों को ही समझना होगा कि हमारा गणतंत्र तभी मजबूत रहेगा, जब केंद्र और राज्य, दोनों एक-दूसरे के अधिकारों और सीमाओं का सम्मान करेंगे। गणतंत्र की मजबूती का एक और पैमाना हमारी वैश्विक भूमिका भी है। भारत और यूरोपीय संघ के बीच

होने वाले मुक्त व्यापार समझौते को लेकर यूरोपीय देशों का संघ जिस तरह से उत्साहित है, वह वैश्विक पटल पर भारतीय बाजारों की ताकत को ही दर्शाता है। आज जब दुनिया भर के लोकतंत्रों पर अविश्वास बढ़ रहा है, चुनावों की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे हैं और संस्थाएं कमजोर पड़ रही हैं, हमारा गणतंत्र एक अपवाद की तरह दिखता है।

डाटा का लोकतंत्र

तकनीक अपने आप में न तो लोकतांत्रिक है और न ही अधिनायकवादी। यह इस बात पर निर्भर है कि इसे कौन नियंत्रित करता है व इसे कैसे विनियमित किया जाता है। लोकतंत्र पर खतरा सिर्फ तकनीक की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए आ सकता है कि लोगों में जागरुकता का विकास उसी रफ्तार से नहीं हुआ है।

लोकतंत्र का विकास हमेशा तकनीकी विकास के साथ हुआ है। प्रिंटिंग प्रेस ने राजनीतिक जागरूकता का विस्तार किया, रेडियो ने जनमत को आकार दिया और टेलीविजन ने चुनावी अभियानों का स्वरूप बदल दिया। आज कहीं ज्यादा ताकतवर तकनीकी काम कर रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), साइबरस्पेस और सोशल मीडिया मिलकर यह तय कर रहे हैं कि लोकतंत्र कैसे काम करते हैं, मुकाबला करते हैं और टूटते हैं। जो व्यवस्था कभी सार्वजनिक बहस और सामूहिक फैसले पर आधारित थी, वह अब तेजी से एल्गोरिदम, डाटा प्रवाह और अनदेखे डिजिटल हस्तक्षेप से प्रभावित हो रही है।

अमित दुबे
लेखक एवं राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ

आधुनिक लोकतंत्र अब डाटा नामक एक नई नींव पर काम करता है। हर सर्च क्वेरी, सोशल मीडिया इंटरैक्शन, लोकेशन पिंग और एप परमिशन से उपयोगकर्ताओं के व्यवहार से जुड़ी जानकारी मिलती है। एआई के साथ मिलकर, यह डाटा लोगों की राय को समझने और प्रभावित करने में अभूतपूर्व सटीकता प्रदान करता है। वैश्विक अनुमानों के अनुसार, आज इस्तेमाल होने वाली 70 प्रतिशत से अधिक राजनीतिक सामग्री को एल्गोरिदम द्वारा क्यूरेट किया जाता है, न कि जानबूझकर चुना जाता है। मतदाता एक ही शहर या घर में होने पर भी एक जैसी जानकारी नहीं देख पाते हैं। इसके बजाय, उन्हें वही दिखाया जाता है, जो एल्गोरिदम को लगता है कि जुड़ाव, भावना या विश्वास को मजबूत करेगा। नतीजतन एक खंडित सार्वजनिक वातावरण तैयार होता है, जहां नागरिक साझा सूचना आधार साझा नहीं करते, जो लोकतांत्रिक विमर्श के लिए जरूरी शर्त है। पारंपरिक राजनीतिक संदेश सार्वजनिक और बहस योग्य होता था। डिजिटल मनुहार निजी, व्यक्तिगत और अक्सर अदृश्य होती है।

एआई सिस्टम व्यक्तित्व की खूबियों, डर, आर्थिक तनाव, पहचान के संकेतों और भावनात्मक प्रतिक्रिया का विश्लेषण करके आदत के अनुसार राजनीतिक आख्यान तैयार करते हैं। ये संदेश सोशल मीडिया फीड, मैसेजिंग प्लेटफॉर्म और छोटे वीडियो के जरिये चुनिंदा लोगों तक पहुंचाए जाते हैं। सामूहिक प्रचार के विपरीत, इन संदेशों का पता लगाना मुश्किल होता है, इन्हें सार्वजनिक रूप से चुनौती नहीं दी जा सकती और ये अक्सर कानूनी एवं नैतिक निगरानी से बच निकलते हैं। असल में, चुनाव अब सिर्फ सार्वजनिक रैलियों या टेलीविजन बहसों में नहीं लड़े जाते, बल्कि व्यक्तिगत डिजिटल पारिस्थितिकी के अंदर लड़े जाते हैं। एआई से निर्मित सामग्रियों ने एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया है: भरोसे का खत्म होना। डीपफेक वीडियो, सिंथेटिक ऑडियो और छेड़छाड़ की गई तस्वीरें अब सार्वजनिक हस्तियों को ऐसी बातें कहते या ऐसे काम करते हुए दिखा सकती हैं, जो कभी हुई ही नहीं थीं। हालांकि तत्काल चिंता गलत जानकारी फैलाने को लेकर है, लेकिन इसका दीर्घकालीन खतरा ज्यादा गंभीर है। जब नागरिक यह फर्क नहीं कर पाते कि क्या असली है और क्या मनगढ़ंत, तो लोकतांत्रिक जवाबदेही खत्म हो जाती है। उतना ही खतरनाक इसका उल्टा मामला है: असली सबूतों को भी नकली बताकर खारिज किया जा सकता है, जिससे हमेशा के लिए अनिश्चितता पैदा हो जाती है। जब सच्चाई पर मोलभाव होने लगता है, तो लोकतंत्र काम नहीं कर सकता। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अब सबसे प्रभावशाली राजनीतिक बिचौलियों के तौर पर काम करते हैं, लेकिन उन जिम्मेदारियों के बगैर, जो पारंपरिक रूप से मीडिया संस्थानों से जुड़ी होती हैं। उनके एल्गोरिदम सटीकता से ज्यादा भावना, संदर्भ से ज्यादा टकराव और सत्यापन (वेरिफिकेशन) से ज्यादा वायरल होने को प्राथमिकता देते हैं। अध्ययनों से लगातार यह स्पष्ट होता है कि गलत या गुमराह करने वाली जानकारी, सत्यापित तथ्य की तुलना में काफी तेजी से फैलती है, खासकर जब यह डर, गुस्सा या पहचान पर आधारित प्रतिक्रिया पैदा करती है। इसके प्रलोभन की संरचना स्पष्ट है-जितने ज्यादा लोग इससे जुड़ेंगे, उतनी कमाई होगी और आक्रोश जुड़ाव को बढ़ाता है। लोकतांत्रिक स्थिरता अक्सर इसका शिकार होती है। बड़े पैमाने पर डाटा लीक अब सिर्फ वित्तीय नुकसान तक ही सीमित नहीं रह गए हैं। चोरी किए गए पर्सनल डाटा का इस्तेमाल मतदाताओं की प्रोफाइल बनाने, मतदान कम करने, खास समुदायों पर निशाना साधने एवं जानी-मानी हस्तियों को ब्लैकमेल करने के लिए हथियार के तौर पर किया जा सकता है। कई मामलों में, नागरिकों को पता ही नहीं चलता कि उनके डाटा का इस्तेमाल राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करने के लिए किया गया है। यह अदृश्य हेरफेर सहमति को कमजोर करता है, जो लोकतंत्र की नैतिक नींव है। अगर इसे निर्बाध छोड़ दिया जाए, तो एआई, डाटा के गलत इस्तेमाल और सोशल मीडिया हेरफेर से नागरिक एक ही तरह के वैचारिक भंवर में फंस जाएंगे, जहां कोई साझा सच्चाई नहीं होगी। इससे चुनावों की वैधता का संकट उत्पन्न होगा और व्यापक अविश्वास के कारण निष्पक्ष चुनावी नतीजों पर भी सवाल उठाए जाएंगे। इसके अलावा, इससे डिजिटल तानाशाही शुरू होगी, जहां निगरानी, सेंसरशिप और नियंत्रण को सही ठहराने के लिए अराजकता का इस्तेमाल किया जाता है।

विडंबना यह है कि डिजिटल आजादी का गलत इस्तेमाल खुद आजादी के खिलाफ सबसे मजबूत तर्क बन सकता है। इसका समाधान सेंसरशिप या टेक्नोलॉजिकल रोलबैक में नहीं है। यह लोकतांत्रिक अनुकूलन में है। इसके लिए ये कदम उठाए जा सकते हैं- मजबूत डाटा सुरक्षा और पारदर्शी कानून, एआई निर्मित राजनीतिक सामग्रियों का अनिवार्य खुलासा, एल्गोरिदमिक सिस्टम का स्वतंत्र ऑडिट, बड़े पैमाने पर डिजिटल और मीडिया साक्षरता कार्यक्रम और लोकतांत्रिक बुनियादी ढांचे के रूप में एआई तथा साइबरस्पेस का नैतिक शासन स्थापित करना। सबसे जरूरी बात यह है कि नागरिकों को सिर्फ उपयोगकर्ता या उपभोक्ताओं के तौर पर नहीं, बल्कि डिजिटल क्षेत्र में हितधारकों के तौर पर माना जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी अपने आप में न तो लोकतांत्रिक है और न ही अधिनायकवादी। इसका असर इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कौन नियंत्रित करता है, इसे कैसे विनियमित किया जाता है, और समाज इसकी ताकत को कितनी अच्छी तरह समझता है। लोकतंत्र सिर्फ एआई या सोशल मीडिया की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए खतरे में है, क्योंकि प्रौद्योगिकी की तरह संस्थान, कानून और लोगों में जागरूकता का विकास उसी रफ्तार से नहीं हुआ है। लोकतंत्र का भविष्य सिर्फ मतदान केंद्रों पर ही तय नहीं होगा, बल्कि डाटा सेंटर, कोड रिपॉजिटरी और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी तय होगा। लोकतंत्र इस बदलाव में बचेगा या नहीं, यह इस पर निर्भर करेगा कि समाज कितनी जल्दी यह पहचानता है कि साइबरस्पेस अब सिर्फ संचार साधन नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक अखाड़ा बन गया है। और हर सत्ता क्षेत्र की तरह, इसमें भी जवाबदेही की जरूरत होती है।

edit@amarujala.com

समाज

तभी तो पूरी होगी भारत की कहानी

सिनेमा को सिर्फ समाज का आईना नहीं होना चाहिए। इसे एक हथौड़ा होना चाहिए आकार देने के लिए, सवाल उठाने के लिए, जहां सहानुभूति नहीं है, वहां उसे बनाने के लिए।

हम देखते हैं कि हिंदी सिनेमा से गांव गायब हो रहे हैं? देश का एक बड़ा हिस्सा अब ग्रामीण भारत में रहता है, लेकिन हम उन किरदारों के बारे में बात नहीं करते। अगर वे होते भी हैं, तो ज्यादातर स्टीरियोटाइप होते हैं। तो एक मकसद यह भी था कि वहां की कहानी के बारे में बात की जाए। हमारी भारतीय फिल्मों में कोई भी हाशिये पर पड़े लोगों या अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों के बारे में बात नहीं कर रहा है। हमारी कहानियां सिर्फ हमारी 15 फीसदी आबादी तक ही सीमित हैं... शहर खलनायक नहीं है, लेकिन यह हमें खलनायक बना देता है। जब हम हाशिये पर पड़ी पहचानों की बात करते हैं, चाहे वे नस्लीय अल्पसंख्यक हों, या धार्मिक, या जाति, या यौन अल्पसंख्यक, या फिर प्रवासी, हम हमेशा उनके बारे में आंकड़ों में बात करते हैं।

आंकड़ा जरूरी है, लेकिन यह उन्हें अमानवीय भी बनाता है, क्योंकि जब शहरी भारत के लोग या दुनिया भर के शहरी इलाकों के लोग इनके बारे में बात करते हैं, तो वे खोखली सहानुभूति दिखाते हैं, जिसमें जवाबदेही की कमी होती है। हम सच में यह जानना नहीं चाहते कि उनके साथ क्या होता है। मानवीय पहलू इस फिल्म (होमबाउंड) को बनाने की असली वजहों में से एक था, और पीछे मुड़कर देखने के लिए भी। इसमें मैंने अपने बचपन से बहुत कुछ लिया है। मैं एक बड़े चॉल वाले घर में पला-बढ़ा हूं। मेरे बहुत सारे अनुभव, यहां तक कि 35 वर्षों तक खुद को छिपाने और पूरी तरह से सामने न आने की शर्म, मैंने इस फिल्म में डाली है।

नीरज घेवाण

मुझे भी अपनी शर्म को उस तरह से सामने लाने में डर लग रहा था। उस लिहाज से, यह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से भी काफी राहत देने वाला था। मुझे यह फिल्म बनाने में डर लग रहा था कि इसका विरोध होगा। जब मैंने काम शुरू किया, तो एहसास हुआ कि इस फिल्म को देखने का तरीका यह होगा कि नारेबाजी, राजनीतिक दिखावे और उपदेश से दूर रहा जाए। दोस्ती का जरिया इतना शक्तिशाली है कि जब आप ऐसा करते हैं, तो यह विरोध का एक तरीका होता है। मुझे लगा कि इस पर कोई सवाल नहीं उठाएगा, क्योंकि सेंसर बोर्ड दोस्ती को कैसे सेंसर करेगा? मेरी फिल्म व्यवस्था-विरोधी नहीं है; यह इन्सानियत के लिए है। यह लोगों में हमदर्दी जगाने की एक विनम्र अपील भी है, और मुझे लगता है कि जिस तरह से दुनिया चल रही है, उसमें बहुत नफरत है। मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि हम अपने दुश्मनों के सामने बैठें और उन्हें हमदर्दी दिखाएं। सिनेमा को सिर्फ समाज का आईना नहीं होना चाहिए। इसे एक हथौड़ा होना चाहिए—आकार देने के लिए, सवाल उठाने के लिए, और जहां सहानुभूति नहीं है, वहां उसे बनाने के लिए। हमारी खाने की आदतें, धर्म और जाति, या विचारधारा अलग हो सकती है, लेकिन सबसे जरूरी है एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और इन्सानियत। ऐसा सिर्फ उनके लिए नहीं होना चाहिए, जो हमारे जैसे दिखते हैं या हमारे जैसी बात करते हैं, बल्कि उनके लिए भी होना चाहिए, जो हमसे अलग हैं। हमें इन्सानियत को कम नहीं समझना चाहिए।

यह सही समय है, क्योंकि हमारे पास ज्यादा फिल्में नहीं आई हैं, खासकर हाशिये पर पड़े लोगों की, जो अपने समुदाय के बारे में बात करती हों। (विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

मैं किसी देश या समुदाय की प्रगति को इस बात से मापता हूं कि महिलाओं ने कितनी प्रगति की है। -डॉ. बीआर आंबेडकर

सुधार का संकल्प घर से शुरू हो

चिंतन की वास्तविक क्रांति तभी धरातल पर उतर सकती है, जब सुधार का हर संकल्प पहले 'अपने घर से' शुरू हो। लोकतांत्रिक ढांचे में 'व्यक्तिगत इच्छा' सर्वोपरि तो होती है, लेकिन वह 'सामाजिक इच्छा' यानी राज्य की मर्यादाओं से बंधी होती है।

लोकतंत्र केवल नियमों या प्रशासनिक बदलावों का नाम नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के हृदय परिवर्तन की मांग करता है। इसकी नींव समाज में रचे-बसे उस 'भाईचारे' पर टिकी है, जो इसे महज एक राजनीतिक व्यवस्था से ऊपर उठाकर एक जीवंत मानवीय स्वरूप प्रदान करती है। वास्तव में, यह वह उत्कृष्ट कला व विज्ञान है, जो समाज के हर वर्ग के शारीरिक, आर्थिक और आध्यात्मिक संसाधनों को 'सर्वजन हिताय (सबकी भलाई)' के महान उद्देश्य के लिए एकजुट कर देता है।

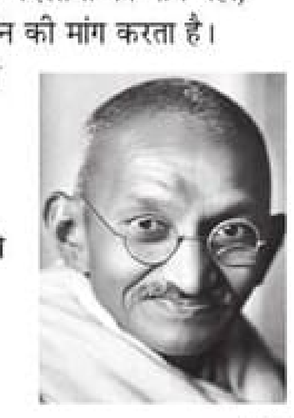

महात्मा गांधी

यही कारण है कि एक अनुशासित और प्रबुद्ध लोकतंत्र को दुनिया की सबसे सुंदर रचना माना जाता है। इसके विपरीत, यदि यही व्यवस्था पूर्वाग्रहों और अंधविश्वासों की जकड़न में फंस जाए, तो यह अराजकता की ओर बढ़ते हुए स्वयं के विनाश का मार्ग प्रशस्त कर लेती है। इस विनाश से बचने का एकमात्र मार्ग स्वतंत्र चिंतन है, जहां हर पुरुष और महिला को अपने विवेक से सोचना सिखाया जाता है। हालांकि, चिंतन की यह वास्तविक क्रांति तभी धरातल पर उतर सकती है, जब सुधार का हर संकल्प पहले 'अपने घर से' शुरू हो। लोकतांत्रिक ढांचे में 'व्यक्तिगत इच्छा' सर्वोपरि तो होती है, लेकिन वह 'सामाजिक इच्छा' यानी राज्य की मर्यादाओं से बंधी होती है। स्वतंत्रता की असली परीक्षा भी यही है कि एक व्यक्ति अपनी मर्जी का मालिक तब तक है, जब तक उसकी गतिविधियों से किसी दूसरे के जीवन या संपत्ति को कोई आंच न आए। इस मर्यादा को आत्मसात करने वाला व्यक्ति ही 'जन्मजात लोकतंत्रवादी' कहलाता है, क्योंकि वह नियमों और कानूनों का पालन किसी दबाव में नहीं, बल्कि अपनी सहज इच्छा से करता है।

जीवन धारा

लोकतंत्र का सच्चा सिपाही बनने की पहली शर्त 'निःस्वार्थ' होना है, क्योंकि यह पूरी व्यवस्था केवल आपसी 'विश्वास' के नाजुक धागों पर टिकी होती है। भारत के संदर्भ में देखें, तो इस लोकतांत्रिक भावना की सबसे बुनियादी इकाई हमारा 'गांव' है। लेकिन यहां एक गंभीर प्रश्न खड़ा होता है कि यदि बहुसंख्यक आबादी स्वार्थी और अविश्वसनीय हो जाए, तो 'पंचायत राज' का आदर्श भला कैसे सफल होगा?

जब मैंने अंतरिक्ष से भारत को देखा

अंतरिक्ष स्टेशन से हम जितनी बार भी भारत के ऊपर से गुजरे, हमने देखा शानदार हिमालय। खूबसूरत रंगों की वह लहर देख हम सभी मंत्रमुग्ध थे। मैंने सोचा यही है महान भारत। यही घर है मेरा।

सुनीता विलियम्स

भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री

भारत अद्भुत देश है! अंतरिक्ष से देखने पर यह अद्भुत दिखता है। अमेरिकी अंतरिक्ष स्टेशन से हम जितनी बार भी हिमालय के ऊपर से गुजरे, तो मेरे साथी अंतरिक्ष यात्रियों ने इसकी शानदार तस्वीरें लीं, जो बेहद अद्भुत हैं! अंतरिक्ष से दिखने वाले भारत के नजारे देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो जाती हूं-पश्चिम में मछली पकड़ने वाले बेड़ों से लेकर उत्तर में शानदार हिमालय तक, यह मेरे लिए घर जैसा ही है। मैंने पहले भी हिमालय को एक लहर की तरह बताया है, जो साफ तौर पर तब बनी, जब प्लेटें टकराईं और फिर, जैसे-जैसे यह भारत में नीचे आती है, इसके कई-कई रंग होते हैं। मुझे लगता है कि जब आप पूरब से गुजरात और मुंबई की तरफ जाते हैं, और (आप) वहां तट के पास मछली पकड़ने वाले जहाजों का बेड़ा देखते हैं, तो यह आपको एक तरह से इशारा देता है कि हम भारत आ गए हैं। मुझे लगता है कि पूरे भारत को लेकर मेरी धारणा यह थी कि यह रोशनी का एक नेटवर्क है, जो बड़े शहरों से लेकर छोटे शहरों तक फैला हुआ है, और रात एवं दिन में भी देखने में बहुत शानदार लगता है, खासकर हिमालय की वजह से, जो भारत में नीचे की ओर जाते हुए सबसे आगे है।

मुझे खुशी है कि मुझे भारत यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा लोगों के साथ अपने अनुभव साझा करने का अवसर मिल रहा है, क्योंकि यह एक महान देश है और एक शानदार लोकतंत्र है। मेरे पिता भारत में पैदा हुए थे, इसलिए अपने 'पिता के देश' की यात्रा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मैं बहुत दिन से इस यात्रा की उम्मीद कर रही थी। भारत अंतरिक्ष में अपने अंतरिक्षयान भेजने वाले देशों में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है और मैं इसका हिस्सा बनना चाहूंगी और भारत की मदद करना चाहूंगी। इस समय मुझे लगता है कि पूरी दुनिया में अंतरिक्ष की होड़ चल रही है। लोग इस पर चर्चा कर रहे हैं। हम चांद पर वापस जाना चाहते हैं, ताकि वहां काम करने के नियमों और तरीकों के बारे में बातचीत शुरू कर सकें, कि हम वास्तव में चांद पर कैसे काम करेंगे, खासतौर पर दूसरे देशों के साथ मिलकर । लेकिन यह भी सुनिश्चित करना है कि यह काम अंटार्कटिका की तरह ही उत्पादक और लोकतांत्रिक तरीके से हो। मेरा मतलब है, यह उसी तरह की चीज है।

मुझे लगता है कि जब आप अंतरिक्ष में जाते हैं, तो सबसे पहली चीजों में से एक जो आप करते हैं, वह यह कि हम सब अपना घर ढूंढना चाहते हैं, जैसे हमारा अपना घर। मैं मैसाचुसेट्स में पली-बढ़ी हूं। मेरे पिता भारत से हैं। मेरी मां स्लोवेनिया से हैं। इसलिए मैं जाहिर है कि उन जगहों को ढूंढ रही हूं, जिन्हें मैं अपना घर कह सकूं। मुझे लगता है कि हर कोई ऐसा करता है, या हो सकता है कि मैं गलत कह रही हूं। और यही आपका पहला मकसद है-इस ग्रह को एक ग्रह के तौर पर देखना। हमारा ग्रह जिंदा है।

कुछ लोगों को लगता है कि वहां सिर्फ चट्टानें हैं। लेकिन यह हिल रहा है। मैं वे खास हलचलें तो नहीं देख पाई, लेकिन मैं वातावरण को देख सकती थी। मैं पारस्परिक क्रिया को देख सकती थी। मैं मौसम देख सकती थी। मैं समुद्र के रंगों में बदलाव देख सकती थी, जैसे कि शैवाल के खिलने से, या उत्तरी गोलार्ध में या अंटार्कटिका के पास बर्फ बनने को देख सकती थी। आप यह सब देख सकते हैं। हवा और पानी जुड़े हुए हैं। और फिर आप खुद अपने बारे में सोचते हैं। मेरे लिए, यह ऐसा था, ओह, हे भगवान, मैं जितने भी लोगों को जानती हूं, वे सब वहां हैं। हर जानवर, हर पौधा, हम जो कुछ भी जानते हैं, वे सब वहां है। और हम सब इस एक चीज पर हैं, जिसे वे हमारे सौर मंडल में एक छोटा-सा अंतरिक्षयान कहते हैं। यह हमारे बीच किसी भी तरह के मतभेदों के बारे में सोच को बदल देता है। यह सच में आपको ऐसा महसूस कराता है कि हम सब एक हैं, और हम सभी को शायद थोड़ा और करीब तथा मिलकर काम करना चाहिए, क्योंकि मुझे लगता है कि मेरी सबसे बड़ी धारणा यह है कि लोग अच्छे होते हैं। लोग भले होते हैं। लेकिन हम जिंदगी की उलझनों में कभी-कभी यह भूल जाते हैं। क्योंकि हम इस या उस बात पर, धर्म, राजनीति, वगैरह-वगैरह पर बहस करने लगते हैं। लेकिन हम सब इन्सान हैं और हम एक-दूसरे की परवाह करते हैं। यह अंतरिक्ष में मेरी सीखी हुई सबसे बड़ी सीखों में से एक है।

(विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

एजुकेशन & कॅरिअर

जो कठिनाइयों से भागता है, सफलता हमेशा उससे दूर रहती है।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

यंत्र इंडिया लिमिटेड में आवेदन आमंत्रित

अप्रेंटिसशिप के लिए करें आवेदन

3979 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 03 मार्च, 2026
योग्यताएं : दसवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : recruit-gov.com

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड ■ 394 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए योग्य उम्मीदवार करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
10 फरवरी, 2026
आयु-सीमा
न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 24 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
apprenticeshipindia.gov.in

नाबार्ड में आवेदन आमंत्रित ■ 162 पद

डेवलपमेंट असिस्टेंट के पदों पर नौकरी के मौके
आवेदन की अंतिम तिथि
03 फरवरी, 2026
आयु-सीमा
न्यूनतम 21 वर्ष व अधिकतम 35 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
nabard.org

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड ■ 804 पद

प्रयोगशाला सहायक एवं कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 25 फरवरी, 2026
आयु-सीमा : न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 40 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : sso.rajasthan.gov.in

एचपीएससी ने जारी किया विज्ञापन ■ 50 पद

असिस्टेंट इंजीनियर के पदों पर निकली भर्ती
आवेदन की अंतिम तिथि
12 फरवरी, 2026
आयु-सीमा
न्यूनतम आयु 18 वर्ष व अधिकतम आयु 42 वर्ष
यहां आवेदन करें
hpsc.gov.in

केंद्रीय रेशम बोर्ड में रिक्तियां ■ 28 पद

साइंटिस्ट-बी के पदों पर रोजगार के अवसर
आवेदन की अंतिम तिथि
18 फरवरी, 2026
योग्यताएं
बैचलर डिग्री ऑफ इंजीनियरिंग व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
csb.gov.in

यहां भी रोजगार के अवसर ...

- हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, ओडिशा : वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी के पदों पर रिक्तियां।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 31 जनवरी, 2026
- hal-india.co.in
- ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, नई दिल्ली : उप महानिदेशक का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 31 जनवरी, 2026
- beeindia.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

आपके मन में कौन-सी भावनाएं प्रबल हैं

सोशल मीडिया के दौर में आप अपनी भाषा-बोली को लेकर झिझक तो महसूस नहीं करते?

डॉ. निशांत जैन
भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के सदस्य

फ्रांसीसी विचारक बर्क ने कभी लिखा था- "मुझे बता दीजिए कि युवाओं के मन में कौन-सी भावनाएं सर्वाधिक प्रबल हैं, मैं बता दूंगा कि आने वाली पीढ़ी का भविष्य कैसा होगा।" बुढ़ाती दुनिया में भारतीय गणतंत्र की तरुणाई को पूरी दुनिया हसरत भरी निगाहों से देख रही है। इंडस्ट्री, बाजार, मीडिया और अकादमिक जगत, ये सभी भारत के युवा मन की थाह लेने की पुरजोर कोशिश में हैं। हर ओर बस भारतीय युवाओं की चर्चा है और उनकी सोच को डिकोड करने का जतन जारी है।

■ **डिजिटल डिटॉक्स की ओर**
सर्वे बताते हैं कि भारतीय युवा खासकर जेन-जी अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बेहद सजग है। यह युवा अपनी सेहत के लिए गैर-हानिकारक विकल्प अपना रहा है। सोशल मीडिया के दीवानेपन के दौर में भी खुद की निजता बनाए रखने की समझ ही है कि आज का युवा स्क्रीन टाइम और स्क्रॉलिंग के व्यूह को तोड़कर 'डिजिटल डिटॉक्स' जैसी अवधारणाओं की ओर बढ़ रहा है। योग और आयुर्वेद के प्रति आकर्षण असाधारण तरीके से बढ़ा है। वीकेंड पर 'भजन क्लबिंग', ऑफिस ब्रेक में मेडिटेशन, तीर्थों की सोलो ट्रिप ब्लॉगिंग और अपने गांव, कस्बे, शहर की लोक कला की समझ जैसी प्रवृत्तियां, भारतीय युवाओं की सांस्कृतिक सजगता और परिपक्वता की एक नई कहानी गढ़ रही हैं।

■ **अपनी भाषा का आत्मविश्वास**
इस परिपक्वता का एक महत्वपूर्ण संकेत युवाओं की भाषा-संबंधी चेतना में भी दिखाई देता है। मातृभाषा में सोचने और अभिव्यक्त करने की आजादी को वह किसी झिझक के साथ नहीं, बल्कि वैचारिक स्वाभिमान व आत्मविश्वास के साथ अपनाता है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंटेंट, स्टार्टअप, पॉडकास्ट और रचनात्मक प्रयोग इस बदलाव के स्पष्ट संकेत हैं। भाषा के प्रति सजगता और सरोकार का आलम यह है कि अपनी भाषा और बोली को लेकर जो झिझक कभी मिलेनियल्स ने महसूस की होगी, वह जेन-जी के लिए एक समझ से बाहर की बात है।

■ **संस्कृति का सवाल**
संस्कृति के प्रश्न पर भी आज का युवा एक संतुलित दृष्टि के साथ खड़ा है। वह संस्कृति को बोझिल परंपरा नहीं, बल्कि निरंतरता के रूप में देखता है, उस पर गर्व करता है और भाषायी-सांस्कृतिक चेतना को जमीनी स्तर पर जीवंत बनाए रखता है। लोक संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति बढ़ती रुचि इस बात का प्रमाण है कि परंपरा और आधुनिकता के बीच टकराव नहीं, बल्कि संवाद संभव भी है और साध्य भी। वेद के मंत्र- 'आ नो भद्रा क्रतवो यंतु विश्वतः' और 'संगच्छध्वं संवदध्वं' भारतीय युवा चेतना के प्रेरक सूत्र बने रहेंगे, ऐसा विश्वास है।

फेलोशिप प्रोग्राम

आईएएसएच पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप 2026-27

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज (आईएएस ह्यूमैनिटीज) द्वारा आईएएसएच पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप 2026-27 के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह उन छात्रों के लिए है, जिन्होंने हाल ही में (2023-2026 के बीच) पीएचडी पूरी की हो। यह फेलोशिप पोस्ट-डॉक्टोरल शोधकर्ताओं को अपनी विशेषज्ञता और कौशल बढ़ाने का मौका देती है। आवेदन करने वाले उम्मीदवार पहले किसी विश्वविद्यालय में स्थायी पद पर नहीं होने चाहिए और आईएएस ह्यूमैनिटीज में फेलोशिप नहीं पाए हों। केवल कला, मानविकी या सामाजिक विज्ञान में शोध विषय वाले छात्र आवेदन कर सकते हैं। चयनित उम्मीदवार को 20,000 पाउंड तक छात्रवृत्ति और अन्य लाभ मिलेंगे। आवेदन करने की अंतिम तिथि 24 अप्रैल, 2026 निर्धारित की गई है। योग्य आवेदक आधिकारिक लिंक tinyurl.com/57a58cnk पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन आमंत्रित

हमदान इंटरनेशनल फोटोग्राफी अवॉर्ड-2026

हमदान इंटरनेशनल फोटोग्राफी अवॉर्ड (एचआईपीए)-2026 के लिए दुनिया भर के 18 वर्ष से अधिक आयु के युवाओं से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं।

■ **प्रतियोगिता की श्रेणियां**
इस प्रतियोगिता को परिवार, एआई के माध्यम से सपने, खेल फोटोग्राफी, पोर्टफोलियो (कहानी सुनाना) और जनरल (ब्लैक एंड व्हाइट तथा रंगीन) श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

■ **पुरस्कार**
इस प्रतियोगिता में विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को 20,000 डॉलर से लेकर 2,00,000 डॉलर तक की पुरस्कार राशि दी जाएगी। इसमें ग्रैंड प्राइज, फोटोग्राफर ऑफ द ईयर, कंटेंट क्रिएटर और फोटोग्राफी एप्रिसिएशन अवॉर्ड भी शामिल हैं।

■ **यहां आवेदन करें**
इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मई, 2026 निर्धारित की गई है। इच्छुक प्रतिभागी अपनी योग्यताओं की जांच करते हुए आधिकारिक लिंक hipa.ae/award/family-hipa-award-2026 पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट — हफ्ते की परीक्षाएं

एनटीए जेईई मेन परीक्षा

- **परीक्षा की तिथि :** 28-29 जनवरी, 2026
- परीक्षा तीन पेपर के लिए होगी। पेपर-I में गणित, भौतिकी व रसायन से 75 अंकों के प्रश्न, पेपर-2 ए में गणित, एप्टीट्यूड व ड्राइंग से 77 अंकों के प्रश्न व पेपर-2 बी में गणित, एप्टीट्यूड व प्लानिंग से 100 अंकों के प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक पेपर के लिए 3-3 घंटे का समय निर्धारित है।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** tinyurl.com/5x3defp3

बीपीएससी स्पेशल स्कूल टीचर परीक्षा (कक्षा 6-8)

- **परीक्षा की तिथि :** 29 जनवरी, 2026
- इस परीक्षा के भाग-I में भाषा (अंग्रेजी एवं हिंदी/उर्दू/बांग्ला) से व भाग-II में सामान्य जागरूकता आदि से व भाग-III में चयनित विषय से 150 अंकों के 150 प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षा की अवधि ढाई घंटे है।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** bpsconline.bihar.gov.in

खुद को परखें

1. भारत में, एशियाई उत्पादकता संगठन (एपीओ) राष्ट्रीय पुरस्कार का संचालन किस संगठन द्वारा किया जाता है?
   (a) नीति आयोग
   (b) राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद
   (c) भारतीय रिजर्व बैंक
   (d) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
2. भारत में किस राज्य में खारे पानी के मगरमच्छों की प्राकृतिक आवास में सबसे बड़ी आबादी पाई जाती है?
   (a) गुजरात (b) महाराष्ट्र
   (c) केरल (d) ओडिशा
3. आईएनएस सुदर्शनी का निर्माण किस शिपयार्ड ने किया था?
   (a) मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
   (b) कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड
   (c) गोवा शिपयार्ड लिमिटेड
   (d) हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड

उत्तर-1.b, 2.d, 3.c

सामान्य ज्ञान

एएससी अर्जुन

■ **क्या है**
यह इन्सानों जैसे हाव-भाव और क्षमता रखने वाला एक रोबोट है, जिसे स्टेशन पर विभिन्न कामों में इस्तेमाल किया जाएगा।

■ **चर्चा में क्यों**
हाल ही में, भारतीय रेलवे ने विशाखापत्तनम रेलवे स्टेशन पर 'एएससी अर्जुन' नाम का एक ह्यूमनॉइड रोबोट पेश किया है।

■ **विशेषताएं**
यह रोबोट भीड़ के समय आरपीएफ के साथ मिलकर स्टेशन पर काम करेगा। स्वदेशी तकनीक से बना यह रोबोट फेस रिकग्निशन, रियल-टाइम अलर्ट, बहुभाषी घोषणाएं और सेमी-ऑटोनॉमस नेविगेशन जैसी सुविधाओं से लैस है।

■ **24 घंटे करता कार्य**
यह रोबोट रेलवे प्लेटफॉर्म पर 24 घंटे गश्त और निगरानी कर सकता है, जिससे मैनपावर का बेहतर उपयोग हो सके। इसमें आग और धुएं का पता लगाने की सुविधा है और यह यात्रियों से संवाद कर जानकारी व मदद भी देता है।

रोशनी यहां है

इस बार : रामचंद्र अग्रवाल
क्यों : छोटी दुकान से शुरुआत कर बनाया हजारों करोड़ का कारोबार

एक समय छोटी-सी दुकान से कारोबार शुरू करने वाले रामचंद्र अग्रवाल ने पहले विशाल मेगा मार्ट की नींव रखी और बाद में परिस्थितियों के कारण इसे बेच दिया। इसके बाद उन्होंने वी2 रिटेल की शुरुआत की, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक खड़ा किया। आज वी2 रिटेल का बाजार पूंजीकरण लगभग 6,530 करोड़ रुपये है।

बैसाखियों पर काटी जिंदगी, जेब में उधार के पैसे, बनाया हजारों करोड़ का साम्राज्य

भारतीय रिटेल जगत में कुछ नाम ऐसे हैं, जो केवल ब्रांड नहीं, बल्कि संघर्ष और संकल्प की पहचान बन जाते हैं। विशाल मेगा मार्ट भी ऐसा ही एक नाम है, जिसने मध्यमवर्गीय परिवारों की रोजमर्रा की जरूरतों को किफायती दामों पर पूरा कर अपनी अलग पहचान बनाई। लेकिन इस चमकते ब्रांड के पीछे एक कहानी छिपी है। इस कहानी के नायक हैं रामचंद्र अग्रवाल। एक ऐसे उद्यमी, जिन्होंने न तो किसी बड़ी डिग्री का सहारा लिया और न ही किसी मजबूत आर्थिक या सामाजिक समर्थन का। महज चार साल की उम्र में पोलियो से प्रभावित होने के बावजूद रामचंद्र अग्रवाल ने अपने सपनों को कभी नहीं छोड़ा। बैसाखियों के सहारे चलते हुए उन्होंने एक छोटी गारमेंट शॉप से शुरुआत की और विशाल मेगा मार्ट जैसा बड़ा ब्रांड खड़ा किया। कुछ गलत फैसलों के कारण यह कारोबार बेचना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अपने अनुभव और हौसले से उन्होंने वी2 रिटेल की नई शुरुआत की, जो आज देशभर में 150 से अधिक स्टोर के साथ तेजी से बढ़ता रिटेल ब्रांड है। उनकी कहानी साबित करती है कि असफलता अंत नहीं, नई शुरुआत होती है।

बचपन में पोलियो ने रोकी चाल

रामचंद्र अग्रवाल का जन्म 1965 में कोलकाता के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। 650 वर्ग फीट के घर में उनके परिवार के 20 लोग रहते थे और घर की आर्थिक हालत कमजोर थी। कई बार घर का खर्च चलाना भी मुश्किल हो जाता था। चार साल की उम्र के बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई, जिससे वे जीवन भर के लिए विकलांग हो गए और उन्हें चलने के लिए बैसाखियों का सहारा लेना पड़ा। इसके बावजूद उनके भीतर कुछ अलग करने की चाह हमेशा बनी रही। 17 साल की उम्र से उन्होंने डायरी लिखनी शुरू की, जिसमें वे अपनी जिंदगी और समाज को बेहतर बनाने के सपने और योजनाएं लिखते थे। उन्हें समझ आ गया था कि इन सपनों को पूरा करने के लिए पैसे की जरूरत है। इसीलिए उन्होंने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया और अपने खर्च निकालने लगे। कॉमर्स में ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने लॉ कॉलेज में दाखिला लिया और साथ ही एक पार्ट-टाइम नौकरी भी की, जहां 300 रुपये महीने की सैलरी मिलती थी। जल्द ही उन्होंने नौकरी छोड़कर उधार लेकर फोटोकॉपी और सॉफ्ट ड्रिंक की दुकानें शुरू कीं। भले ही ये सफल न रहीं, लेकिन यहीं से उनके उद्यमी सफर की शुरुआत हुई।

बाजार में बनाई मजबूत साख

उन्होंने कोलकाता में छोटी रेडीमेड कपड़ों की दुकान विशाल गारमेंट्स से शुरुआत की और इसे 15 वर्षों तक सफलतापूर्वक चलाया। कुछ सालों में इसका नाम कोलकाता में लोकप्रिय होने लगा। उन्होंने स्थानीय व्यवसायों और दुकानों को कपड़े बेचकर बाजार में अपनी मजबूत साख बनाई। इसके बाद फैब्रिक के व्यवसाय में भी उन्हें असफलता का सामना करना पड़ा। रामचंद्र अग्रवाल ने महसूस कर लिया था कि आने वाले समय में मल्टीस्टोर्स का दौर आएगा, जहां राशन से लेकर कपड़े और सब्जी-भाजी, सब कुछ एक ही छत के नीचे उपलब्ध होगा। इसी सोच के साथ उन्होंने वर्ष 2001-02 में दिल्ली में विशाल मेगा मार्ट की शुरुआत की। उन्होंने खास ध्यान रखा कि कीमतें मिडिल क्लास और लोअर मिडिल क्लास के लिए किफायती हों।

जब बेचनी पड़ी कंपनी

2007-08 तक विशाल मेगा मार्ट के 18 राज्यों में 50 से ज्यादा स्टोर खुल चुके थे। उन्होंने अपनी खुद की मैन्युफैक्चरिंग भी शुरू की, यानी कपड़े अपनी फैक्टरी में बनाकर अपने ही स्टोर्स में बेचे, जिससे मुनाफा बढ़ने लगा। लेकिन तेजी से बढ़ाने की यह कोशिश उनके लिए भारी पड़ गई। एक के बाद एक स्टोर और फैक्टरियां खुलती गईं, जिसके लिए बाजार से बहुत ज्यादा कर्ज लेना पड़ा। इसी बीच वैश्विक मंदी आई और विशाल मेगा मार्ट भारी घाटे में चला गया। कंपनी को करीब 750 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। हालात इतने खराब हो गए कि रामचंद्र अग्रवाल को दिवालियापन के लिए आवेदन करना पड़ा। मजबूरी में उन्हें 'विशाल' ब्रांड, जिसकी कीमत करीब 2000 करोड़ रुपये मानी जाती थी, सिर्फ 70 करोड़ रुपये में श्रीराम ग्रुप और टीपीजी कैपिटल को बेचना पड़ा।

वी2 रिटेल के साथ वापसी

जब विशाल का कारोबार खत्म माना जा रहा था, तब रामचंद्र अग्रवाल ने बची पूंजी और 10 करोड़ रुपये के कर्ज से वी2 रिटेल लिमिटेड की शुरुआत की। पिछली गलतियों से सीख लेकर उन्होंने कारोबार को अनुशासित और आम ग्राहकों पर केंद्रित बनाया। आज वी2 रिटेल भारत के सबसे तेजी से बढ़ते रिटेल ब्रांड्स में से एक है। वी2 रिटेल अब एक सूचीबद्ध कंपनी है और 2025 तक इसका बाजार पूंजीकरण लगभग 6,530 करोड़ रुपये है। विशाल मेगा मार्ट को बेचने की मजबूरी के बावजूद, रामचंद्र अग्रवाल ने एक और सफल रिटेल चेन खड़ी करके अपनी व्यावसायिक समझ साबित की।

युवाओं को सीख

- शरीर की कमजोरी सपनों को नहीं रोक सकती, अगर इरादे मजबूत हों।
- असफलता अंत नहीं होती, बल्कि दोबारा खड़े होने का सबसे मजबूत आधार बनती है।
- छोटी शुरुआत भी बड़े इतिहास रच सकती है, जब मेहनत और धैर्य साथ हों।
- जो गिरने के बाद उठने का साहस रखता है, वही सच्चा विजेता होता है।

आज का दिन

26 जनवरी, 1950

भारत का संविधान लागू हुआ था। इसके बाद देश एक संप्रभु, लोकतांत्रिक और गणराज्य बन गया था। संविधान को तैयार करने में 2 साल, 11 महीने और 18 दिन का समय लगा था।

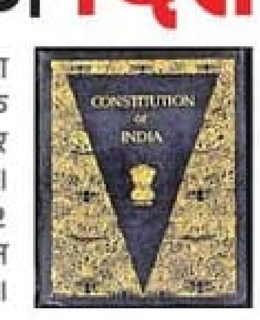

- **1837 :** मिशिगन संयुक्त राज्य अमेरिका का 26वां राज्य बना था।
- **1942 :** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यूरोप में पहला अमेरिकी अभियान बल आयरलैंड पहुंचा था।
- **1958 :** अमेरिकी हास्य कलाकार एलेन डीजेनेरेस का जन्म हुआ था।
- **2020 :** अमेरिकी बास्केटबॉल खिलाड़ी कोबे ब्रायंट का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी।
कल : शिशिर ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : दिन में 15.00 से 16.30 तक

■ सूर्योदय : 07.16
■ सूर्यास्त : 17.52
(भारतीय मानक समयानुसार)

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 07 माघ मास शक 1947, माघ मास 14 प्रविष्टे, 07 सावान हिजरी 1447, माघ शुक्ल पक्ष नवमी 19.05 तक उपरांत दशमी, भरणी नक्षत्र 11.08 तक उपरांत कृतिका नक्षत्र, शुक्ल योग 27.12 तक उपरांत ब्रह्म योग, बालव करण 08.11 तक उपरांत कौलव करण, चंद्रमा वृष राशि में 16.42 बजे।

राशिफल

amarujala.com/astrology
■ पं. विनोद त्यागी

मेष : आत्मबल बना रहेगा। प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। विकास की नई योजना बन सकती है।

वृष : पारिवारिक मामलों में सहनशीलता बनाए रखें। अचानक व्यय से परेशानी होगी। ऋण लेने से बचें।

मिथुन : दिनमान अनुकूल रहेगा। नई योजना बन सकती है। अटका कार्य बनेगा। अचानक यात्रा संभव है।

कर्क : मानसिक तनाव से बचें। सहोदरों से निराशा होगी। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। घर में शांति रखें।

सिंह : नई नौकरी का अवसर मिल सकता है। संतान से सुख मिलेगा। नई व्यावसायिक साझेदारी हो सकती है।

कन्या : कार्यक्षेत्र में व्यस्त रहेंगे। राजकाज में अनुकूलता रहेगी। मेहनत के चलते सेहत का ध्यान रखें।

तुला : सकारात्मक सोच बनाए रखें। नूतन संपर्क उन्नति में सहायक रहेंगे। आर्थिक स्थिति यथावत रहेगी।

वृश्चिक : आध्यात्मिक क्षेत्र में रुचि रहेगी। विरोधी पक्ष से पूर्ण सावधानी बरतें। परिवार में आनंद बना रहेगा।

धनु : पठन-पाठन में मन लगेगा। शुभचिंतकों से मेल मुलाकात हो सकती है। संतान पक्ष से कुछ चिंता रहेगी।

मकर : धैर्य बनाए रखें। संतान पक्ष से शुभ सूचना मिल सकती है। नई नौकरी का प्रस्ताव आ सकता है।

कुंभ : लोकप्रियता में वृद्धि होगी। मित्रों का समागम रहेगा। आमोद-प्रमोद के अवसर मिल सकते हैं।

मीन : अटके कार्य में सफलता मिल सकती है। आर्थिक लाभ हो सकता है। कला, साहित्य में रुचि बढ़ेगी।

जन्मदिन

रवि तेजा, अभिनेता

इस वर्ष मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। राजनीतिक संबंध सहायक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अनुकूल रहेगा। विकास के नए अवसर मिलेंगे। भू-संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। वर्ष मध्य में अविवाहितों के विवाह प्रस्ताव आ सकते हैं। उच्चस्तरीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

सुडोकू

1	6			8				
	4		6		3	2	1	
	9		1					6
		4	8	2	1			
7	8						2	5
			3	7	5	9		
8					7		6	
	7	1	9		8		3	
				1			9	7

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

1	6	2	7	8	4	3	5	9
5	4	7	6	9	3	2	1	8
3	9	8	1	5	2	7	4	6
9	5	4	8	2	1	6	7	3
7	8	3	4	6	9	1	2	5
2	1	6	3	7	5	9	8	4
8	2	9	5	3	7	4	6	1
6	7	1	9	4	8	5	3	2
4	3	5	2	1	6	8	9	7

डेली हेल्थ कैप्सूल

सेहतमंद है मिक्स वेजीटेबल सूप

मिक्स वेजीटेबल सूप का सेवन करने से शरीर को गरमाहट मिलती है। साथ ही इससे कमजोरी भी दूर होती है।

इन दिनों बाजार में तरह-तरह की सब्जियां मिलती हैं। आप गाजर, टमाटर, शिमला मिर्च और पालक का सूप बनाकर सेवन कर सकते हैं। इससे सेहत को कई लाभ मिलते हैं। इस सूप में विटामिन सी और ए भरपूर मात्रा में होता है, जो शरीर को गरमाहट देने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी मदद करते हैं। अक्सर ठंड

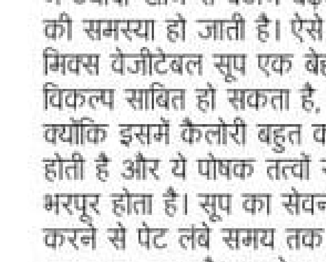

में ज्यादा खाने से वजन बढ़ने की समस्या हो जाती है। ऐसे में मिक्स वेजीटेबल सूप एक बेहतर विकल्प साबित हो सकता है, क्योंकि इसमें कैलोरी बहुत कम होती है और ये पोषक तत्वों से भरपूर होता है। सूप का सेवन करने से पेट लंबे समय तक भरा हुआ रहता है। इससे आप ओवरईटिंग करने से बचे रहते हैं। इससे वजन को कम करने और संतुलित रखने में भी मदद मिलती है। मिक्स वेजीटेबल सूप में विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर अधिक होते हैं। इससे पाचन तंत्र तंदुरुस्त रहता है। सूप का सेवन करने से शरीर को तुरंत ऊर्जा मिलती है। यह सूप पाचन से जुड़ी समस्याओं से राहत दिलाने में मददगार है। नियमित रूप से यह सूप पीने से गैस, कब्ज और अपच से बचाव होता है। इस सूप में कैल्शियम और मैग्नीशियम की भरपूर मात्रा होती है, जिससे हड्डियों को मजबूती मिलती है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

मिक्स वेजीटेबल सूप बनाते समय नमक और मक्खन की मात्रा कम ही रखें। इससे ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल के मरीजों को लाभ मिलेगा। लोगों को बाजार में मिलने वाले सूप का सेवन करने से बचना चाहिए।
-प्रीता जैन, आहार विशेषज्ञ

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

गणतंत्र की गरिमा

देश आज अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह अवसर है, अपने गौरवशाली अतीत के स्मरण का, स्वतंत्रता सेनानियों व संविधान रचयिता पूर्वजों के प्रति श्रद्धा जताने का और उन सभी कर्मयोगियों का आभार जताने का, जिन्होंने बीते 76 वर्षों में भारतीय गणराज्य को दुनिया की पहली कतार में पहुंचाने में अपना योगदान दिया है। यह सफर आसान नहीं रहा। एक गणतंत्र के रूप में हमने जब अपना पहला कदम बढ़ाया था, तब देश की आबादी करीब 36 करोड़ थी, आज यह 140 करोड़ से ऊपर है। तब सदियों के शोषण और दमन से मुक्त हुए देश ने लगभग शून्य से शुरुआत की थी। हमारे कर्णधारों के सामने 36 करोड़ लोगों को दो वक्त भरपेट भोजन मुहैया कराने की गंभीर चुनौती थी। देश बंगाल के दुर्भिक्ष को भूला न था। इसलिए सरकार ने अनाज के मामले में देश को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया। भाखड़ा-नांगल बांध जैसी कोशिशें शुरू हुईं और हमारे कर्मयोगी किसानों ने पहली पंचवर्षीय योजना से ही अनथक परिश्रम कर अगले कुछ दशकों में यह सफलता अर्जित कर ली। आज देश न सिर्फ 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज बांटने की स्थिति में है, बल्कि कई देशों को भी अन्न मुहैया करा रहा है।

भारतीय गणतंत्र की स्थापना के साथ राजनीतिक सत्ता सीधे जनता के हाथों में आ गई थी। तब से आज तक 18 बार जनता ने अपनी लोकप्रिय भारत सरकार चुनी है, मगर यह सवाल आज अपनी जगह कायम है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने शासकों और नागरिकों से जो अपेक्षाएं की थीं, क्या हम उन पर पूरी तरह खरे उतरे हैं? निस्संदेह, हम अपनी राजनीतिक स्थिरता, सत्ता के सफल हस्तांतरण, गरीबी उन्मूलन की दिशा में मिली सफलता पर गर्व कर सकते हैं, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई तरक्की पर भी कमोबेश संतोष जता सकते हैं, मगर हमारे संविधान निर्माताओं ने सबके लिए समान अवसर का जो सपना देखा था, उस दिशा में अब भी मंजिल दूर दिखती है। शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ धर्म व जाति के संकीर्ण दायरों के टूटने और एक समतामूलक समाज के निर्माण का जो सपना देखा गया था, आज 80 प्रतिशत साक्षर हो चुका भारत इसकी ठोस आश्वस्ति नहीं दे रहा। धर्म व जाति की गोलबंदियां ज्यादा मजबूत होती दिखती हैं।

हमारे गणतंत्र की कामयाबी में स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वायत्त निर्वाचन आयोग, जिम्मेदार विधायिका और आकाशधर्मा शिक्षा केंद्रों की मुख्य भूमिका रही है।

हमारे गणतंत्र की कामयाबी में इसकी संस्थाओं की महती भूमिका रही है। स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वायत्त निर्वाचन आयोग, जिम्मेदार विधायिका और आकाशधर्मा शिक्षा केंद्र दुनिया भर में भारतीय गणराज्य की कीर्ति के आधार-स्तंभ रहे। इसलिए जब कभी विधायिका ने अपनी सीमाओं का अतिक्रमण किया, न्यायपालिका ने उसे संविधान दिखाकर अपने कदम पीछे खींचने को बाध्य किया, जब न्यायपालिका की तरफ से ऐसी कोई सक्रियता दिखी, तो विधायिका ने उसे आईना दिखाने का काम किया। दुर्योग से, इन तमाम इदारों में 'गण' की आस्था कुछ कमजोर पड़ी है और यह भारतीय गणराज्य के लिए सुखद बात नहीं हो सकती। सबसे ज्यादा सवालों में तो इस समय देश का निर्वाचन आयोग है, जो गण के अधिकारों का प्रतिनिधि संगठन है। उसके 'मत के अधिकार' का संरक्षण इस संस्था की पहली पवित्र जिम्मेदारी है। सिर्फ चुनावों में मतदाताओं की भागीदारी गणराज्य को गौरवशाली नहीं बनाता, कमजोर से कमजोर मतदाता की संतुष्टि से वह महान बनता है। सुप्रीम कोर्ट का बार-बार हस्तक्षेप बताता है कि चुनाव आयोग को अपनी कार्यशैली पर गौर करने की दरकार है। भारतीय गणराज्य की गरिमा अक्षुण्ण रखने के लिए यह बहुत जरूरी है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 26 जनवरी, 1951

गणराज्य की वर्षगांठ

जनवरी 26 भारत के इतिहास में सुनहरा दिन है। इस दिन को हमने पहली बार सन् 1930 में मनाया था। उस दिन भारतीयों ने यह शपथ ली थी कि वे उस समय तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक अपने देश को पूर्ण स्वतंत्र, मुकम्मल आजाद नहीं कर लेंगे। यह दिन आता था और हमको अपनी शपथ को पूरा करने की नयी प्रेरणा देता था। आखिर हमारी शपथ पूरी हुई। हमने अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंका और देश को पूर्ण स्वतंत्र देखने का हमारा संकल्प सत्य हुआ। देश के लोगों ने अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा देश का संविधान तैयार किया और उसे इसी 26 जनवरी के ऐतिहासिक दिन को प्रचारित किया। उस दिन भारतीय गणराज्य अस्तित्व में आया, जो इस देश की पूर्ण स्वायत्तता का प्रतीक है। आज के दिन देश के इतिहास में नये अध्याय का आरम्भ हुआ है। मनुष्य के जीवन में विश्राम के लिए अवकाश कहां है? जब तक जीवन है तब तक उसे जूझना है। वह मृत्यु की गोद में ही विश्राम पाता है। किन्तु राष्ट्र का जीवन व्यक्ति के जीवन से इस अर्थ में भिन्न है कि उसका कहीं अन्त नहीं है; यह सदा आगे और आगे बहता चलता है। राष्ट्र ने पहले विदेशी राज को हटाने के लिए संघर्ष किया। अब उसे नव-निर्माण के लिए संघर्ष करना है और यह संघर्ष पहले की अपेक्षा कम कठिन नहीं है। संहार की अपेक्षा निर्माण हमेशा ही कठिन होता है। यह हमारे पौरुष को चुनौती देता है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि गणराज्य का प्रथम वर्ष हमारे लिए कठिनाइयों और विपत्तियों का वर्ष रहा है। अन्तरराष्ट्रीय जगत में तीसरे महायुद्ध के मेघ मंडराते रहे हैं। नया महायुद्ध संसार के लिए अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध होगा। पिछले दो महायुद्धों का अनुभव हमको बता रहा है कि युद्ध से कोई समस्या हल नहीं होती, बल्कि अनेक नयी समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। नेहरूजी ने यूरोप के तीन सप्ताह के दौरे से वापस लौटने के बाद राष्ट्र के नाम जो रेडियो-भाषण दिया है, उसमें वह कहते हैं, किसी भी व्यक्ति को यह नहीं समझना चाहिए कि युद्ध से उसका अथवा उसके देश का भला होगा। युद्ध से न केवल असीम विनाश होगा, बल्कि जो बच रहेंगे, उनकी आत्माओं को भी वह कलुषित कर देगा।' दुनिया को इस युद्ध की महाविपत्ति से बचाने के लिए भारतीय गणराज्य ने अपनी समस्त शक्ति से प्रयत्न किया है।

आदर्श गणराज्य की ओर बढ़ता भारत

मीरा कुमार | पूर्व लोकसभा अध्यक्ष

यहां स्कैन करें

इस दिन देश की राजधानी के कर्तव्य पथ पर पूरे विश्व की निगाहें टिकी रहती हैं। दुनिया जानना चाहती है कि भारत में कितनी तरक्की हुई है? इसने कितनी आर्थिक उन्नति की?

आज गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मैं सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करती हूं। उन्हीं की कुर्बानियों की वजह से आज हम भारत जैसे गौरवशाली गणतंत्र के नागरिक हैं। खुली हवा में सांस ले रहे हैं। निस्संदेह, हमारा गणतंत्र हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

आजादी के बाद हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था ने गणतंत्र की परिकल्पना की और उसे साकार रूप दिया। यह राजनीतिक व्यवस्था समता पर आधारित है। देश में जितने भी वयस्क हैं, उन्हें मत देने का बराबर का अधिकार हासिल है। चाहे वे धनवान हों या निर्धन, स्त्री हों या पुरुष, किसी भी जाति अथवा धर्म के हों, सबको एक वोट देने का अधिकार है।

इस राजनीतिक व्यवस्था में प्रत्येक स्तर पर चुनाव का प्रावधान है। पंचायत, विधानसभा, विधान परिषद, लोकसभा, राज्य सभा और राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद के लिए निर्वाचन की व्यवस्था है। हमारे आम चुनाव के समय समता का ऐसा विशाल और सुंदर दृश्य देखने को मिलता है, जैसा दुनिया में कहीं और नजर नहीं आता। विश्व के सभी देश अचरज करते हैं कि यह कैसे संभव होता है।

जनतंत्र तो बहुत से उन्नत और प्रगतिशील देशों में भी है। किंतु कई देशों में सर्वोच्च पद के लिए चुनाव की व्यवस्था नहीं है। या तो वहां राजशाही है या कोई अन्य व्यवस्था। कई ऐसे देश हैं, जहां एक ही दल का शासन है। कहने को वहां चुनाव होते हैं, लेकिन वहां अनेक दल नहीं हैं, जिनकी अलग-अलग विचारधाराएं हों और जनता उनमें से किसी एक का चयन कर सके।

भारत में ऐसा नहीं है। यहां विभिन्न विचारधाराओं को अपना राजनीतिक दल बनाकर चुनाव में खड़े होने का अवसर दिया जाता है और जनता को भी मौका मिलता है कि वह उनमें से किसी एक को चुने। यह एक अद्भुत व्यवस्था है। यह व्यवस्था देश के मतदाताओं की परिपक्व सोच पर विश्वास करती है।

हमारा जनतंत्र प्रगति-पथ पर अग्रसर है, किंतु दो बाधाएं मार्ग में हैं। उनको दूर करना आवश्यक है, नहीं तो रास्ता भटक जाने की आशंका है। अन्य संकट भी आ सकते हैं। उनसे अपनी अमूल्य जनतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा करने के लिए शीघ्र ही, तत्परता के साथ आवश्यक कार्रवाई करनी होगी।

हमारे गणतंत्र के बढ़ते कदमों को रोकने वाली सबसे बड़ी बाधा है- गरीबी। आंकड़े चाहे जो भी कहें, वास्तविकता यही है कि दुनिया में सबसे ज्यादा गरीबों की संख्या हमारे देश में है। इसलिए गरीबी से निपटना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह गरीबी हमारे जनतंत्र को खोखला कर रही है। चुनावों में गरीबों के वोट खरीद लेने से जनतंत्र की तो दुर्दशा हो ही जाती है, गरीब भी ठगे से रह जाते हैं। निस्संदेह, वे निर्धन हैं, मगर स्वाभिमानी भी हैं। उनके स्वाभिमान का सम्मान करते हुए उनकी गरीबी दूर करना हमारे जनतंत्र की प्रगति के लिए अनिवार्य है।

जनतंत्र के बढ़ते हुए कदमों को रोकने वाली और विकृत बेड़ी है- जाति व्यवस्था। 'जाति व्यवस्था और जनतंत्र साथ-साथ नहीं चल सकते।' यह मेरे पिता बाबू जगजीवन राम अक्सर कहते थे। जनतंत्र में लगा जातिवाद रूपी दीमक धीरे-धीरे इसे समाप्त कर देगा और यह केवल जनतंत्र का मुखौटा रह जाएगा। उसकी आत्मा नष्ट हो जाएगी। हमारे देश और समाज को इस पर गंभीरता से विचार कर कारगर कदम उठाना होगा।

गणतंत्र दिवस हमारे लिए हर्षोल्लास लेकर आता है। इस दिन देश की राजधानी के कर्तव्य पथ पर पूरे विश्व के देशों की निगाह रहती है कि भारत में कितनी तरक्की हुई है? इसने कितनी आर्थिक उन्नति की है? देश की रक्षा को सदृढ़ करने के लिए हमारे पास आयुधों और अस्त्र-शस्त्र का कैसा विपुल भंडार है? कर्तव्य पथ पर परेड करते और राष्ट्रपति को सलामी देते सेना के तीनों अंगों- थल सेना, वायु सेना और नौसेना के जांबाज रणबांकुरों पर भारत की जनता का मस्तक गर्व से ऊंचा उठ जाता है। स्कूली छात्र-छात्राएं जब *सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा...* गाती हैं और कदम से कदम मिलाती मार्च करती हैं, तब लगता है कि हमारे देश के क्षितिज से नई सुबह की सुनहरी किरण धरती पर उतर आई है। *जय हिंद* का उद्घोष, राष्ट्रगान में समाहित देशभक्ति और देश के लिए सर्वस्व त्यागने का भाव, 21 तोपों की गगनभेदी सलामी, आकाश में तिरंगे के रंगों को लहराते, तरह-तरह की कलाबाजियां दिखाते वायु सेना के हवाई जहाज और उनके निर्भीक पायलट- ये सब वहां उपस्थित दर्शकों को तो रोमांचित करते ही हैं, टेलीविजन के करोड़ों दर्शकों को भी गौरवान्वित कर देते हैं।

मुझे गर्व है कि मेरे माता-पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। बाबूजी ने लंबे अरसे तक अंग्रेजों की जेल की यातना सही। वह केंद्र में कैबिनेट मंत्री थे, जब 26 जनवरी, 1950 को देश ने पहला गणतंत्र दिवस मनाया। पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद पद की शपथ लेने के बाद इंडिया गेट के पीछे नेशनल स्टेडियम में गणतंत्र समारोह में सलामी लेने आए। मैं उस समय बहुत छोटी थी, परंतु मां-बाबूजी के साथ उस गणतंत्र समारोह में शामिल होने की यादें आज भी हैं। उसके बाद मैं हर साल बाबूजी और मां के साथ गणतंत्र दिवस की परेड देखने जाती थी। अगली पंक्ति में उनके साथ बैठती थी या बच्चों के लिए सामने बिछी कालीन पर। खूब तालियां बजाती थी।

हर वर्ष इंडिया गेट के राजमार्ग किंग्सवे, जो बाद में राजपथ कहलाया और अब कर्तव्य पथ कहलाता है, पर परेड होती है। 1972 की 26 जनवरी विजय चौक पर मनाई गई। यह विशेष आयोजन था, जो मेरे बाबूजी ने रक्षा मंत्री के रूप में करवाया था। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अभूतपूर्व विजय मिलने के उपलक्ष्य में यह गणतंत्र समारोह विशेष था। मां-बाबूजी के नहीं रहने पर भी मैं गणतंत्र समारोह में जाती रही हूं- केंद्रीय कैबिनेट मंत्री या लोकसभा अध्यक्ष के रूप में।

गणतंत्र दिवस प्रतिवर्ष यही संदेश देता है कि हम एक महान देश के वासी हैं। प्रेम और सद्भाव से आगे बढ़ना हमारा ध्येय है। जय हिंद!

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

गांव-गांव घूमकर भारत को समझते रहे मार्क टली

राजेश प्रियदर्शी | वरिष्ठ संपादक, बीबीसी

यहां स्कैन करें

भारत में *बीबीसी* की पहचान रहे सर मार्क टली का जाना दुखद है। *बीबीसी* परिवार के लिए तो मानो पितामह के गुजर जाने जैसा है। मेरी खुशकिस्मती है कि उनसे कई बार मिलने और बातें करने का अवसर मिला, लेकिन हमसे पहले वाली पीढ़ी ज्यादा खुशकिस्मत थी, जिसने उनको और ज्यादा करीब से, उनकी सक्रियता वाले दौर में देखा।

मार्क टली पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे, लेकिन कुछ महीनों पहले तक *हिन्दुस्तान टाइम्स* में उनका कॉलम देखकर यह आश्वस्ति होती थी कि वह ठीक हैं। उनसे सीखने लायक अनेक बातों में से एक बात तो यही थी कि मार्क टली हर किसी से, हर समय सीखते रहते थे। भारत के समाज और राजनीति की उनकी समझ बहुत गहरी थी, लेकिन वह अक्सर अपने वाक्य की शुरुआत कुछ यूं करते, 'मुझे तो ज्यादा मालूम नहीं, आप बताइए कि...।' जिन बातों की उन्हें पक्की जानकारी होती थी, उनके बारे में भी वह यही कहते थे, 'जहां तक मुझे मालूम है...।'

मुझसे कई बार वह झारखंड के बारे में पूछते थे। मार्क टली से बात करते हुए डर कभी नहीं लगा, क्योंकि उनके व्यक्तित्व में ज्ञान के आतंक की जगह विनम्र विद्वता की आभा थी, लेकिन इस बात का एहसास मुझे हमेशा रहता था कि वह संथालों और मुंडाओं के बारे में उतना ही जानते थे, जितना उत्तर प्रदेश के निषादों और बिहार के मुसहरों के बारे में या फिर केरल के पानियन या मुथुवन लोगों के बारे में। उनकी किताब *नो फुल स्टॉप इन इंडिया* हर उस व्यक्ति को पढ़नी चाहिए, जो भारत को गहरे समझना चाहता है। वह सबसे पहले अच्छी तरह यही समझाते हैं कि भारत समझ में क्यों नहीं आता? टली ने एक ब्रितानी अर्थशास्त्री के हवाले से कहीं लिखा था- 'भारत के बारे में जो आप सच कह सकते हैं, उसके ठीक विपरीत बात भी सच होती है।'

तकरीबन 90 साल पहले ब्रिटिश शासन के दौरान जन्मे मार्क टली हर तरह से एक खांटी हिन्दुस्तानी थे। ज्यादातर समय खादी के कुरते और सैंडल पहनने वाले टली साहब लंबे समय तक दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में रहे और धूप में घूमते रहने के कारण उनका गोरा रंग एक उम्र के बाद लगभग तांबई हो गया था। कोई अनजान आदमी उन्हें देखकर एकबारगी यह नहीं कह सकता था कि वह अंग्रेज हैं।

कई दशकों तक भारत और दक्षिण एशिया की ऐतिहासिक घटनाओं पर शानदार पत्रकारिता करने वाले मार्क टली को आपातकाल के दौरान उनकी रिपोर्टिंग के कारण कुछ समय के लिए यहां से निकाल दिया गया था। वह लगातार निडर, लेकिन संतुलित पत्रकारिता करते रहे। मेरे *बीबीसी* पहुंचने से तीन साल पहले ही1994 में उन्होंने इस संस्थान से इस्तीफा दे दिया, लेकिन वह लगातार सक्रिय बने रहे। मार्क टली ने कोई दस किताबें लिखी हैं, जो बहुत ही दिलचस्प और पठनीय हैं।

जैसी लोकप्रियता उन्हें मिली, वह शायद ही किसी और पत्रकार को मिले, पर उन्होंने खुद को सेलिब्रिटी होने की संभावना से हमेशा दूर रखा। स्मृति शेष :

मेरी उनसे पहली लंबी बातचीत सन् 2001 के कुंभ मेले के दौरान हुई थी। तब उन्होंने बहुत विस्तार और गहराई से समझाया कि विदेशी लोग कुंभ मेले में क्यों खिंचे चले आते हैं? किसी भी विषय पर मार्क टली से बात करने का मतलब समझ की एक नई खिड़की का खुलना होता था। उन्होंने भारत को गांव-गांव घूमकर समझा था। वह हमेशा ऐसे लोगों के बीच रहना चाहते थे, जो उनको 'फर्स्ट हैंड' जानकारी दें। वह दिल्ली में संपादकों और बड़े पत्रकारों से जानकारी लेने में कम ही यकीन रखते थे।

एक और बात, जो उन्हें विलक्षण बनाती थी, वह थी सहृदयता। मैंने कभी मार्क टली के मन में किसी के प्रति कटुता या दुराव का भाव नहीं देखा। उनको पसंद करने वालों की संख्या लाखों में थी, क्योंकि उन्हें नापसंद करने का कोई वास्तविक कारण खोजना मुश्किल काम था। मार्क टली को जैसी लोकप्रियता और प्रतिष्ठा मिली, वह शायद ही किसी और पत्रकार को नसीब हो, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने व्यक्तित्व को सेलिब्रिटी होने की सहज संभावना से दूर रखा।

मार्क टली से हर मुलाकात के बाद यह विस्मय रह जाता था कि वह इतने अद्भुत कैसे हैं? एक ऋषि जैसा जीवन जीकर विदा हुए सर मार्क टली को श्रद्धांजलि!

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

अधूरी इच्छाओं को जी लें

कहते हैं, सास भी कभी बहू थी, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि वह बहू कभी एक लड़की भी थी- आजाद, स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाली। अपना व्यक्तित्व था जिसका, रंगीन सपने थे जिसके। शादी होते ही वह एक पत्नी, मां और सास की भूमिका में आ जाती है और अपना वजूद भूल जाती है। उसे फिर से जीने का एक बेहतरीन समय है, जब उसके बेटे का ब्याह हो जाता है। वह हर स्त्री के जीवन में एक नया मोड़ हो सकता है।

बेटे का विवाह होते ही परिवार में एक नया सत्ता-केंद्र तैयार हो जाता है। जो बेटा अब तक आज्ञाकारी प्रजा का हिस्सा था, वह पत्नी के आते ही एक सत्ताधीश बनता है और स्वायत्तता चाहता है। इस परिवर्तन को माता-पिता समझ नहीं पाते और न ही वे उसके लिए तैयार होते हैं। वे सोचते हैं कि इस घटना की जिम्मेदार उनकी बहू है। मां पच्चीस साल मेहनत करके बेटे को काबिल बनाती है और एक अनजान लड़की आकर पच्चीस मिनट में उसे अपने वश में कर लेती है। मां के पल्लू से झूलने वाला बेटा अब पत्नी के आंचल में उलझ जाता है।

मां यह कभी समझ ही नहीं पाती कि इसमें दोष उस लड़की का नहीं, बल्कि बेटे की काम ऊर्जा का है। इसको आप दोष भी नहीं कह सकते, क्योंकि उसी की तृप्ति के लिए तो शादी कराई जाती है, फिर शिकायत कैसी? विवाह, बेटे का रूपांतर है पति के रूप में। कोई मां अपने बेटे की सेक्सुअलिटी को समझ ही नहीं पाती। भारतीय परिवारों में दमन इतना ज्यादा है कि बेटे का वह पहलू मां के आगे उजागर नहीं हो सकता। अतः मां के सामने बेटे का एक चेहरा होता है और पत्नी के सामने बिल्कुल दूसरा। इन दो चेहरों के बीच कोई तालमेल नहीं होता। संघर्ष यहीं से शुरू होता है।

दूसरी बात, मां की बेटे पर अत्यधिक पकड़ होती है। बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया, इसका यह मतलब यह तो नहीं कि आप उसकी आत्मा के मालिक हो गए। यदि सास-बहू की विभीषिका से बचना हो, तो कुछ उपाय करने होंगे। एक तो शुभ यही होगा कि बेटे के विवाह से पहले मां को प्रशिक्षण दिया जाए कि सास कैसे बना जाए। यह एक नया किरदार है, जिसके लिए वह प्रशिक्षित नहीं है।

विवाह के बाद बेटे से मुक्त हो जाएं मां और अपना जीवन जिएं। याद करें वह दौर, जब वे एक स्वतंत्र लड़की थीं, खुद को विकसित करना चाहती थीं। वह लड़की अब भी उनके भीतर बैठी है।

उस प्रशिक्षण का एक हिस्सा यह भी हो कि अब वह बेटे से मुक्त हो जाए और अपना जीवन जिए। याद करे वह दौर, जब वह एक स्वतंत्र लड़की थी, खुद को विकसित करना चाहती थी। वह लड़की अब भी उसके भीतर बैठी इंतजार कर रही है। वह उससे दोस्ती कर ले, उसे अपनाए और अधूरी इच्छाएं पूरी करने के बारे में सोचे। वह परिवार के लिए उपलब्ध तो होगी, लेकिन साथ में अपना विकास भी करेगी। जब घर का हर सदस्य आनंदित और संतुष्ट होगा, तब पूरा परिवार जगमगा उठेगा।

अमृत साधना

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

दुनिया भर में नस्लवाद, राष्ट्रवादी विद्वेष और धार्मिक कट्टरता के बोझ तले समाज के टूटने का खतरा है। हमें ऐसे समाज बनाने चाहिए, जहां हर किसी की पहचान का सम्मान हो और सभी साझा नागरिक मूल्यों से बंधे हों।

अनुलोम-विलोम
गणतंत्र दिवस

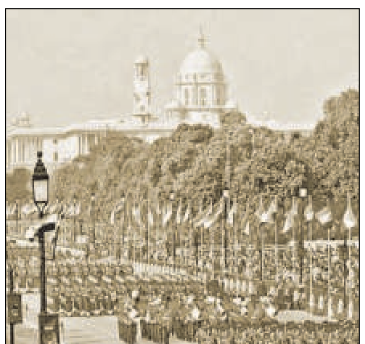

अतीत का सम्मान, भविष्य की दृष्टि

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस प्रत्येक भारतीय के दिल में गर्व, सम्मान और राष्ट्रीय एकता की अमर ज्योति जलाते हैं। यह दिन केवल हमारे गणराज्य की स्थापना का उत्सव नहीं है, बल्कि लोकतंत्र के आदर्शों, हमारी संस्कृति और भारतीयता की अनंत भावना का विशाल महोत्सव है। ये दिवस हमारे गौरवशाली इतिहास का अभिवादन करते हुए हमें स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करते है। ये दिन हमें याद दिलाते हैं कि भारत की ताकत उसकी विविधता में है, जिसका हर राज्य, हर क्षेत्र, हर समुदाय अपनी अनोखी पहचान और संस्कृति लिए हुए है। हमारे पूर्वजों ने जो संस्कृति और परंपराएं सौंपी हैं, उन्हें संरक्षित करना और आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर पिछले एक साल के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में अपना पराक्रम और शौर्य दिखाने वाले सैन्य जवानों और नागरिकों को भी सम्मानित किया जाता है। इसके पीछे भावना यह रहती है कि लोग इनसे प्रेरणा लें और देश को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

'स्वर्णिम भारत' की बात केवल विरासत तक सीमित नहीं है, यह विकास की बात भी करती है। हमारे सामने एक ऐसे भारत का निर्माण करने का लक्ष्य है, जहां इसके हरेक नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के समान अवसर मिलें। यह विकास का वह मार्ग है, जो हमें एक समावेशी, टिकाऊ और न्यायपूर्ण समाज की ओर ले जाता है। जब राजपथ (अब कर्तव्य पथ) पर अनुशासनबद्ध कदमताल करती हमारी सैन्य परेड प्रारंभ होती है, तब यह केवल भारत की सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं होती, बल्कि हमारे सैनिकों के अदम्य साहस व अटूट संकल्प का जीवंत उदाहरण भी होती है यह परेड। यह दृश्य भारत की राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनकर हर हृदय को गर्व और प्रेरणा से भर देता है। विभिन्न राज्यों की झांकियां हमारी सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध विरासत का अद्भुत चित्रण करती हैं, जो ये सिखाती हैं कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में निहित है। क्या यह भव्यता हमारे समाज की सच्चाई को भी प्रतिबिंबित करती है? क्या संविधान में लिखी स्वतंत्रता और समता जैसी बातें हमारे जीवन में भी साकार होती हैं, या वे केवल किताब तक सीमित हैं?

गणतंत्र दिवस का असली अर्थ सिर्फ परेड और उत्सव तक सीमित नहीं है, यह हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, पर क्या वास्तव में हमारे नागरिकों को लोकतांत्रिक मूल्यों को जीने का अवसर मिलता है? लोकतंत्र को हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा होना चाहिए।

आरके जैन अरिजीत, टिप्पणीकार

सुपात्रों की पहचान स्वयं समाज करे

गणतंत्र दिवस के मौके पर एक बार फिर पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई। यद्यपि सरकार के सत्प्रयासों से योग्य पात्रों के चयन में पारदर्शिता आई है, तथापि सरकार के साथ-साथ समाज की भी जिम्मेदारी बनती है कि ये पुरस्कार सुपात्रों के मस्तक की ही मणि बनें। पिछले कुछ वर्षों के नाम आम आदमी को प्रेरित, आह्लादित करते हैं, जन-सामान्य को ऐसे व्यक्तियों की खोज, मूल्यांकन और नामांकन कराने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। जो लोग किसी दिखावे के लिए, आडंबरवश या निहित स्वार्थ के कारण नहीं, बल्कि आत्मानंद या परमार्थवश समाज-कल्याण के कार्यों में जुटे हैं, उन्हें ही ये सम्मान मिलने चाहिए। ऐसे लोग इन कार्यों का बीड़ा किसी जुनून, किसी घटना से प्रेरित होकर उठा लेते हैं व उन्हें इस बात का बिल्कुल गुमां नहीं होता कि उन्होंने समाज या राष्ट्रहित में कितना बड़ा योगदान दे दिया है! आज सोशल मीडिया के प्रचार-प्रसार के बाद हालांकि स्व-प्रदर्शन की होड़ सी लग गई है, मगर ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नहीं, जो प्रचार से दूर अपनी सेवा में तन्मयता से लगे हैं। ऐसे दशरथ मांझियों और वृक्ष-माताओं को खोजने का दायित्व हमारा है। ये हमारे सच्चे प्रेरणा-स्रोत हैं, आदर्श हैं। समाज को इन 'गरूड़ों' को पद्म पुरस्कारों वाले नीलगगन तक पहुंचाने में सहायता करनी चाहिए, ताकि कोई 'कपोत' इन्हें इस सम्मान से वंचित न कर दे।

मनोज कुमार शर्मा, टिप्पणीकार

हमारे देश को आजाद कराने के लिए बहुत सारे देशभक्तों ने अपना सब कुछ, यहां तक कि अपनी जान भी हंसते-हंसते कुर्बान कर दी थी। इसलिए हमें अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की अब ऐसी मजबूत नींव रखनी चाहिए कि हमारी स्वतंत्रता के लिए कभी कोई खतरा न पैदा हो सके।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अंग्रेजों के दांत खट्टे करने के लिए 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' की जैसी ललकार दी थी; सरदार भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और अन्य नौजवान क्रांतिकारियों ने अपनी खेलने-कूदने की उम्र में जिस तरह अपने अंदर देशभक्ति की भावना भरी, क्या आज ऐसा हो रहा है? नहीं! अगर ऐसा होता, तो आजादी के इतने वर्षों बाद हमारा देश इतनी सारी समस्याओं से घिरा न होता, देश के राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में इतने दोष न आए होते, अमीरी-गरीबी की खाई यूं न बढ़ती, युवा वर्ग नशे की राह पर न चलता। यह बेहद अफसोस और शर्म की बात है कि जिन्हें आजादी की पकी-पकाई खीर मिली है, चाहे वे राजनेता हों या फिर आम जनता, वे संविधान बनाने वालों का उपहास उड़ाते हैं, उनमें कमियां निकालने में जुटे रहते हैं।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

गणतंत्र दिवस विशेष

गणतंत्र दिवस हमें संविधान की शक्ति की याद दिलाता है। हमारा संविधान न केवल हमें वोट का अधिकार देता है, बल्कि डिजिटल युग में सुरक्षित रहने और न्याय पाने का अधिकार भी सुनिश्चित करता है। आज जब साइबर ठगी एक बड़ी चुनौती है, तब हमारे डिजिटल अधिकार ही हमारी सबसे बड़ी ढाल हैं। आज गणतंत्र दिवस पर हम उन लोगों की कहानी आपके सामने रख रहे हैं जिन्होंने ठगी के बाद भी हार नहीं मानी। उन्होंने घबराने के बजाय संविधान प्रदत्त अधिकारों का उपयोग किया। सजग नागरिक और सक्रिय सिस्टम का तालमेल ही हमारे गणतंत्र की असली ताकत है। आइए, इस गणतंत्र दिवस पर हम अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहकर साइबर अपराध को मात देने का संकल्प लें।

अधिकारों के प्रति सतर्क रहकर साइबर ठगी से जंग

तत्काल शिकायत कर चार लाख वापस करवा लिए

नोएडा

नोएडा के सेक्टर-76 में रहनेवाले 35 साल के गोपाल उपाध्याय के मोबाइल पर ट्रैफिक चालान से जुड़ा एक मैसेज आया। बार-बार संदेश मिलने पर उन्हें लगा कि शायद उनसे अनजाने में कोई गलती हो गई है। इसी भ्रम में उन्होंने मैसेज पर प्रतिक्रिया दी।

इसके बाद उन्हें एक लिंक भेजा गया, जिसका डिजाइन बिल्कुल असली सरकारी वेबसाइट जैसा था। लिंक खोलने पर 500 रुपये का चालान भरने का विकल्प दिखा और चेतावनी दी गई कि भुगतान नहीं करने पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है। जैसे ही गोपाल भुगतान की प्रक्रिया में आगे बढ़े, उनके मोबाइल पर ओटीपी आया, जो ऑटो-फिल हो गया। इसी दौरान उनके खाते से तीन लाख रुपये निकल गए। थोड़ी देर बाद दोबारा प्रक्रिया कराने के नाम पर एक लाख रुपये और निकाल लिए गए। जब खाते से रकम निकलने का मैसेज आया, तो गोपाल को ठगी का अहसास हुआ। उन्होंने बिना एक पल गंवाए अपने डिजिटल अधिकारों का इस्तेमाल किया।

साइबर हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई: तुरंत बैंक अधिकारियों और कस्टमर केयर से संपर्क कर कार्ड ब्लॉक कराया, साइबर हेल्पलाइन पर कॉल की, साइबर क्राइम पोर्टल पर शिकायत दर्ज की और नजदीकी थाने पहुंचकर पूरे मामले की जानकारी दी।

इस कार्रवाई का फायदा यह हुआ कि बैंक और पुलिस ने मिलकर ठगी की पूरी रकम को समय रहते फ्रीज करा दिया। कुछ ही घंटों में यह पता लगा लिया गया कि ठगी की रकम किन खातों में ट्रांसफर हुई है।

अधिकारों का प्रयोग कर ठगी से कैसे बचें

- ओटीपी, पिन, पासवर्ड साझा न करें
- स्क्रीन शेयरिंग ऐप डाउनलोड न करें
- अचानक बड़ी रकम निकालने का दबाव आए तो रुकें
- बैंक को तुरंत अलर्ट करें
- 1930 पर तुरंत शिकायत दर्ज करें
- एनसीआरपा पोर्टल cybercrime.gov.in पर ऑनलाइन शिकायत करें
- परिवार या भरोसेमंद व्यक्ति को तुरंत बताएं

साइबर ठगी की दर्ज शिकायतें (2022–2025)

वर्ष	कुल शिकायतें (लाख में)
2022	10.29
2023	24
2024	36.37

- 2025 (जन–फरवरी) : 36.45 लाख
- दैनिक औसत : 18,000 से अधिक शिकायतें

कुल नुकसान : 22,845 करोड़

सोर्स : एनसीआरपी

क्रेडिट कार्ड के जरिए निकले रुपये मिले

बिहार

कैमूर में युवक को साइबर ठगी के मामले में डिजिटल अधिकार का लाभ मिला है। साइबर अपराध पुलिस की मदद से क्रेडिट कार्ड से अवैध रूप से निकाली गई राशि में से 80 हजार रुपये युवक को वापस मिल गए।

पीड़ित आशुतोष पांडेय ने बताया कि उनके एक्सिस बैंक क्रेडिट कार्ड से 81 हजार 454 रुपये की निकासी कर ली गई, जबकि क्रेडिट कार्ड उस समय उनकी जेब में था। शाम करीब 6:30 बजे मोबाइल पर मैसेज आने के बाद उन्हें ठगी की जानकारी हुई। उन्होंने बिना देरी किए उसी दिन शाम सात बजे राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराई थी।

पुराने ट्रांजैक्शन की रकम भी वापस मिली

गाजियाबाद

गाजियाबाद: साइबर अपराध के बीच यह धारणा आम है कि एक बार पैसा निकल गया तो उसकी वापसी लगभग नामुमकिन है। हालांकि गाजियाबाद के दो मामलों ने इस सोच को गलत साबित कर दिया है। पीड़ितों ने अपने डिजिटल अधिकारों का सही समय पर इस्तेमाल किया, जिससे न सिर्फ ठगी की पहचान हुई, बल्कि तीन दिन से अधिक पुरानी ट्रांजैक्शन की रकम भी वापस मिल गई। इन दोनों मामलों में पीड़ितों को 50 से 80 लाख रुपये तक की राहत मिली है।

वसुंधरा सेक्टर-9 निवासी श्याम प्रताप सिंह को जालसाजों ने पहले व्हाट्सएप पर संपर्क किया और फिर एक ग्रुप में जोड़ दिया। ग्रुप में शेयर ट्रेडिंग के नाम पर कुछ ही घंटों में 40 फीसदी तक रिटर्न मिलने के दावे किए जा रहे थे। ग्रुप में शामिल लोग मुनाफे के स्क्रीनशॉट और संदेश साझा कर रहे थे। इसी झांसे में आकर श्याम ने करीब डेढ़ माह के दौरान अलग-अलग खातों में 80.50 लाख रुपये जमा करा दिए।

जब उन्हें ठगी का अंदेशा हुआ, तो उन्होंने बिना देरी किए पुलिस से संपर्क किया और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई।

मैनेजर ने डिजिटल अरेस्ट से बचाया

गुरुग्राम

गुरुग्राम पुलिस और बैंकिंग तंत्र के बेहतर समन्वय ने एक बड़ी ठगी की वारदात को समय रहते नाकाम कर दिया। एक्सिस बैंक के रिलेशनशिप मैनेजर की सतर्कता से न सिर्फ एक वरिष्ठ नागरिक के 64 लाख रुपये सुरक्षित रहे, बल्कि ठगों की ओर से रची गई करीब छह करोड़ रुपये की डिजिटल अरेस्ट की साजिश भी विफल हो गई।

ठगों ने वीडियो कॉल के जरिए बुजुर्ग को तथाकथित तौर पर 'डिजिटल अरेस्ट' में रखा। बुजुर्ग से करीब 5.90 करोड़ रुपये के म्यूचुअल फंड भुनाने की प्रक्रिया शुरू करवाई और 64 लाख रुपये बैंक खातों में ट्रांसफर करा लिए। एक्सिस बैंक में रिलेशनशिप मैनेजर मीत ने जब अपने पुराने ग्राहक के खाते से अचानक बड़ी रकम ट्रांसफर होते देखी, तो उन्हें संदेह हुआ।

अपराध पूर्व सुरक्षा तंत्र जरूरी, मिलकर प्रयास करना होगा

विशेषज्ञ की राय
विवान शरण
सेफर इंटरनेट इंडिया

आज के डिजिटल युग में, मैं सुरक्षा को केवल एक एंटी-वायरस या मजबूत पासवर्ड तक सीमित नहीं मानता। मेरी नजर में ऑनलाइन सुरक्षा एक बहुस्तरीय सुरक्षा कवच है। इसमें आपका नेटवर्क, आपका डिवाइस और वह प्लेटफॉर्म जिस पर आप काम कर रहे हैं, ये तीनों आपस में जुड़े हुए हैं। यदि इनमें से एक भी कड़ी कमजोर हुई, तो पूरा तंत्र ध्वस्त हो सकता है। इसलिए, उपयोगकर्ता, प्लेटफॉर्म, सरकार और निजी कंपनियां सभी को इसे अपनी प्राथमिकता बनानी होगी।

अपराध होने से पहले सुरक्षा तंत्र जरूरी: वर्तमान में हमारी नीतियां अपराध के बाद सक्रिय होती हैं। पुलिस या जांच एजेंसियां तब हरकत में आती हैं जब नुकसान हो चुका होता है। लेकिन अब समय है कि हम अपराध-पूर्व सुरक्षा तंत्र विकसित करें। इसके लिए केवल कानून बना देना ही काफी नहीं है। हमें एक ऐसा सिस्टम चाहिए जहां तकनीकी सतर्कता और विभिन्न विभागों के बीच रीयल-टाइम डाटा शेयरिंग हो। जब तक सूचनाओं का आदान-प्रदान तेज गति से नहीं होगा, हम अपराधियों से एक कदम पीछे ही रहेंगे।

राज्यों, केंद्र सरकार और अन्य देशों के बीच समन्वय: आप देख रहे हैं कि साइबर अपराध की कोई भौगोलिक सीमा नहीं है। अपराधी एक देश में बैठकर दूसरे देश के नागरिक को ठगता है। ऐसे में राज्य और केंद्र सरकार के बीच ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर समन्वय अनिवार्य है। इसमें 'फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स' और वित्त मंत्रालय जैसी संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वित्तीय धोखाधड़ी के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को तोड़ा जा सके। पूरे सरकारी तंत्र के साथ-साथ राज्य और केंद्र की पुलिस के आपसी समन्वय और सहायता जरूरी है।

एआई प्रभावी हथियार: आने वाले समय में साइबर अपराधों के उभरते पैटर्न को समझने के लिए एआई और सिग्नल इंटेलिजेंस सबसे प्रभावी हथियार है। एआई हमें यह पहचानने में मदद करेगा कि ठगों का अगला कदम क्या हो सकता है।

कैंपेन चलाना होगा: डिजिटल चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें तत्काल 'कैपेसिटी बिल्डिंग' पर ध्यान देना होगा। केवल तकनीक विकसित करना काफी नहीं है, बल्कि '1093' जैसे हेल्पलाइन नंबरों का व्यापक प्रचार कर नागरिकों का ऑनलाइन मार्गदर्शन करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। जैसा जागो ग्राहक जागो कैंपेन चलाया गया था, वैसा ही ऑनलाइन सुरक्षा के लिए भी करना होगा।

जब तक हम आम लोगों के साथ सीधा संवाद कर उन्हें शिक्षित नहीं करेंगे, सुरक्षा अधूरी रहेगी।

कई टूल्स उपलब्ध हैं पर जानकारी का अभाव: इंटरनेट सुरक्षा के लिए अभी कई टूल्स उपलब्ध हैं, लेकिन इनके बारे में आम लोगों में जानकारी का अभाव है। फर्ज कीजिए ईमेल की सुरक्षा के लिए ओटीपी को सक्रिय करना, व्हाट्सएप पर टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन का उपयोग करना जैसे मामूली कदम भी नहीं उठाए जा रहे हैं।

बजट में शामिल करनी होगी ऑनलाइन सुरक्षा: जब डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की रफ्तार को रोकना नामुमकिन है, तब इसे सुरक्षित अपनाना ही एकमात्र रास्ता है। हमें यह समझना होगा कि ऑनलाइन सुरक्षा तकनीकी जरूरत नहीं, बल्कि हमारे बजट का अनिवार्य हिस्सा होनी चाहिए। अगर हम नहीं बदलेंगे, तो डिजिटल एनवायरनमेंट में बहुत पीछे छूट जाएंगे।

देश 30s

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आगरा के ताजमहल परिसर में रविवार को तिरंगे के साथ खुशी मनातीं युवतियां। • प्रेट्र

गोपालगंज में किशोरी से गैंगरेप

गोपालगंज। शहर के एक मोहल्ले में रविवार को एक किशोरी के साथ दो युवकों के दुष्कर्म किया। नगर थाने की पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है। सूत्रों के अनुसार, नगर थाने में सब इंस्पेक्टर राखी कुमारी ने किशोरी का बयान दर्ज किया। घटना के संबंध में किशोरी की मां ने बताया कि उसकी बेटी अपने घर पर मौजूद थी। इस बीच दो युवक वहां पहुंचे और उसे घर के सामने स्थित एक मकान में ले जाकर उसे बंद कर दिया।

खनन कारोबारी ने गोली मारकर जान दी

बाजपुर। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम बन्नाखेड़ा में रविवार दोपहर एक खनन कारोबारी ने संदिग्ध परिस्थितियों में खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय वह घर में अकेला था और परिवार के अन्य सदस्य गुरुद्वारे गए हुए थे। पुलिस ने बताया, 40 वर्षीय गुरजीत सिंह पुत्र स्वर्गीय जोगेंद्र सिंहस्वार मुरादाबाद क्षेत्र में साझेदारी में स्टोन क्रशर लगाने की तैयारी कर रहा था।

घूमकर सरकार के काम का हिसाब लेंगे : पीके

पटना। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार सरकार के छह महीना पूरे होने पर एक जून से सड़क पर उतरेंगे। सरकार के कामकाज का हिसाब लेंगे। जो वादा किया गया है, उसकी याद दिलाएंगे। उन्होंने कहा कि बिहार के हर परिवार को कम से कम 15–20 हजार रुपये का रोजगार मिले, ताकि उन्हें पलायन न करना पड़े।

दुधवा में घायल गैंडा शिशु की मौत

लखीमपुर। दुधवा टाइगर रिजर्व के गैंडा पुनर्वास केंद्र दो में घायल गैंडा शिशु को बचाया नहीं जा सका। इलाज के बाद भी उसकी हालत बिगड़ गई और रविवार को उसकी मौत हो गई। आशंका है कि किसी बड़े गैंडे या बाघ जैसे वन्यजीव के हमले में वह घायल हुआ था। दुधवा टाइगर रिजर्व के गैंडा पुनर्वास केंद्र दो में 22 जनवरी को एक गैंडा शिशु को वन विभाग की टीम ने घायल अवस्था में पाया था।

मिट्टी का टीला ढहने से तीन की मौत, दो घायल

सिंगरौली/सोनभद्र। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले के जियावन थाना क्षेत्र के परसोहर में रविवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। घर की पुताई के लिए मिट्टी निकाल रहीं महिलाओं और बच्चियों पर अचानक मिट्टी का टीला ढह गया। हादसे में दो बच्चियों समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं।

बिजनौर में सिलेंडर फटने से बुजुर्ग की मौत

शेरकोट (बिजनौर)। मोहल्ला हलवाईयान स्थित एक मकान में रविवार को सिलेंडर में लगी आग के बाद हुए धमाके में बुजुर्ग की मौत हो गई। धमाका इतना तेज था कि मकान की दीवारें, लेंटर फट गए। परिजनों के अनुसार 65 वर्षीय अंजार अहमद की पुत्रवधू सितारा रविवार दोपहर घर पर खाना बना रही थी। अचानक गैस लीक होने से सिलेंडर ने आग पकड़ ली। सितारा अपने छोटे बच्चे के साथ घर के बाहर निकल गई। अंजार बाहर नहीं निकल पाए।

कारोबारी से एक करोड़ की ठगी

मेरठ, प्रसं। मेरठ में शेयर ट्रेडिंग के नाम पर कपड़ा कारोबारी और डॉक्टर की पत्नी से करीब एक करोड़ रुपये की साइबर ठगी की गई। कारोबारी से करीब 93 लाख रुपये और महिला से सात लाख रुपये हड़प लिए गए। साइबर थाने में मुकदमा दर्ज कराया गया है। पुलिस ने संबंधित बैंक खातों में कुछ रकम भी फ्रीज कराई है।

अश्वनी कुमार खुराना शास्त्रीनगर ए-ब्लॉक में रहते हैं और उनका खंदक बाजार कोतवाली में कपड़े का कारोबार है। अश्वनी ने पुलिस को बताया सोशल मीडिया पर उनका परिचय कुछ लोगों से हुआ।

प्रदूषण संकट भुला नहीं सकते : राहुल

- प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने का किया आग्रह
- स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा गंभीर असर

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने वायु प्रदूषण को लेकर गहरी चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि अगली सर्दी तक इस संकट को भुलाया नहीं जा सकता।

कांग्रेस नेता ने एक्स पोस्ट कर कहा कि हम वायु प्रदूषण की भारी कीमत चुका रहे हैं। हमारे स्वास्थ्य और हमारी अर्थव्यवस्था दोनों पर वायु प्रदूषण का बुरा असर पड़ रहा है। हालात ऐसे हैं कि करोड़ों भारतीय हर दिन अपनी सेहत और अर्थव्यवस्था से यह बोझ उठाते हैं।

बच्चे और बुजुर्ग सबसे ज्यादा परेशान होते हैं। रोजी-रोटी की तलाश में जुटे मजदूर इस समस्या से बुरी तरह प्रभावित हैं।

वायु प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने का किया आग्रह : राहुल गांधी के मुताबिक, बदलाव की दिशा में पहला कदम अपनी आवाज उठाना है। आपकी आवाज मायने रखती है और इसे बुलंद करना मेरा कर्तव्य है। इसके साथ उन्होंने एक लिंक भी साझा किया है। इस लिंक पर क्लिक करने पर आप आवाज भारत की पेज पर पहुंचते हैं। इसमें आपको अपना नाम, पता और उम्र साझा करते हुए यह बताना है कि वायु प्रदूषण ने आपको और आपके प्रियजनों को कैसे प्रभावित किया है। आवाज भारत पेज पर दिए गए आंकड़ों के मुताबिक बड़ी संख्या में लोग इससे जुड़ चुके हैं। बता दें कि दिल्ली में करीब तीन महीने से वायु प्रदूषण का स्तर काफी खराब रहा है।

टोल प्लाजा पर जल गई इलेक्ट्रिक कार

हापुड़, संवाददाता। हाफिजपुर थाना क्षेत्र में रविवार को राष्ट्रीय राजमार्ग 334 पर कुराना टोल प्लाजा के पास एक इलेक्ट्रिक कार में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते कार धू-धू कर जलने लगी। कार सवार ने किसी तरह बाहर निकल कर अपनी जान बचाई। सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल की टीम मौके पर पहुंची।

रविवार को बुलंदशहर जनपद के स्याना अड्डा थाना कोतवाली देहात बुलंदशहर निवासी अमन खरबंदा अपनी इलेक्ट्रिक कार से हापुड़ किसी काम से आ रहा था। प्लाजा के पास अचानक उसकी कार में आग लग गई।

गुलदार की खाल के साथ चार दबोचे

- श्रीनगर स्थित एक होटल में रुके हुए थे वन्य जीव तस्कर
- चाचा-भतीजा की जोड़ी ने कुछ माह पूर्व मारा था गुलदार

श्रीनगर, संवाददाता। वन्य जीवों की तस्करी कर रहे चार लोगों को श्रीनगर पुलिस ने एक होटल से पकड़ा है। तस्करों से एक गुलदार की खाल बरामद की गई है। तस्करों पर मुकदमा दर्ज कर कोर्ट में पेश करने की कार्यवाही की जा रही है।

रुद्रप्रयाग जनपद निवासी चाचा-भतीजा की जोड़ी ने कुछ माह पूर्व अपने गांव के समीप स्थित जंगल में एक गुलदार का शिकार किया था। उसके बाद दोनों ने अपनी पहचान के घनसाली टिहरी के दो साथियों को श्रीनगर स्थित एक होटल में सौदेबाजी करने के लिए बुलाया। लेकिन गोपनीय सूचना पर पहुंची श्रीनगर पुलिस और सीआईयू टीम ने चारों तस्करों को गुलदार की खाल के साथ मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया।

कोतवाली श्रीनगर प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि सीआईयू टीम को गोपनीय सूचना प्राप्त हुई कि श्रीनगर स्थित एक होटल में कुछ वन्य जीव तस्कर रुके हुए हैं। इसके बाद होटलों की सघन चेकिंग व तलाशी शुरू की गई। चेकिंग के दौरान बदरीनाथ राजमार्ग स्थित एक होटल के कमरे में रुके चार लोगों की तलाशी ली गई।

उनके कब्जे से एक गुलदार की खाल बरामद हुई। आरोपी सफरी लाल पुत्र सेठ दास निवासी ग्राम चापड़, हरेटीखाल पट्टी तल्ला नागपुर-रुद्रप्रयाग, बसंतू लाल पुत्र बरदास निवासी ग्राम चापड़, हरेटीखाल पट्टी तल्ला नागपुर-रुद्रप्रयाग, सुरजन पुत्र जलमदास निवासी मल्याकोट घनसाली, टिहरी गढ़वाल और रोशन लाल पुत्र बचन दास निवासी दाट घनसाली टिहरी गढ़वाल को गिरफ्तार कर मुकदमा दर्ज किया गया है।

मेरठ में चाइनीज मांझे ने रेत दी किसान की गर्दन

मेरठ/दौराला, हिटी। दिल्ली-देहरादून हाईवे पार करते समय एक किसान की गर्दन चाइनीज मांझे से कट गई। ऑपरेशन कर उनकी गर्दन पर 32 टांके लगाए गए हैं।

मटौर गांव निवासी 55 वर्षीय किसान सहदेव घर से दौराला बाजार जा रहे थे। गांव के सामने दिल्ली-दून हाईवे पार करते समय वह सड़क किनारे खड़े होकर ट्रक के निकलने का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान ट्रक में उलझा चाइनीज मांझा हवा में लहराता हुआ उनकी गर्दन में फंस गया। तेज धार वाले मांझे ने पल भर में उनकी गर्दन को गहराई से काट दिया और ट्रक के साथ खिंचता चला गया।

सहदेव की गर्दन से खून बहने लगा और वह सड़क पर गिर पड़े। हादसा देख आसपास मौजूद लोग दौड़कर मौके पर पहुंचे और परिजनों को सूचना दी। घायल किसान को मोदीपुरम स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर कुल 32 टांके लगाकर जख्म को बंद किया। किसान के बेटे अतुल ने बताया उनके पिता की हालत खतरे से बाहर है।

नर्सिंग छात्रा का वीडियो वायरल

अम्बेडकरनगर, सं। जलालपुर कोतवाली क्षेत्र में एक नर्सिंग छात्रा का अश्लील फोटो व वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने का मामला सामने आया है। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध आईटी एक्ट की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्रवाई में देरी होने पर छात्रा ने आत्महत्या करने की धमकी दी है। एक गांव निवासी बीएससी नर्सिंग की छात्रा का आरोप है कि मखदूमपुर सिधोरा थाना जैतपुर निवासी विवेक कुमार पुत्र राजपति उसके मोबाइल पर लगातार अश्लील फोटो भेजता है।

अमृतसर के अटारी बॉर्डर पर रविवार को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 'मल्लखंब' की प्रस्तुति देते स्कूली छात्र। • प्रेट्र

मतदान के समय प्रलोभन, पूर्वाग्रह से बचें : राष्ट्रपति

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रविवार को कहा कि लोगों को मतदान करते समय प्रलोभन, पूर्वाग्रह और गलत सूचनाओं से दूर रहना चाहिए। उन्होंने उम्मीद जताई कि लोग अपने विवेक के आधार पर मताधिकार का प्रयोग करेंगे, जिससे देश की चुनावी प्रणाली मजबूत होगी।

16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि राष्ट्रीय मतदाता दिवस सिर्फ एक वार्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत के लोकतंत्र की आत्मा के साथ संवाद करने का एक अवसर है। उन्होंने कहा कि 'एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य' का सिद्धांत बीआर आंबेडकर का उपहार है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा कि दुनिया भर के सभी लोकतंत्र यह मानते हैं कि एक साफ चुनावी सूची एक मजबूत लोकतंत्र की आधारशिला है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, मतदाता होना केवल संवैधानिक विशेषाधिकार नहीं, महत्वपूर्ण कर्तव्य है। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि मतदान व्यवस्था की सुरक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

सियासत | अब राशिद अल्वी ने भी उठाए सवाल, कहा-पार्टी में चर्चा का तंत्र नहीं, इससे पहले पूर्व नेता शकील अहमद भी उठा चुके हैं नेतृत्व पर सवाल

कांग्रेस के मुस्लिम नेताओं ने संवादहीनता पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। पश्चिम बंगाल और असम विधानसभा चुनाव से पहले मुस्लिम नेताओं ने कांग्रेस संगठन में संवादहीनता का मुद्दा उठाया है। पार्टी के मुस्लिम नेता खुद के नजरअंदाज किए जाने से नाराज हैं। इनका आरोप है कि पार्टी में संवादहीनता और मुस्लिम मतदाताओं को लेकर पार्टी के रुख की वजह से एआईएमआईएम को फायदा मिल रहा है। हालांकि, पार्टी ने आधिकारिक तौर पर इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राशिद अल्वी ने पार्टी के अंदरूनी कामकाज पर चिंता जताते हुए कहा है कि कांग्रेस में कोई ऐसा प्रभावी तंत्र नहीं है, जहां नेता खुलकर मुद्दों पर चर्चा कर सकें। इसके साथ उन्होंने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व तक सीमित पहुंच का भी मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं और नेताओं के लिए शीर्ष नेतृत्व से मिलना मुश्किल होता है, जिसके परिणामस्वरूप संगठन में संवादहीनता बढ़ रहा है।

राशिद अल्वी ने पार्टी के पूर्व नेता शकील अहमद के बयान के एक दिन बाद यह टिप्पणी की है। शकील अहमद ने शनिवार को कहा था कि कांग्रेस में कोई अंदरूनी लोकतंत्र नहीं है। अल्वी ने शकील अहमद के बयान से खुद को अलग करते हुए कहा कि उन्होंने उनका बयान नहीं देखा पर, पार्टी में बड़ी समस्या यह है कि कोई ऐसा फोरम नहीं है जहां कार्यकर्ता और नेता द्वारा मुद्दों पर चर्चा किया जा सके। उन्होंने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से मिलना आमतौर पर मुश्किल होता है। लोग अपनी चिंताएं व्यक्त करना चाहते हैं, तो वे कहां जाएं। सभी कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य नहीं हैं, जहां बैठक में वह अपनी बात रख सकें। ऐसे में निश्चित रूप से कांग्रेस में संवादहीनता है। इसे खत्म किया जाना चाहिए।

नजरअंदाज से एमआईएम को मौका : राशिद अल्वी

राशिद अल्वी का दावा है कि पार्टी में मुस्लिम नेताओं को नजरअंदाज किए जाने की वजह से ही एआईएमआईएम को मुस्लिम मतदाताओं में अपना प्रभाव बढ़ाने का मौका मिला है। क्योंकि, कांग्रेस के अंदर मुस्लिम नेता अलग-थलग हैं। खुद पार्टी भी मुस्लिमों और उनसे जुड़े मुद्दों पर बहुत संभलकर प्रतिक्रिया देती है। दूसरी ओर, एआईएमआईएम के अध्यक्ष और लोकसभा सांसद असदुद्दीन ओवैसी खुलकर बोल रहे हैं। कांग्रेस के रुख से नाराज मुस्लिम मतदाताओं का एक वर्ग उनसे प्रभावित होकर वोट कर रहा है। पार्टी में मुस्लिम नेतृत्व को नजरअंदाज किया जाता है, तो ओवैसी जैसे नेता एक शक्तिशाली ताकत बनकर उभरते रहेंगे।

थरूर के बयानों से बढ़ी पार्टी की चुनौती

संविधान पर उनके बयान को लेकर असहज है पार्टी

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। केरल में सब कुछ ठीक नहीं है। कांग्रेस की तमाम कोशिशों के बावजूद वरिष्ठ नेता शशि थरूर पार्टी के लिए नई मुश्किलें पैदा कर रहे हैं।

पार्टी जहां सरकार पर संविधान के ऊपर हमला करने का आरोप लगा रही है, वहीं थरूर ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संविधान को पवित्र मानते हैं। इसके साथ उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का भी जिक्र करते हुए केंद्र सरकार के रुख की वकालत की है।

शशि थरूर की पार्टी से नाराजगी कोई नई बात नहीं है। केरल विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता वाली बैठक से भी थरूर दूर रहे थे। उस वक्त पार्टी ने दलील दी थी कि केरल लिटरेचर फेस्टिवल में शशि थरूर की दो किताबों का विमोचन है, इसलिए वह शामिल नहीं हुए। पर, केरल के कोझिकोड में हुए इस फेस्टिवल में उनके बयान से विवाद बढ़ गया है।

प्रदेश कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि शशि थरूर के बयानों से पार्टी की मुश्किलें बढ़ रही हैं। वह लगातार ऐसे बयान दे रहे हैं, जो पार्टी लाइन से अलग हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित तमाम नेता सरकार पर संविधान के ऊपर हमले करने के आरोप लगा रहे हैं, पर थरूर सार्वजनिक तौर पर संविधान को लेकर सरकार का बचाव कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ कर रहे हैं। केरल में कुछ माह बाद विधानसभा चुनाव हैं। पार्टी पिछले 10 वर्षों से सत्ता से बाहर है। पार्टी की स्थानीय निकाय चुनाव में अच्छे प्रदर्शन से भी उम्मीद जगी है। पर, थरूर के बयानों से भ्रम की स्थिति पैदा होती है।

तिरुवनंतपुरम से थरूर लगातार चार बार लोकसभा चुनाव जीते हैं, पर निगम चुनाव में इस सीट से भाजपा ने जीत हासिल की है। वर्ष 2021 के विधानसभा चुनाव में भी एलडीएफ का प्रदर्शन बेहतर था।

कल्पमेधा

जब जिंदगी को अपने दिल के गीत सुनने के लिए गायक नहीं मिलता, तो वह अपने मन के विचार सुनने के लिए दार्शनिक पैदा कर लेती है।

– खलील जिब्रान

मौसम का मिजाज

आमतौर पर तापमान में थोड़े उतार-चढ़ाव को मौसम के लिहाज से एक सामान्य स्थिति माना जाता है, लेकिन इस वर्ष हिमालयी क्षेत्रों में बर्फबारी में जिस तरह की देरी देखी गई, उस पर स्वाभाविक ही पर्यावरणविदों का ध्यान गया है। हालांकि अब पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी और बारिश हुई है और इसकी वजह से देश के मैदानी क्षेत्रों में भी तापमान में गिरावट की संभावना जताई गई है। मगर इस वर्ष पहाड़ी राज्यों में जिस तरह मौसम के मिजाज में बदलाव देखा गया, बर्फबारी की सामान्य अवधि में देरी हुई, उसका सीधा संकेत यही था कि अब जलवायु परिवर्तन का असर प्रत्यक्ष रूप में सामने आने लगा है। दरअसल, लंबे इंतजार के बाद शुक्रवार को उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में वर्ष का पहला हिमपात हुआ। इसी तरह हिमाचल प्रदेश के शिमला और कश्मीर में भी उम्मीद के मुकाबले करीब दो महीनों की देरी के बाद पहली बर्फबारी हुई। इसकी वजह से कड़ाके की ठंड अपने ज्यादा असर के साथ वापस लौट आई।

हिमालयी प्रदेशों में आमतौर पर नवंबर-दिसंबर में इस तरह के मौसम की संभावना होती है। इसे एक सामान्य चक्र माना जाता है, जिसके असर से दिल्ली और उत्तर भारत के राज्यों में ठंड बढ़ती है। मगर इस बार अब जाकर उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और कश्मीर में बर्फबारी हुई है और इसके मद्देनजर भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने दिल्ली सहित उत्तर-पश्चिमी भारत के मैदानी इलाकों के न्यूनतम तापमान में तीन से पांच डिग्री गिरावट होने की संभावना जताई है। जाहिर है, इन क्षेत्रों में एक बार फिर कुछ दिनों के लिए कड़ाके की ठंड लौट सकती है और इसी के मुताबिक लोगों को थोड़ी सावधानी बरतने की जरूरत पड़ेगी। मौसम की अपनी गति होती है और कई कारणों से उसकी अवधि आगे-पीछे हो सकती है। अगर इसके पीछे वजहें प्राकृतिक हों, तो यह ज्यादा चिंता की बात नहीं होती। मगर इससे इतर इस बार जिस तरह हिमालय के बड़े इलाके में बर्फबारी में दर्ज करने वाली गिरावट या कमी देखी गई, उससे साफ है कि वैश्विक ताप के नतीजे अब अपने व्यापक रूप में सामने आने लगे हैं।

ऐसे अनेक आकलन आ चुके हैं, जिनके मुताबिक सदियों से भारत के जलवायु चक्र का आधार माने जाने वाला हिमालय आज एक चिंताजनक संकट से गुजर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से हिमालय क्षेत्र में सर्दी के मौसम में भी औसत से काफी कम बर्फबारी हो रही है। खासतौर पर जिस मौसम में पहाड़ों को बर्फ से आच्छादित देखा जाता था, उस दौरान भी अब असामान्य रूप से बर्फबारी में देरी हो रही है। यह गौरतलब है कि हिमालय के दायरे में पड़ने वाले क्षेत्रों में कई नदियों का उद्‌गम स्थल है और इस तरह पहाड़ से लेकर मैदानी इलाकों के बड़े हिस्से में खेती और लोगों की जीविका इन पर निर्भर रही है। मगर मानसून और जैव-विविधता का आधार रहा यह इलाका अब कड़ाके की ठंड में भी बिना बर्फ के सूखा रहने लगा है, जिसका असर पारिस्थितिकी पर पड़ना तय है। अब इसे मौसम में किसी सामान्य उतार-चढ़ाव के बजाय जलवायु परिवर्तन के नतीजे के तौर पर देखा जाने लगा है। वैश्विक ताप में बढ़ोतरी का एक परिणाम यह भी है कि ठंड के मौसम में अगर थोड़ी-बहुत बर्फबारी हो, तो भी वह पिघल जाती है। ऐसे में हिमखंडों में सिकुड़न भी एक स्वाभाविक नतीजा है और इसका असर पहाड़ों की स्थिरता पर भी पड़ेगा। शायद यही वजह है कि हाल के वर्षों में पहाड़ी इलाकों में आपदाओं का संकट भी गहराता गया है।

भय का पाठ

हमारे समाज में आज भी यह धारणा बनी हुई है कि डर, डांट और मारपीट से बच्चे के भीतर कमियों में सुधार लाया जा सकता है। पढ़ाई के मामले में कई बार विद्यालयों और यहां तक कि घर-परिवार में भी इसी तरह के प्रयास किए जाते हैं। हालांकि, शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई के दौरान बच्चों के साथ आक्रामक व्यवहार पर कानूनी रूप से पाबंदी है, फिर भी ऐसी घटनाएं अक्सर सामने आती रहती हैं। विद्यालय में अगर किसी बच्चे के साथ मारपीट होती है, तो उसे उम्मीद और भरोसा होता है कि उसके अभिभावक सुरक्षा के लिए आगे आएंगे। मगर जब कोई अभिभावक ही पढ़ाई के लिए अपने बच्चे से मारपीट करने लगे, तो उसे किस तरह की मानसिकता कहा जाएगा। हरियाणा के फरीदाबाद में हाल ही में एक ऐसी ही घटना सामने आई, जिसने सामाजिक एवं पारिवारिक संवेदनाओं और सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। खबरों के मुताबिक, एक पिता ने अपनी चार वर्षीय बेटी को घर पर पढ़ाते समय पचास तक गिनती न लिख पाने के कारण इस कदर पीटा कि उसकी मौत हो गई।

यह गंभीर चिंता का विषय है कि इस तरह की धारणा कैसे बना ली जाती है कि भय या मारपीट से बच्चों में पढ़ने-लिखने की क्षमता बढ़ जाती है। जबकि विभिन्न शोध और अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि किसी भी तरह की आक्रामकता का बच्चों पर बेहद नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों में याददाश्त, एकाग्रता और निर्णय लेने की क्षमता कमजोर होती है, जिससे वे पढ़ाई में और भी ज्यादा पिछड़ जाते हैं। कई बार बच्चों के भीतर ऐसा खौफ पैदा हो जाता है, जो आगे चलकर अवसाद या अन्य तरह के मनोविकार का कारण बन सकता है। ऐसे में इस बात का खयाल रखना बेहद जरूरी है कि बच्चों को किसी भी रूप में हिंसक प्रवृत्ति का सामना न करना पड़े। अगर कोई बच्चा किसी एक तरीके से नहीं समझ पा रहा है, तो उसे दूसरे मनोवैज्ञानिक तरीके से समझाने की कोशिश की जानी चाहिए, क्योंकि सुरक्षित, स्नेहपूर्ण तथा भय एवं तनावमुक्त माहौल में ही बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास संभव हो पाता है।

विकास के दावे और बढ़ती बेरोजगारी

एक ओर सरकार और नीति-निर्माता भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बताने में लगे हैं, दूसरी ओर पढ़े-लिखे युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी, अस्थिर रोजगार और घटती आय गहरी चिंता पैदा करती हैं।

देवेंद्रराज सुथार

हाल के महीनों में देश के अलग-अलग हिस्सों से जो खबरें सामने आईं, वे भारत की आर्थिक कहानी के उस पक्ष को उजागर करती हैं जिसे प्रायः विकास दर, निवेश और बड़े आयोजनों की चमक में ढक दिया जाता है। एक ओर नीति-निर्माता भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बताने में लगे हैं, वहीं दूसरी ओर पढ़े-लिखे युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी, अस्थिर रोजगार और घटती आय गहरी चिंता पैदा करती हैं। हाल ही में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की ओर से जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के आंकड़ों ने यह साफ कर दिया कि शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर फिर से बढ़ रही है और युवाओं के लिए स्थिति और भी गंभीर बनी हुई है। यह विरोधाभास केवल आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह उस विकास के तरीके पर बुनियादी सवाल है जिसे देश बीते एक दशक से अपनाए हुए हैं।

आधिकारिक अनुमानों के अनुसार देश की लगभग पैंसठ फीसद आबादी पैंतीस वर्ष से कम उम्र की है और हर वर्ष लगभग एक करोड़ से अधिक युवा काम की तलाश में श्रम बाजार में प्रवेश करते हैं। यह तभी सार्थक हो सकता है जब अर्थव्यवस्था पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण रोजगार पैदा करे। मगर वास्तविकता यह है कि संगठित क्षेत्र में नई नौकरियों की संख्या सीमित रही है। श्रम मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में संगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि की दर दो फीसद से भी कम रही है, जबकि श्रम बल की वृद्धि इससे कहीं अधिक तेज है। नतीजा यह कि बेरोजगारी और अल्प बेरोजगारी दोनों समस्या गहराती जा रही है। शहरी बेरोजगारी दर पर नजर डालें, तो तस्वीर और भी चिंताजनक दिखाई देती है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2024 के अंत तक शहरी बेरोजगारी दर लगभग सात फीसद के आसपास पहुंच गई थी, जबकि युवाओं यानी अठारह से उनतीस वर्ष के आयु वर्ग में यह दर बारह फीसद से अधिक दर्ज की गई। उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में बेरोजगारी दर इससे भी अधिक है। इंजीनियरिंग, प्रबंधन और सामान्य स्नातक डिग्री रखने वाले लाखों युवा या तो काम की तलाश में भटक रहे हैं या अपनी योग्यता से बहुत कम वेतन और अस्थिर शर्तों पर काम करने पर मजबूर हैं। यह स्थिति न केवल आर्थिक असुरक्षा पैदा करती है, बल्कि सामाजिक असंतोष और मानसिक दबाव को भी जन्म देती है।

ग्रामीण भारत में स्थिति इससे अलग नहीं है। कृषि पर निर्भर आबादी का अनुपात अभी भी लगभग पैंतालीस फीसद है, जबकि कृषि का योगदान सकल घरेलू उत्पाद में पंद्रह फीसद से भी कम रह गया है। इसका अर्थ यह है कि बड़ी संख्या में लोग कम उत्पादकता वाले क्षेत्र में फंसे हुए हैं। खेती से आय बढ़ाने के तमाम सरकारी दावों के बावजूद वास्तविक आय वृद्धि सीमित रही है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार औसत किसान परिवार की मासिक आय आज भी इतनी नहीं है कि वह सम्मानजनक जीवन स्तर सुनिश्चित कर सके। नतीजतन ग्रामीण युवाओं का शहरों की ओर पलायन जारी है, लेकिन शहरों में भी उन्हें स्थायी और सम्मानजनक रोजगार नहीं मिल पा रहा।

पिछले एक दशक में सरकार ने रोजगार संकट से निपटने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं। कौशल विकास मिशन और आत्मनिर्भर भारत जैसे

कार्यक्रमों का उद्देश्य नई नौकरियां पैदा करना और उद्यमिता को बढ़ावा देना बताया गया। इन पहलों से कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। 'स्टार्टअप इंडिया' के तहत दो लाख से अधिक नए उद्यम पंजीकृत हुए हैं और इनके माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों रोजगार सृजित हुए हैं।

> **शिक्षा व्यवस्था और रोजगार बाजार के बीच बढ़ती खाई भी संकट का एक बड़ा कारण है। हर साल लाखों विद्यार्थी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से डिग्रियां लेकर निकलते हैं। मगर इनमें ज्यादातर विद्यार्थी उद्योग की जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षित नहीं होते। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रपटों के अनुसार भारत की बड़ी कार्यशील आबादी औपचारिक कौशल प्रशिक्षण से वंचित है। नतीजतन कंपनियां कुशल श्रमिकों की कमी की शिकायत करती हैं और युवा रोजगार न मिलने की। यह विरोधाभास नीति और क्रियान्वयन दोनों स्तरों पर व्यापक सुधार की मांग करता है।**

मगर यह भी सच है कि इन रोजगारों का बड़ा हिस्सा अस्थायी, परियोजना आधारित या डिजिटल मंचों से जुड़ा हुआ है, जहां सामाजिक सुरक्षा और दीर्घकालिक स्थिरता का अभाव है। उद्योगों की स्थिति भी रोजगार सृजन के लिहाज से उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पाई है। विनिर्माण क्षेत्र को रोजगार वृद्धि का प्रमुख इंजन माना जाता रहा है, लेकिन भारत में इसका योगदान सकल घरेलू उत्पाद में लगभग सोलह से सत्रह फीसद के आसपास अटका हुआ है। चीन, वियतनाम और बांग्लादेश जैसे देशों की तुलना में भारत विनिर्माण में बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने में पिछड़ता दिखता है। श्रम कानूनों की जटिलता, भूमि अधिग्रहण की समस्याएं, बुनियादी ढांचे की कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दबाव ने उद्योगों की रोजगार सृजन क्षमता को सीमित कर दिया है।

सेवा क्षेत्र ने पिछले कुछ वर्षों में अर्थव्यवस्था को संभाला है, लेकिन यहां भी रोजगार का स्वरूप बदल गया है। सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक सेवाओं में उच्च कौशल वाले लोगों को अवसर मिल रहे हैं, लेकिन पारंपरिक सेवाओं में रोजगार या तो ठहरा हुआ है या घट रहा है। इसके अलावा एक ऐसी अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ है, जहां लोग परिवहन, आपूर्ति और डिजिटल सेवाओं से जुड़े छोटे-छोटे काम करते हैं। बेरोजगारी का असर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी है। बेरोजगार या असुरक्षित रोजगार में फंसे युवा अपने भविष्य को लेकर निराश हो रहे हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में बढ़ती भीड़, बार-बार परीक्षाओं का रद्द होने और भर्ती प्रक्रियाओं में देरी से इस निराशा को और गहरा करती है। कई राज्यों में बेरोजगारी को लेकर हुए विरोध प्रदर्शन इस बात का संकेत हैं कि यह समस्या अब केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं रही, बल्कि सड़कों पर दिखने लगी है।

शिक्षा व्यवस्था और रोजगार बाजार के बीच बढ़ती खाई भी इस संकट का एक बड़ा कारण है। हर साल लाखों विद्यार्थी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से डिग्रियां लेकर निकलते हैं। मगर इनमें ज्यादातर विद्यार्थी उद्योग की जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षित नहीं होते। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रपटों के अनुसार भारत की बड़ी कार्यशील आबादी औपचारिक कौशल प्रशिक्षण से वंचित है। नतीजतन, कंपनियां कुशल श्रमिकों की कमी की शिकायत करती हैं और युवा रोजगार न मिलने की। यह विरोधाभास नीति और क्रियान्वयन दोनों स्तरों पर व्यापक सुधार की मांग करता है। महिलाओं की स्थिति इस पूरे परिदृश्य में विशेष रूप से चिंताजनक है। भारत में महिला श्रम भागीदारी दर लंबे समय से कम बनी हुई है। हाल के वर्षों में इसमें कुछ सुधार जरूर हुआ है, लेकिन अभी भी यह दर तीस फीसद के आसपास है, जो वैश्विक औसत से काफी कम है। शिक्षित होने के बावजूद बड़ी संख्या में महिलाएं सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक कारणों से कार्यबल से बाहर रहती हैं। यदि इनकी भागीदारी बढ़े, तो न केवल रोजगार का दायरा विस्तृत होगा, बल्कि आर्थिक वृद्धि भी अधिक समावेशी बन सकेगी।

सरकार की नीतियों में रोजगार को प्राथमिकता देने की बात बार-बार कही जाती है, लेकिन बजटीय आबंटन और वास्तविक क्रियान्वयन में यह प्राथमिकता साफ नहीं दिखती। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर सार्वजनिक खर्च अभी भी सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में सीमित है। अंतरराष्ट्रीय तुलना करें, तो भारत इन क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम निवेश करता है। यदि मानव पूंजी में पर्याप्त निवेश नहीं होगा, तो रोजगार सृजन की किसी भी योजना की सफलता संदिग्ध रहेगी। इस पूरे परिदृश्य में सबसे बड़ा सवाल यह है कि भारत किस तरह के विकास की ओर बढ़ रहा है। यदि विकास का अर्थ केवल सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि और कुछ चुनिंदा क्षेत्रों की प्रगति तक सीमित रहेगा, तो बेरोजगारी और असमानता की समस्या बनी रहेगी।

मनोबल की नौका

शिशिर शुक्ला

जीवन एक अथाह समुद्र के समान है- कभी शांत, कभी उग्र। जीवन में परिस्थितियों की लहरें जब उठती हैं तो मनुष्य के भीतर छिपे भय, आशंकाएं और अनिश्चितताएं सतह पर आ जाती हैं। ऐसे प्रतिकूल समय में जो एकमात्र साधन हमें डूबने से बचाए रखता है, वह है मनोबल। मनोबल दरअसल उस नौका की तरह है जो भयंकर तूफानों के बीच भी हमें दिशा देती है, संतुलन सिखाती है और किनारे तक पहुंचने की उम्मीद बनाए रखती है। साधन अल्प और अपर्याप्त हों, परिस्थितियां विपरीत हों तथा भविष्य धुंधला दिख रहा हो, फिर अगर मनोबल सुदृढ़ है, तो यात्रा की सफलता सुनिश्चित है। मनोबल कोई जन्मजात उपहार नहीं है, बल्कि यह अनुभवों, विश्वासों और मूल्यों से निर्मित एक जीवंत शक्ति है। यह आत्मविश्वास से थोड़ा-सा अलग है, लेकिन उसके साथ गहराई से जुड़ा है।

आत्मविश्वास अक्सर क्षणिक उपलब्धियों से पोषित होता है, जबकि मनोबल दीर्घकालिक धैर्य, संकल्प और आशा से निर्मित होता है। जब पराजय सामने खड़ी हो, तब क्षण भर के लिए आत्मविश्वास तो डगमगा सकता है, लेकिन मनोबल हाथ थामे रखता है और कहता है। आज प्रतिस्पर्धा की तीव्रता, सूचना का अतिभार, सामाजिक तुलना और त्वरित सफलता के दबाव ने मन को अस्थिर बना दिया है। असफलता को जीवन का स्वाभाविक पड़ाव मानने के बजाय उसे यात्रा का अंत समझ लिया जाता है। इसलिए मनोबल की नौका बार-बार डगमगाती है। तूफान तो आएंगे ही। प्रश्न यह है कि हमारे मनोबल की नौका कितनी मजबूत है।

दुनिया मेरे आगे

> **समाज में संवाद और संवेदना का अभाव मनोबल को कमजोर करता है, इसलिए स्वस्थ संबंधों का निर्माण नितांत आवश्यक है। धैर्य मनोबल का स्थायी ईंधन है। त्वरित परिणामों की लालसा मन को सदैव बेचैन करती है। जब अपेक्षाएं तुरंत पूरी नहीं होतीं, तो निराशा उत्पन्न होती है, जो मनोबल को तोड़ देती है।**

जिसके जीवन में उद्देश्य सुस्पष्ट होता है, उसके लिए बड़ी से बड़ी कठिनाइयां और विषम परिस्थितियां भी अर्थपूर्ण हो जाती हैं। निश्चित और दिशायुक्त उद्देश्य संघर्ष को भी निश्चित दिशा प्रदान करता है। उद्देश्य कोई बहुत विशाल लक्ष्य ही हो, यह आवश्यक नहीं है। उद्देश्य के रूप में ईमानदारीयुक्त श्रम, सेवा-भाव या आत्म-विकास का संकल्प भी हो सकता है। दूसरा महत्त्वपूर्ण आधार है अनुशासन और नियमितता। मनोबल आकस्मिक प्रेरणा से नहीं, बल्कि सतत और नियमित अभ्यास से सुदृढ़ होता है। समय पर उठना, कार्य को टालने की प्रवृत्ति से बचना तथा छोटे-छोटे लक्ष्यों को पूरा करना- ये सब मन के भीतर विश्वास का निर्माण करते हैं। प्रत्येक कृतपूर्ण लघु लक्ष्य मनोबल की नौका में एक मजबूत पटरा जोड़ देता है। तीसरा आधार है- सकारात्मक संवाद। हम स्वयं से क्या कहते हैं, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। नकारात्मक आत्मसंवाद मनोबल को भीतर से खोखला कर देता है। इसके विपरीत, यथार्थवादी और आशामय संवाद, जो कठिनाइयों को अंगीकार करते हुए समाधान खोजता है, मनोबल की नौका के लिए पतवार की भूमिका अदा करता है। एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यहां विवेकरहित आशा नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण तथा उद्देश्यपरक आशा की बात है। चौथा आधार है- परस्पर सहयोग, समन्वय और संबंध। मनोबल की नौका दरअसल एक पतवार से नहीं चलती। इसको गति प्रदान करने के लिए अनेक पतवारों का होना अनिवार्य है। परिवार, मित्र, समाज और सहकर्मी- ये सभी हमारे मनोबल की नौका के सहयात्री हैं।

संकट में साझा किया गया दुख परिमाण में आधा रह जाता है और साझा की गई आशा परिमाण में दोगुनी हो जाती है। समाज में संवाद और संवेदना का अभाव मनोबल को कमजोर करता है, इसलिए स्वस्थ संबंधों का निर्माण नितांत आवश्यक है। धैर्य व्यक्ति को समय के साथ तालमेल बिठाकर चलना सिखाता है, नौका को लहरों के साथ संतुलन में रखता है। धैर्य का अर्थ निष्क्रियता नहीं, निरंतर, लेकिन बिना विचलित हुए शांतिपूर्वक प्रयत्न है। यह एक ऐसा अमूल्य गुण है जो व्यक्ति को थकान के क्षण में भी उत्साहपूर्वक एक कदम और बढ़ाने की शक्ति देता है।

आध्यात्मिकता भी मनोबल की नौका को आवेग प्रदान करती है। यहां आध्यात्मिकता से आशय किसी संकीर्ण धार्मिक अर्थ में नहीं, बल्कि जीवन के व्यापक अर्थ-बोध के रूप में है। जब व्यक्ति अपने जीवन को किसी बड़े उद्देश्य से जोड़ता है, तब छोटी असफलताएं उसे तोड़ नहीं पातीं। उद्देश्य की ओर देख कर ही मनोबल की दिशा तय होती है। बिना उद्देश्य के मनोबल क्षणिक एवं अस्थायी होता है, जबकि उद्देश्य के साथ वह दीर्घकालिक रूप ग्रहण कर लेता है। मनोबल की नौका की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए स्वयं की देखभाल अनिवार्य है।

शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, पर्याप्त विश्राम और ध्यान- ये सभी मन के महासागर में उठने वाली लहरों को शांत करते हैं। थका हुआ मन छोटी-सी चुनौती में भी घबरा जाता है, जबकि संतुलित मन बड़े से बड़े संकट का बखूबी सामना कर सकता है। मनोबल की नौका हमें यह सिखाती है कि जीवन में तूफानों से बचना तो संभव नहीं है, लेकिन उनके बीच डूबना भी अनिवार्य नहीं। मनोबल गिरने के बाद उठने का साहस देती है, असफलता के बाद भी प्रयास की सततता के लिए प्रेरणा देती है। जब मनोबल सुरक्षित एवं सशक्त होता है, तब भविष्य भय का नहीं, संभावनाओं का समुद्र बन जाता है।

आज के परिवेश में आवश्यकता है कि हम व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर मनोबल की नौका को सुदृढ़ करें, क्योंकि मजबूत मनोबल ही वह आधार है, जिस पर समृद्ध समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है। लहरें आती रहेंगी, समुद्र भी उग्रता को धारण किए रहेगा, लेकिन मनोबल की नौका मजबूत है, तो यात्रा बिना किसी व्यवधान के अवश्य पूरी होगी।

चौपाल

सेहत के सामने

दवाएं केवल व्यापारिक वस्तु नहीं होतीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन का सहारा भी होती हैं। जब यही दवाएं तय मानकों पर खरी नहीं उतरतीं, तो इसका असर सीधे आम आदमी के स्वास्थ्य, विश्वास और जीवन पर पड़ता है। एक रपट के अनुसार, 170 से अधिक दवाइयां गुणवत्ता मानकों को पूरा नहीं कर सकीं और कुछ नमूने नकली भी पाए गए। मानकों पर खरी न उतरने वाली दवाएं प्रायः अपेक्षित असर नहीं दिखातीं। इससे मरीज की बीमारी ठीक होने के बजाय लंबी खिंच जाती है या और गंभीर रूप ले लेती है। गरीब और मध्य वर्ग, जो पहले ही इलाज के बढ़ते खर्च से जूझ रहा है, ऐसे में दोहरी मार झेलता है। एक ओर बीमारी, दूसरी ओर बेअसर दवाओं पर खर्च। नकली दवाइयों का मामला तो और भी खतरनाक है, क्योंकि उनमें मौजूद कुछ रसायन सीधे शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। जब तक जांच रपट आती है, तब तक वही दवाएं बाजार में बिकती रहती हैं और हजारों-लाखों लोग उनका सेवन कर चुके होते हैं। यह तर्क कि इन दवाइयों का 'कोई प्रतिकूल असर नहीं माना गया', अपने आप में गैर-जिम्मेदाराना है, क्योंकि असर हमेशा तुरंत दिखाई नहीं देता।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

जवाबदेही का सवाल

आज देश भर में आवारा कुत्तों के काटने की सैकड़ों घटनाएं रोज हो रही हैं, उच्चतम न्यायालय इस पर अपनी चिंता जता चुका है। प्रतिवर्ष आवारा कुत्तों के काटने से कई लोगों की मौत हो जाती है। कई बार तो कुत्तों द्वारा बच्चों को नोच कर मार डालने की रूह कंपा देने वाली खबरें भी आई। अभी तेलंगाना में कुछ गांवों में लोगों ने कई आवारा कुत्तों को जहर देकर मार डाला। इस क्रूरता की जितनी भी निंदा की जाए कम है। बचाव के लिए यह कदम उठाना सर्वथा अनुचित है। पिछले कई वर्षों से आम नागरिक आवारा कुत्तों के कारण दहशत में हैं और प्रशासन कुछ ठोस नहीं कर पा रहा। इस संबंध में शीर्ष न्यायालय में याचिका डाली गई। जिस पर अभी लगातार सुनवाई चल रही है। दो मत नहीं कि इस मामले में संबंधित लोगों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। अब प्रशासन को इस समस्या का गंभीरता से समाधान खोजना होगा।

– चरनजीत, नरेला, दिल्ली

चुनौतियों का दायरा

'त्रासद हादसा' (संपादकीय, 23 जनवरी) पढ़ा। आतंकरोधी अभियान के तहत जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में हुए हृदयविदारक हादसे में देश के दस जवानों की जान चली गई, जबकि ग्यारह जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया यही गया कि घना कोहरा, पाला जमने के कारण सड़क पर अत्यधिक फिसलन और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियां इस दुर्घटना की मुख्य वजह थी। जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी और सुदूर इलाकों में सेना के वाहनों के दुर्घटनाग्रस्त होने और जवानों के जान गंवाने की घटनाएं समय-समय पर सामने आती रही हैं, जो चिंता का विषय है। खराब मौसम और कठिन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए जवानों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। सैन्य वाहनों का नियमित और उच्च स्तरीय रखरखाव सुनिश्चित हो। सीमाओं पर तैनात सैनिकों का जीवन अनमोल है। राष्ट्र की सुरक्षा में लगे हर जवान की रक्षा करना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

– हिमांशु शेखर, गयाजी

शिक्षक की फिक्र

'दायित्व का बोझ और शिक्षक की गरिमा' (आलेख, 23 जनवरी) पढ़ा। किसी भी समाज में शिक्षकों को दिया गया सम्मान उसकी बौद्धिक और नैतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है। दुर्भाग्यवश, आज शिक्षकों पर चुनाव ड्यूटी, जनगणना, आपदा प्रबंधन तथा नियमित प्रशासनिक कार्य जैसे अनेक गैर-शैक्षणिक दायित्व थोपे जा रहे हैं, जिनका सीधा असर कक्षा-शिक्षण पर पड़ रहा है। शिक्षण कार्य में निरंतर बौद्धिक संलग्नता, भावनात्मक निवेश, रचनात्मकता और तैयारी की आवश्यकता होती है। जब शिक्षकों को बार-बार उनके मूल दायित्व से हटाया जाता है, तो सबसे पहले शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है और दीर्घकाल में समाज का भविष्य भी। शिक्षकों को सरकारी कर्मचारी तक सीमित कर देना ऐसी नीतिगत सोच को दर्शाता है जो बौद्धिक विकास की अपेक्षा प्रशासनिक सुविधा को प्राथमिकता देती है।

– आशुतोष पांडेय, जम्मू

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

कुछ खास शब्दों में छिपी होती हैं बारीकियां

बजट फ्रांसीसी भाषा के शब्द 'बजुएट' का प्रतिरूप है | **बजट किसी देश का हो सकता है, किसी संस्था का हो सकता है, किसी परिवार का हो सकता है या व्यक्तिगत** | **चुनाव वाले साल के दौरान अंतरिम बजट पेश किया जाता है, अन्यथा केंद्र सरकार हर साल आम बजट पेश करती है**

जनसत्ता कारोबाजार

इस बार एक फरवरी रविवार को आम बजट पेश होने जा रहा है। भारतीय केंद्रीय बजट के इतिहास में पहली बार ऐसा होने जा रहा है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद में बजट पेश करेंगी, उनका यह लगातार नौवां बजट होगा। हालांकि 27 फरवरी, 1999 को भी बजट रविवार को ही पेश किया गया था, लेकिन वह एक अंतरिम बजट था। बजट के कारण अवकाश के दौरान भी भारतीय शेयर बाजार (राष्ट्रीय स्टाक एक्सचेंज/ बाम्बे स्टाक एक्सचेंज) खुले रहेंगे। कारोबाजार के इस विशेष अंक में केंद्रीय बजट निर्माण में प्रयुक्त होने वाले वित्तीय शब्दों के बारे में जानकारी दी जा रही है, जिससे कि जब एक फरवरी को संसद में बजट पेश होगा, तो उसकी बारीकियों को समझने में मदद मिलेगी। दरअसल, आम बजट में कई ऐसे शब्दों का बहुत इस्तेमाल होता है, जिनके बारे में आम लोग कम ही जानते हैं। यदि आप इन शब्दों का अर्थ नहीं जानते हैं तो आपके लिए बजट को समझना आसान नहीं होगा।

बजट की परिभाषा

बजट फ्रांसीसी भाषा के शब्द 'बजुएट' का प्रतिरूप है। जिसका मतलब होता है धन (राजस्व) की आमदनी और उसके व्यय की सूची। 'माइक्रो इकोनोमिक्स' में बजट एक महत्वपूर्ण अवधारणा (कांसेप्ट) है। बजट किसी देश का हो सकता है, किसी संस्था का हो सकता है, किसी परिवार का हो सकता है या व्यक्तिगत। किसी वित्त वर्ष के दौरान सरकार द्वारा विभिन्न करों से प्राप्त राजस्व और खर्च के आकलन को बजट लेखा-जोखा कहा जाता है।

सेंट्रल प्लान आउटले : यह बजटीय योजना का वह हिस्सा होता है, जिसके तहत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए संसाधनों का बंटवारा किया जाता है।

आम बजट और अंतरिम बजट : बजट सरकार के सालाना खर्च का ब्यौरा होता है। इसके जरिए सरकार की प्राप्तियों (आमदनी) और खर्च का लेखा-जोखा पेश किया जाता है। चुनाव वाले साल के दौरान अंतरिम बजट पेश किया जाता है, अन्यथा केंद्र सरकार हर साल आम बजट पेश करती है।

अनुदान मांग : विभिन्न मंत्रालयों व विभागों के प्रस्तावित बजट अनुमान से वास्तविक खर्च अधिक होने की स्थिति में अनुदान मांगों के रूप में सरकार से मंजूरी लेनी होती है। इसे लोकसभा में पारित करवाना होता है। अनुदान मांगों को विनियोग विधेयक के जरिए सदन में पेश होता है। मंजूरी के बाद अनुदान मांगों की स्वीकृत धनराशि को समेकित निधि से निकाला जाता है।

समेकित निधि : केंद्र सरकार द्वारा टैक्सों, कर्जों, बैंकों और सरकारी कंपनियों के लाभांशों से जुटाई जाने वाली धनराशि समेकित निधि में ही जमा की जाती है। संसद की मंजूरी के बिना इस निधि से एक पैसा भी खर्च नहीं किया जा सकता है।

लेखानुदान मांग : बजट को संसद में पारित कराने में लंबा समय लगता है और ऐसे में सरकार एक अप्रैल से पहले पूरा बजट पारित नहीं करा पाती। इस स्थिति में अगले वित्त वर्ष के शुरुआती दिनों के खर्च के लिए सरकार संसद की मंजूरी लेती है। इन मांगों को लेखानुदान मांगें कहते हैं।

योजनागत व्यय : सरकारी व्यय को दो हिस्सों में बांटा जाता है- योजनागत व्यय (प्लांड एक्सपेंडिचर) और गैर-योजनागत व्यय (नान प्लांड एक्सपेंडिचर)। इनमें से योजनागत व्यय की सूची विभिन्न मंत्रालयों और नीति आयोग द्वारा मिल कर बनाया जाता है। इसमें मोटे तौर पर वे सभी व्यय आते हैं, जो विभिन्न विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर किया जाता है।

गैर योजनागत व्यय : गैर योजनागत व्यय के

दो हिस्से होते हैं- गैर योजनागत राजस्व व्यय और गैर योजनागत पूंजीगत व्यय। गैर योजनागत राजस्व व्यय में जो व्यय आते हैं, उनमें शामिल हैं- ब्याज की अदायगी, सब्सिडी, सरकारी कर्मचारियों को वेतन की अदायगी, राज्य सरकारों को अनुदान, विदेशी सरकारों को दिए जाने वाले अनुदान आदि। गैर योजनागत पूंजीगत व्यय में शामिल हैं- रक्षा, पब्लिक इंटरप्राइजेज को दिया जाने वाला कर्ज, राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और विदेशी सरकारों को दिया जाने वाला कर्ज।

पूंजीगत व्यय : पूंजीगत व्यय (कैपिटल एक्सपेंडिचर या कैपेक्स) किसी सरकार द्वारा किया जाने वाला वह व्यय होता है, जो भविष्य के लिए लाभ का सृजन करता है। कैपेक्स का इस्तेमाल संपत्तियां या उपकरण आदि खरीदने के लिए किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न उपकरणों के 'अपग्रेडेशन' के लिए भी इसका उपयोग होता है।

राजस्व आय : कर राजस्व और गैर-कर राजस्व से प्राप्त होने वाली धनराशि को राजस्व आय कहते हैं।

राजस्व व्यय : सरकार के राजस्व खाते से खर्च होने वाली राशि को राजस्व व्यय (रेवेन्यू एक्सपेंडिचर) कहा जाता है। इसमें सभी सरकारी खर्च शामिल होते हैं। सरकारी विभागों, सरकारी निकायों और सरकारी सेवाओं पर होने वाले खर्च की धनराशि, सबसिडी, सरकारी कर्ज पर ब्याज और राज्य सरकारों को अनुदान राजस्व खर्च कहलाते हैं। राजस्व खर्च का नकारात्मक पहलू यह है कि इतनी बड़ी राशि व्यय होने के बावजूद कोई राष्ट्रीय परिसंपत्ति निर्मित नहीं होती है।

कर राजस्व : कोई सरकार कर लगा कर जो राजस्व हासिल करती है, उसे कर राजस्व कहा जाता है। सरकार विभिन्न प्रकार के कर लगाती है, ताकि वह योजनागत और गैर योजनागत व्यय के लिए धन एकत्र कर सके। यह सरकार की आय का प्राथमिक और प्रमुख स्रोत है।

गैर-कर राजस्व : गैर-कर राजस्व वह राशि है, जो सरकार कर के अतिरिक्त अन्य साधनों से एकत्र करती है। इसमें सरकारी कंपनियों के विनिवेश से मिली राशि, सरकारी कंपनियों से मिले लाभांश और सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न आर्थिक सेवाओं के बदले मिली राशि शामिल होती है।

संशोधित लेखा-जोखा : बजट में किए गए आकलनों और मौजूदा आर्थिक परिस्थिति के मद्देनजर इनके वास्तविक आंकड़ों के बीच का अंतर संशोधित लेखा-जोखा कहलाता है। इसका जिक्र आने वाले बजट में किया जाता है।

वित्त विधेयक : नए कर लगाने, कर प्रस्तावों में परिवर्तन या मौजूदा कर ढांचे को जारी रखने के लिए संसद में प्रस्तुत विधेयक को वित्त विधेयक (फाइनेंस बिल) कहते हैं।

विनियोग विधेयक : सरकार द्वारा संचित निधि से रकम निकासी को मंजूरी दिलाने के लिए संसद में प्रस्तुत विधेयक विनियोग विधेयक कहलाता है।

पूंजीगत प्राप्तियां : केंद्र सरकार द्वारा आम जनता और रिजर्व बैंक से लिए जाने वाले कर्ज, विदेशी सरकारों व संस्थानों से मिलने वाले ऋण, विनिवेश के जरिये प्राप्त आमदनी और राज्यों द्वारा वापस की गई उधारी कैपिटल रिसीट (पूंजीगत प्राप्तियां) में शामिल हैं।

पूंजीगत भुगतान या खर्च : जमीन, मकान, मशीनरी आदि की खरीद पर सरकारी खर्च, राज्य सरकारों, केंद्र शासित प्रदेशों और सरकारी कंपनियों को दिए जाने वाले कर्ज पूंजीगत खर्च कहलाते हैं। इस तरह के खर्च को संपत्ति निर्माणगत व्यय माना जाता है।

सरल से कठिन तक कर का चक्कर

क्या है कर

किसी राज्य द्वारा व्यक्तियों या विधिक संस्था से जो अधिभार या धन लिया जाता है उसे कर या टैक्स कहते हैं। कर दो तरह के होते हैं, प्रत्यक्ष कर (डायरेक्ट टैक्स) और अप्रत्यक्ष कर (इनडायरेक्ट टैक्स)। भारत के प्राचीन ऋषि कर के बारे में यह मानते थे कि वही कर संग्रहण प्रणाली आदर्श कही जाती है, जिससे करदाता व कर संग्रहणकर्ता दोनों को कठिनाई न हो। उन्होंने कहा कि कर-संग्रहण इस प्रकार से होना चाहिए, जिस प्रकार मधुमक्खी द्वारा पराग संग्रहण किया जाता है। इस पराग संग्रहण में पुष्प भी पल्लवित रहते हैं और मधुमक्खी अपने लिए शहद भी जुटा लेती है। बजट में कई प्रकार के कर का उल्लेख होता है।

प्रत्यक्ष कर : प्रत्यक्ष कर वह टैक्स होता है, जो व्यक्तियों और संगठनों की आमदनी पर लगाया जाता है, चाहे वह आमदनी किसी भी स्रोत से हुई हो, जैसे निवेश, वेतन, ब्याज आदि। आयकर, संपत्ति कर, कारपोरेट कर आदि प्रत्यक्ष कर के तहत ही आते हैं।

अप्रत्यक्ष कर : ग्राहकों द्वारा सामान खरीदने और सेवाओं का इस्तेमाल करने के दौरान उन पर लगाया जाने वाला टैक्स अप्रत्यक्ष कर कहलाता है। जीएसटी, उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क आदि अप्रत्यक्ष कर के तहत ही आते हैं।

सीमा शुल्क : सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) वह शुल्क होता है जो देश में आयात होने वाले सामानों पर लगाया जाता है।

उत्पाद शुल्क : उत्पाद शुल्क (एक्साइज ड्यूटी) वह शुल्क होता है जो देश के भीतर बनाए जाने वाले सामानों पर लगाया जाता है।

आयकर (इनकम टैक्स) : वह कर है जो सरकार लोगों की सालाना हुई आय पर उनकी आय का कुछ हिस्सा लेती है। यह प्रायः एक खास सीमा से अधिक आय वालों द्वारा अदा किया जाता है। आयकर में निजी कमाई और कंपनियों की आमदनी दोनों शामिल हैं।

मानक कटौती (स्टैंडर्ड डिडक्शन) : आप अपनी आमदनी में से इंश्योरेंस, सीपीएफ, जीपीएफ, पीपीएफ, नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट (एनएससी), कर बचाने वाले म्यूचुअल फंड, पांच साल से ज्यादा की एफडी, आवास लोन के मूलधन जैसे निवेशों में लगा सकते हैं, और ऐसे ही निवेशों को जोड़कर 75 हजार रुपए तक के निवेश पर टैक्स में छूट दी जाती है। इस 75 हजार रुपए को आपकी कुल आय में से घटा दिया जाता है और उसके बाद आयकर का हिसाब लगाया जाता है।

सेवा कर (सर्विस टैक्स) : यह कर किसी व्यक्ति द्वारा प्रदान की गई सेवाओं पर लगाया जाता है और इस कर का भुगतान करने की जिम्मेदारी सेवा प्रदाता की होती है। यह एक अप्रत्यक्ष कर है, क्योंकि यह सेवा प्रदाता द्वारा उसके व्यावसायिक लेन-देन की अवधि में सेवा प्राप्तकर्ता से वसूल किया जाता है।

वैट (वैल्यू एडेड टैक्स) : वैट वह कर है, जो आप किसी सामान की खरीद पर देते हैं। यह कर सेवाओं पर नहीं होता। वर्ष 2017 में जीएसटी लागू होने के बाद से वैट लगभग समाप्त है, लेकिन चुनिंदा उत्पादों जैसे पेट्रोलियम (डीजल, पेट्रोल) और मानव उपभोग के लिए शराब पर ही लगता है।

कर अपवंचन (कर चोरी) : व्यक्तियों, व्यापारिक संस्थानों, ट्रस्टों एवं अन्य समूहों द्वारा अवैध तरीके अपनाकर या गलत सूचना देकर या सही सूचना छिपाकर, कर बचाना (या कम कर अदा करना) कर अपवंचन या कर चोरी (टैक्स इवेशन) कहलाता है।

स्टांप शुल्क (स्टांप ड्यूटी) : यह एक प्रकार का कर है जो सरकारी दस्तावेजों पर लगाया जाता है। ऐतिहासिक रूप से यह अधिकांश राजकीय प्रपत्रों जैसे चेक, रसीद, भूमि पंजीकरण आदि पर लगाया जाता है।

क्या है दरिद्रता चक्र

आर्थिक चिंतन में दरिद्रता चक्र उस स्थिति को कहते हैं जिसमें एक बार गरीबी (दरिद्रता) की स्थिति आने के बाद वह सदा के लिए बनी रहे, जब तक कि कोई बाहरी हस्तक्षेप न किया जाय। कोई व्यक्ति या कोई क्षेत्र जब कभी गरीबी से पीड़ित हो जाता है तो उसकी इस स्थिति के कारण उसे (दूसरों की तुलना में) कुछ हानियां झेलनी पड़तीं है, इन हानियों के कारण वे गरीबी की दशा से बाहर नहीं निकल पाते। दरिद्रता चक्र एक प्रकार का दुष्चक्र है जिसमें, जो गरीब है उसके अशिक्षित रहने की अधिक संभावना है, फिर जो अशिक्षित है उसको अच्छी जीविका (रोजगार) नहीं मिल सकता, अतः गरीबी बनी रहेगी। इसके चलते 'कल्चर आफ पावर्टी', 'डिजीज आफ पावर्टी' की समस्या उत्पन्न होती है। अभी भारत में करोड़ों लोग जो गरीबी रेखा से नीचे हैं और अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं, वे दरिद्रता चक्र के दौर से ही गुजर रहे हैं।

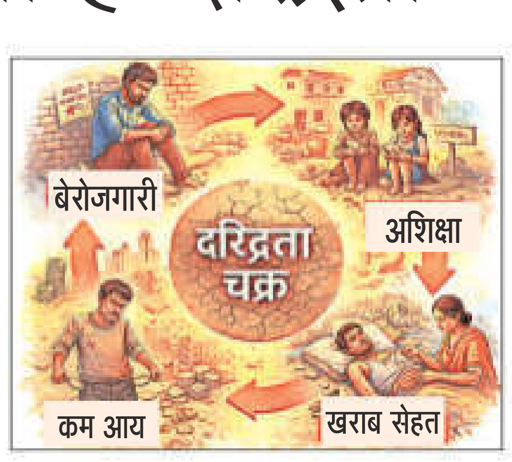

घाटे का गुणा-भाग

चालू खाते का घाटा : चालू खाते का घाटा (करंट अकाउंट डेफिसिट) देश में विदेशी मुद्रा की कुल आवक व निकासी का अंतर बताता है। विदेशी मुद्रा की आवक निर्यात, पूंजी बाजार में निवेश, प्रत्युक्ष विदेशी निवेश और विदेश रह रहे लोगों द्वारा स्वदेश भेजे गए पैसे (रेमिटेंस) के जरिए होती है। जब विदेशी मुद्रा की निकासी आवक से ज्योदा होती है, तो घाटा होता है।

वित्तीय घाटा : सरकार को प्राप्त कुल राजस्व और कुल व्यय के बीच का अंतर वित्तीय घाटा कहलाता है।

बजट घाटा : कुल राजस्व व पूंजीगत खर्चों और कुल राजस्व व पूंजीगत प्राप्तियों के अंतर को बजट घाटा कहते हैं।

राजकोषीय घाटा : बजट घाटा को पाटने के लिए सरकार द्वारा लिए जाने वाले कर्ज और उस पर अन्य देनदारियों को ही राजकोषीय घाटा कहते हैं। मान लीजिए किसी व्यक्ति की सालाना आमदनी दो लाख रुपए है और उसका सालाना खर्च ढाई लाख रुपए है, तो इसका मतलब है कि वह व्यक्ति हर साल पचास हजार रुपए के बजट घाटे में जी रहा है। अब इस घाटे को पाटने के लिए वह पचास हजार रुपए किसी से कर्ज लेगा, जो उसका राजकोषीय घाटा कहलाएगा। अगर वह अपनी आमदनी नहीं बढ़ाएगा तो उसका राजकोषीय घाटा बढ़ता ही जाएगा। यही फंडा सरकार पर लागू होता है।

प्राथमिक घाटा : सरकार के मूल घाटे को प्राथमिक घाटा कहते हैं। कुल राजकोषीय घाटे में से ब्याज के बोझ को हटा देने से जो राशि बचती है, उसे ही प्राथमिक या मूल घाटा कहते हैं।

विदेशी निवेश, मुद्रास्फीति और छूट

विनिवेश : सार्वजनिक उपक्रमों में सरकारी हिस्सेदारी बेचने की प्रक्रिया विनिवेश कहलाती है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : किसी विदेशी कंपनी द्वारा भारत स्थित किसी कंपनी में अपनी शाखा, प्रतिनिधि कार्यालय या सहायक कंपनी द्वारा निवेश करने को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कहते हैं।

वित्तीय नीति : यह सरकार की कर और खर्च के जरिए अर्थव्यवस्था को प्रबंध करने की रणनीति है ताकि महंगाई को नियंत्रित किया जा सके और विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

मुद्रास्फीति (इन्फ्लेशन) : मुद्रास्फीति, जो सामान और सेवा के आम मूल्य स्तर में बढ़ोतरी से पता चलता है, पैसे की खरीद शक्ति को कम करता है। आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए इसे मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना जरूरी होता है।

मुद्रा विनिमय दर : यह दो अलग-अलग मुद्राओं की सापेक्ष कीमत होती है, अर्थात एक मुद्रा के मुकाबले में दूसरी मुद्रा के मूल्य की माप है। किन्हीं दो मुद्राओं के मध्य विनिमय की दर उनकी पारस्परिक मांग और आपूर्ति के आधार पर निर्धारित होती है।

सबसिडी : किसी सरकार द्वारा व्यक्तियों या समूहों को नकदी या कर से छूट के रूप में दिया जाने वाला लाभ सबसिडी कहलाता है। भारत में इसका इस्तेमाल लोगों के हित को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

अर्थव्यवस्था को आकार देने वाले अहम बजट

भारत का आर्थिक सफर हमेशा एक जैसा कभी नहीं रहा। नेहरू के लाइसेंस राज से नरसिम्हा राव के उदारीकरण लेकर मोदी के आर्थिक सुधार तक देश ने कई ऐसे बजट देखे, जिन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को नया आकार दिया। आजादी के तुरंत बाद नवंबर 1947 का अंतरिम बजट, 1951, 1956, 1961 और 1991, 2018 समेत ऐसे कुछ विशेष बजट हैं, जिन्होंने भारत में आर्थिक बदलाव की नई इबारत लिखी।

वर्ष 1947 में 26 नबंबर को स्वतंत्र भारत का पहला बजट आया। तत्कालीन वित्त मंत्री आरके षनमुखम चेट्टी ने बजट पेश किया था। बजट पेश करने का फैसला ही अहम रहा। यह बजट 15 अगस्त 1947 से 31 मार्च 1948 तक (7.5 माह) के लिए पेश किया गया था। देश का यह पहला बजट 197.3 करोड़ रुपए का था। सरकार ने 171.1 करोड़ रुपए के राजस्व का अनुमान लगाया था। इस बजट में पाकिस्तान से आए लोगों को बसाने और खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बड़े कदम उठाए गए थे।

वर्ष 1951 में गणतंत्र भारत का पहला बजट आया। इस बजट ने देश में योजना आयोग (अब नीति आयोग) की स्थापना का रास्ता साफ किया। रूस के तर्ज पर बने इसी आयोग ने देश में विकास को एक आकार दिया।

मनमोहन सिंह ने आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत की

आयात और निर्यात के क्षेत्र में बड़ा निर्णय हुआ। लाइसेंस राज की समाप्ति की घोषणा हुई। सभी बड़े सेक्टर देशी-विदेशी कंपनियों के लिए खोले गए। भारतीय अर्थव्यवस्था को ज्यादा प्रतिस्पर्धी बनाया गया। सीमा शुल्क को 220 फीसदी से घटाकर 150 फीसदी किया गया। उस वक्त भारतीय अर्थव्यवस्था नाजुक दौर में पहुंच चुकी थी। देश के सामने भुगतान संतुलन का संकट पैदा हो चुका था। सरकार के सामने सुधार के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। बाद के दिनों में आर्थिक उदारीकरण के चलते ही भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में ताकत के तौर पर उभरा। आज भारत दुनिया की सबसे तेज ग्रोथ करने वाली अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। मनमोहन सिंह ने अपने वित्त मंत्री रहने के दौरान 1994 में सेवा कर की शुरुआत की। आज यह सरकार की आय का सबसे बड़ा जरिया बन चुका है।

पहली बार बजट की विस्तृत प्रति पेश की गई। बजट में आयकर में कटौती की अब तक की सबसे बड़ी घोषणा की गई। सरकार ने आयकर की दर को पांच आना (30 फीसदी) प्रति रुपए से घटाकर चार आना (करीब 25 फीसदी) कर दिया। वहीं 1.21 लाख से अधिक आय वालों पर 8.5 आना प्रति रुपए के हिसाब से सुपर टैक्स लगाया गया। उस समय अधिकतम इनकम टैक्स 12.5 आना (78 फीसदी) प्रति रुपए तक था।

1957 के बजट में देश में एक कर ढांचा सामने आया। आयात पर बहुत से प्रतिबंध लगाए गए, निर्यात को बढ़ावा देने के नीतिगत उपाय किए गए। बजट में पहली बार एक्टिव इनकम (सैलरी और बिजनेस) और पैसिव इनकम (ब्याज और किराया) की परिभाषा तय की गई। इस बजट से भारत में कठिन आर्थिक हालात पैदा हो गए।

1968 का बजट देश का पहला जनोन्मुखी बजट था, वित्त मंत्री के रूप में मोरारजी देसाई ने पेश किया था। कारखाने के गेट पर एक्साइज विभाग के अधिकारियों द्वारा किसी सामान की स्टैंपिंग और एसेसमेंट की बाध्यता को खत्म किया गया। इसकी जगह सेल्फ एसेसमेंट का सिस्टम लाया गया। आज भी यही सिस्टम काम कर रहा है।

मोदी सरकार ने बदली परंपरा : मोदी सरकार ने बजट पेश करने को लेकर सालों से आ रही दो परंपराओं को बदल दिया। पहले बजट 28 फरवरी को पेश होता था, लेकिन 2018 में यह तारीख बदल दी गई और 1 फरवरी 2018 को वित्त मंत्री अरुण जेटली ने बजट पेश किया। इसी बजट में सरकार ने रेल बजट को भी समाहित कर दिया, जबकि इससे पहले रेल बजट अलग से पेश किया जाता था। अब तक अनेक आर्थिक सुधार बजट के माध्यम से किए जा चुके हैं। इस बार के बजट में आर्थिक सुधार के अगले चरण के शुरू होने की उम्मीद है।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम संबोधन

शुल्क तनाव के बीच राष्ट्रपति का आत्मनिर्भरता पर जोर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली 25 जनवरी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को कहा कि विश्व में शुल्क तनाव के बीच भारत का हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर जोर है। उन्होंने विभिन्न महाद्वीपों में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच रविवार को कहा कि भारत विश्व में शांति का संदेश फैला रहा है, जो मानवता के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मुर्मू ने 77वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए आपरेशन सिंदूर और महिला सशक्तीकरण समेत विभिन्न मुद्दों पर बात की और वंदे मातरम तथा देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था जैसे विषयों पर भी चर्चा की।

राष्ट्रपति मुर्मू ने शांति के संदेशवाहक के रूप में भारत की स्थिति को रेखांकित करते हुए सार्वभौमिक सद्भाव के प्रति प्राचीन सभ्यतागत प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया। अपने संबोधन के दौरान, राष्ट्रपति ने सीमा पार आतंकी ढांचे को नष्ट करने वाले सटीक हमले, आपरेशन सिंदूर की हालिया सफलता पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को भी रेखांकित किया। मुर्मू ने कहा, पिछले वर्ष, हमारे देश ने, आपरेशन सिंदूर के द्वारा, आतंकवाद के ठिकानों पर सटीक प्रहार किया।

‘संवैधानिक कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए मताधिकार का प्रयोग करें’

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को 16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस समारोह में कहा कि हमारी लोकतंत्र की ताकत न केवल मतदाताओं की विशाल संख्या में है, बल्कि लोकतांत्रिक भावना की गहराई में भी है। राष्ट्रपति ने कहा कि मताधिकार महत्त्वपूर्ण है। लेकिन यह भी अनिवार्य है कि सभी नागरिक अपने संवैधानिक कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए इसका इस्तेमाल करें। निर्वाचन आयोग द्वारा चुनी गई थीम ‘मेरा भारत, मेरा वोट’ लोकतंत्र की भावना को दर्शाती है और हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था में मताधिकार की उपयोगिता को रेखांकित करती है। मुर्मू ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारतीय नागरिक अपने विवेक के आधार पर और प्रलोभन, पूर्वाग्रह तथा गलत सूचनाओं से दूर रहकर अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे, जिससे देश की चुनावी प्रणाली मजबूत होगी। उन्होंने चुनाव में बड़ी संख्या में मतदान करने के लिए आगे आने वाली महिलाओं की भी सराहना की।

आतंक के अनेक ठिकानों को ध्वस्त किया गया तथा बहुत से आतंकवादियों को उनके अंजाम तक पहुंचाया गया। उन्होंने कहा, सुरक्षा के क्षेत्र में हमारी आत्मनिर्भरता से आपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता को शक्ति मिली।

सशस्त्र बलों की ताकत पर विचार करते हुए, राष्ट्रपति ने सियाचिन बेस कैंप की अपनी व्यक्तिगत यात्राओं और सुखोई और राफेल में की गई उड़ानों को याद किया। मुर्मू ने कहा, सियाचेन बेस कैंप पहुंचकर मैंने बहादुर सैनिकों को अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी देश की रक्षा के लिए पूरी तरह तत्पर और उत्साहित देखा। भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विमानों, सुखोई और राफेल में उड़ान भरने का अवसर भी मुझे मिला। मैं वायु सेना के युद्ध-कौशल से अवगत हुई। उन्होंने कहा, मैं नौसेना की पनडुब्बी आइएनएस वाघशीर में समुद्र की गहराइयों तक गई। थल-सेना, वायु-सेना और नौसेना की शक्ति के आधार पर, हमारी सुरक्षा-क्षमता पर देशवासियों को पूरा भरोसा है। अपने संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मू ने नारी शक्ति के उदय को 2047 तक भारत के एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में भारत की यात्रा का आधारशिला बताया।

मन की बात कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री

18 साल की उम्र होते ही सबसे पहले मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाएं

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 25 जनवरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को युवा मतदाताओं से अपील की कि 18 साल की उम्र होते ही मतदाता सूची में नाम जरूर जुड़वाएं। मोदी मन की बात कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि युवा साथियों से फिर आग्रह करूंगा कि वे 18 साल का होने पर मतदाता के रूप में खुद को जरूर पंजीकरण करें। संविधान ने हर नागरिक से जिस कर्त्तव्य भावना के पालन की अपेक्षा रखी है इससे वो अपेक्षा भी पूरी होगी और भारत का लोकतंत्र भी मजबूत होगा।

मोदी ने कहा कि आमतौर पर जब कोई 18 साल का हो जाता है, मतदाता बन जाता है तो उसे जीवन का एक सामान्य पड़ाव समझा जाता है। लेकिन, दरअसल ये अवसर किसी भी भारतीय के जीवन का बहुत बड़ा पड़ाव होता है, इसलिए बहुत जरूरी है कि हम देश में वोटर बनने का, मतदाता बनने का, उत्सव मनाएं। जैसे हम जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हैं और उसका जश्न मनाते हैं, ठीक वैसे ही, जब भी कोई युवा पहली बार मतदाता बने तो पूरा मोहल्ला, गांव या फिर शहर एकजुट होकर उसका अभिनंदन करे और मिठाइयां बांटी जाएं। इससे लोगों में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। राष्ट्रीय मतदाता दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में जो भी लोग चुनावी प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं, जो हमारे लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखने के लिए जमीनी स्तर पर काम करते हैं, मैं उन सभी की सराहना करना चाहूंगा। उन्होंने कहा कि आज ‘मतदाता दिवस’ है और मतदाता ही लोकतंत्र की आत्मा होता है।

प्रधानमंत्री ने कहा, आज हम ऐसे क्षेत्र में काम कर रहे हैं जिसकी 10 साल पहले कल्पना नहीं की जा सकती थी। उन्होंने कहा कि दुनिया की निगाह भारत पर, इस वर्ष हम पूरी ताकत से गुणवत्ता को प्राथमिकता दें।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के मौके पर उन्होंने कहा कि देश में जो भी लोग चुनावी प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं, जो हमारे लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखने के लिए जमीनी स्तर पर काम करते हैं, मैं उन सभी की सराहना करना चाहूंगा।

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा नवउद्यम परिवेशी तंत्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उद्योग जगत एवं नवउद्यम से गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने तथा विनिर्माण में उत्कृष्टता को एक मानदंड बनाने का संकल्प लेने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा नवउद्यम परिवेशी तंत्र बन गया है। ये नवउद्यम ढर्रे से हटकर काम कर रहे हैं।ये उन क्षेत्रों में काम कर रहे हैं जिनकी कल्पना भी 10 साल पहले तक नहीं की जा सकती थी। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 130वें मन की बात संबोधन में कहा, भारतीय उत्पाद उच्च गुणवत्ता के पर्याय होने चाहिए।

उन्होंने उद्योग जगत से ऐसे उत्पादों का निर्माण करने का आग्रह किया जिनमें किसी प्रकार की कमी नहीं हो। उन्होंने कहा, हम जो कुछ भी निर्मित करते हैं, आइए, उसकी गुणवत्ता में सुधार करने का संकल्प लें। चाहे वह हमारे वस्त्र हों, प्रौद्योगिकी हो, इलेक्ट्रानिक उपकरण हों या पैकेजिंग, हर भारतीय उत्पाद सर्वोत्तम गुणवत्ता का पर्याय होना चाहिए। उन्होंने उन युवाओं के प्रयासों की भी सराहना की, जिन्होंने 10 साल पहले 2016 में शुरू हुई भारत की नवउद्यम यात्रा में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जल्द हासिल करेंगे तीन करोड़ ‘लखपति दीदी’ बनाने का लक्ष्य : शिवराज

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 25 जनवरी।

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पूसा परिसर में देशभर से गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में शामिल होने आई 400 जीविका दीदियों को संबोधित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा, वर्तमान में 10 करोड़ बहनें स्वयं सहायता समूह हैं। प्रधानमंत्री ने हमें 3 करोड़ दीदी को ‘लखपति दीदी’ बनाने का लक्ष्य दिया है और बहुत जल्द हम इसे हासिल कर लेंगे। महिला उद्यमियों के लिए आनलाइन ऋण सुविधा के लिए नई प्रणाली तैयार की गई है, जिससे उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलेगा।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, आजीविका मिशन अब सिर्फ योजना नहीं, एक क्रांति और आंदोलन बन चुका है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, आजीविका मिशन अब सिर्फ योजना नहीं, एक क्रांति और आंदोलन बन चुका है। केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा, दीदियां आत्मनिर्भर भी हैं और आत्मविश्वास से भरी भी हैं। महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक सशक्त बनाने और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय ने एक नई प्रणाली तैयार की है, जिससे स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को समय पर और आसानी से ऋण मिल सकेगा। अब स्वयं सहायता समूह सदस्यों को किसी भी बैंक से डिजिटल माध्यम से ऋण स्वीकृत कर जारी किए जाएंगे। यह पहल, महिला उद्यमियों को आसानी से ऋण सुविधा उपलब्ध होंगी और उन्हें डिजिटल रूप से सशक्त बनाएगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा, सरस मेले अब केवल दिल्ली में ही नहीं, देश के बाकी हिस्सों में भी लगाए जाएंगे ताकि दीदियों को अपने उत्पाद बेचने के लिए उचित बाजार मिल सके।

बिहार में नीट छात्रा की मौत का मामला

फारेंसिक रपट में बलात्कार के संकेत मिले

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 25 जनवरी।

पटना में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) की तैयारी कर रही छात्रा की मौत के मामले की जांच कर रही पुलिस ने रविवार को कहा कि छात्रा के कपड़ों की फारेंसिक जांच में वीर्य के अंश पाए गए हैं, जो उसके साथ बलात्कार का संकेत देते हैं।

वहीं, इस मामले में एक और घटनाक्रम में पटना पुलिस ने शनिवार देर रात कदमकुआं पुलिस थाने के अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी हेमंत झा और चित्रगुप्त नगर पुलिस थाने की प्रभारी एवं सब-इंस्पेक्टर रोशनी कुमारी को मामले में कर्तव्य की उपेक्षा के आरोप में निलंबित कर दिया। जहानाबाद की रहने वाली

इस मामले में पटना पुलिस ने शनिवार देर रात कदमकुआं पुलिस थाने के अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी हेमंत झा और चित्रगुप्त नगर पुलिस थाने की प्रभारी एवं सब-इंस्पेक्टर रोशनी कुमारी को मामले में कर्तव्य की उपेक्षा के आरोप में निलंबित कर दिया।

18 वर्षीय छात्रा मेडिकल प्रवेश परीक्षा ‘नीट’ की तैयारी कर रही थी और इस महीने की शुरुआत में चित्रगुप्त नगर स्थित शंभू गर्ल्स हास्टल के एक कमरे में अचेत अवस्था में पाई गई थी। वह परीक्षा की तैयारी के लिए निजी हास्टल में रह रही थी। कई दिनों तक कोमा में रहने के बाद 11 जनवरी को एक निजी अस्पताल में उसकी मौत हो गई। उसके परिवार ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए कहा था कि अधिकारी मामले को दबा रहे हैं। एक विशेष जांच दल (एसआइटी) इस मामले की जांच कर रहा है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में कहा गया, छात्रा के उन कपड़ों की फारेंसिक रपट में वीर्य के अंश पाए गए हैं, जो उसने अस्पताल में भर्ती होने के समय पहने थे। ये कपड़े छात्रा के परिवार वालों ने 10 जनवरी को उपलब्ध कराए थे और पुलिस ने इन्हें फारेंसिक जांच के लिए भेजा था। अब मामले की जांच कर रही एसआइटी वैज्ञानिक रपट में पाए गए वीर्य से ‘डीएनए प्रोफाइल’ प्राप्त करेगी। इसका मिलान गिरफ्तार आरोपियों और संदिग्धों के डीएनए प्रोफाइल से किया जाएगा।

फिट इंडिया राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'फिट इंडिया संडे आन साइकिल' कार्यक्रम में भाग लेते बीएसएफ के जवान।

मुंबई : रेलवे स्टेशन पर प्राध्यापक की हत्या करने वाला आरोपी गिरफ्तार

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 25 जनवरी।

राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने मुंबई में मलाड रेलवे स्टेशन पर एक प्राध्यापक की चाकू घोंपकर हत्या किए जाने के मामले में 27 वर्षीय आरोपी को वारदात के 12 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

बोरीवली जीआरपी के अनुसार, शनिवार शाम हुई हत्या के सिलसिले में आरोपी ओमकार एकनाथ शिंदे को पश्चिमी उपनगर के कुरार इलाके से पकड़ा गया। अधिकारी ने बताया कि एनएम कालेज के प्राध्यापक आलोक कुमार सिंह और शिंदे के बीच लोकल ट्रेन से उतरते समय मामूली कहासुनी हुई, जिसने बाद में हिंसक रूप ले लिया। धातु पालिश का काम करने वाले मजदूर शिंदे ने मलाड रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर-1 पर सिंह के पेट में चाकू घोंप दिया और उन्हें खून से लथपथ छोड़कर मौके से फरार हो गया। सिंह को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। अधिकारी के अनुसार, आरोपी स्टेशन पर मौजूद भीड़ का फायदा उठाकर मौके से भाग गया, लेकिन सीसीटीवी फुटेज की मदद से उसकी पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि शिंदे को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं के तहत गिरफ्तार किया गया है और मामले की जांच जारी है।

पुलिस ने 12 घंटे के भीतर आरोपी को पकड़ा। प्राध्यापक आलोक कुमार सिंह और आरोपी शिंदे के बीच लोकल ट्रेन से उतरते समय मामूली कहासुनी हुई थी।

तमिलनाडु में हिंदी के लिए कोई भी जगह नहीं : स्टालिन

चेन्नई, 25 जनवरी (भाषा)।

द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के अध्यक्ष एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने अतीत में हिंदी-विरोधी आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले राज्य के ‘भाषा शहीदों’ की रविवार को सराहना की। इस दौरान उन्होंने कहा कि यहां हिंदी के लिए ‘कोई जगह’ नहीं है।

स्टालिन ने ‘भाषा शहीद दिवस’ के अवसर पर कहा, राज्य ने अपनी भाषा से अपने जीवन की तरह प्रेम किया, उसने हिंदी थोपे जाने के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया और जब-जब इसे थोपा गया, तब-तब उसी तीव्रता से इसका विरोध किया गया। द्रमुक प्रमुख ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, भाषा शहीद दिवस-तमिलनाडु में हिंदी के लिए न तब कोई जगह थी, न अब है और न कभी होगी। उन्होंने 1965 में चरम पर पहुंचे हिंदी-विरोधी आंदोलन से जुड़े इतिहास का एक संक्षिप्त वीडियो साझा किया।

वीडियो में ‘शहीदों’ के साथ-साथ भाषा मुद्दे पर दिवंगत द्रमुक नेताओं सी एन अन्नादुरई और एम करुणानिधि के योगदान का भी उल्लेख किया गया। स्टालिन ने कहा कि तमिलनाडु ने हिंदी-विरोधी आंदोलन का नेतृत्व कर उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाई राष्ट्रीय समूहों के अधिकार और पहचान की रक्षा की। मुख्यमंत्री ने कहा, मैं उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने तमिल भाषा के लिए अपने अनमोल प्राण दिए। भाषा युद्ध में अब और कोई जान नहीं जाएगी, तमिल के लिए हमारा प्रेम कभी नहीं मरेगा। हम हिंदी थोपे जाने का हमेशा विरोध करेंगे। मुख्यमंत्री ने ‘भाषा शहीद’ थलामुथु और नटरासन के स्मारक पर यहां श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अलावा, उन्होंने शहर में चेन्नई महानगर विकास प्राधिकरण (सीएमडीए) भवन पर उनकी प्रतिमाओं का अनावरण किया।

‘भाषा शहीद’ शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने 1964-65 में तमिलनाडु में हिंदी विरोधी आंदोलन के दौरान अपनी जान गंवाई थी। इनमें से अधिकतर ने आत्मदाह किया था। यह दक्षिणी राज्य आज भी दो भाषा सूत्र-तमिल और अंग्रेजी-का पालन करता है। द्रमुक केंद्र पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के जरिए हिंदी थोपे जाने का आरोप लगाती रही है। इस बीच, अन्नाद्रमुक के प्रमुख ई. पलानीस्वामी और तमिलगा वेट्ट्री कषगम नेता विजय ने भी ‘भाषा शहीदों’ को श्रद्धांजलि अर्पित की। पलानीस्वामी ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, तमिल मां हमारे जीवन के समान है।

पेज 1 का बाकी

रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा व आतंक के खिलाफ साझा मोर्चेबंदी पर जोर

की संभावना है। वार्ता पूरी होने की घोषणा इसी सप्ताह हो जाएगी, लेकिन मसौदे की कानूनी समीक्षा के बाद इसे आपसी सहमति वाली तारीख पर हस्ताक्षरित किया जाएगा। इसके क्रियान्वयन में थोड़ा समय लग सकता है क्योंकि इसे यूरोपीय संसद की मंजूरी की आवश्यकता होगी, जबकि भारत में इसे केवल केंद्रीय मंत्रिमंडल की अनुमति चाहिए। इस समझौते के तहत दोनों पक्ष आपसी व्यापार वाली 90 फीसद से अधिक वस्तुओं पर आयात शुल्क को कम या समाप्त करेंगे।

कपड़ा और फुटवियर जैसे श्रम प्रधान क्षेत्रों के उत्पादों पर शुल्क पहले ही दिन से समाप्त हो सकता है, जबकि कुछ अन्य वस्तुओं पर इसे पांच से दस वर्षों में चरणबद्ध तरीके से हटाया जाएगा। यह समझौता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिका द्वारा लगाए गए उच्च शुल्क ने वैश्विक व्यापार प्रवाह को प्रभावित किया है। एक अधिकारी के अनुसार, एफटीए समझौते का उद्देश्य अमेरिकी शुल्क के कारण वैश्विक व्यापार में जारी व्यवधानों के बीच दोनों क्षेत्रों के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देना है। 18 साल के लंबे इंतजार के बाद यह समझौता अब अपने अंतिम पड़ाव पर है। इसकी वार्ता वर्ष 2007 में शुरू हुई थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने इस समझौते को अब तक का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक समझौता ‘मदर आफ आल डील्स’ करार दिया है। अधिकारी ने बताया कि वार्ता के समापन की घोषणा नई दिल्ली में आयोजित होने वाले भारत-ईयू शिखर सम्मेलन के दौरान की जाएगी। यूरोपीय संघ के साथ एफटीए भारतीय निर्यातकों को अपने बाजार विविधीकरण और चीन पर निर्भरता कम करने में मदद करेगा। भारत इस समझौते के जरिए अपने कपड़ा, चमड़ा और हथकरघा जैसे क्षेत्रों के लिए शुन्य-शुल्क बाजार पहुंच की तलाश में है। दूसरी ओर, यूरोपीय संघ अपने वाहन निर्यात, वाइन और हाई-टेक विनिर्माण क्षेत्रों के लिए भारतीय बाजार में अधिक पहुंच चाहता है। संवेदनशील कृषि और डेयरी क्षेत्रों को फिलहाल इस समझौते से बाहर रखा गया है ताकि छोटे और सीमांत किसानों के हितों की रक्षा की जा सके। यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। वित्त वर्ष 2024-25 में दोनों के बीच वस्तुओं का द्विपक्षीय व्यापार 136.53 अरब डालर रहा। इसमें भारत का निर्यात 75.85 अरब डालर और आयात 60.68 अरब डालर था। इसके अलावा, यूरोपीय संघ भारत में एक बड़ा निवेशक भी है, जिसका अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक संचयी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) 117.4 अरब डॉलर रहा है। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआइ) ने रविवार को कहा कि भारत-ईयू मुक्त व्यापार समझौता घरेलू उद्योगों के लिए खतरा बनने के बजाय लागत कम करने और व्यापार विस्तार में सहायक होगा। जीटीआरआइ के संस्थापक अजय श्रीवास्तव के अनुसार, भारत और यूरोपीय संघ एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि साझेदार हैं, क्योंकि दोनों मूल्य श्रृंखला के अलग-अलग स्तरों पर काम करते हैं।

सैन्य शक्ति व विकास यात्रा का होगा प्रदर्शन

होगी, जिसका नेतृत्व ‘कान्टीजेंट कमांडर’ के तौर पर लेफ्टिनेंट करन नाग्याल करेंगे, जबकि लेफ्टिनेंट पवन कुमार गांडी, लेफ्टिनेंट प्रीति कुमारी और लेफ्टिनेंट वरुण द्वेरेरिया प्लाटून कमांडर के तौर पर करेंगे। इसके बाद नौसेना की झांकी होगी, जो ‘मजबूत राष्ट्र के लिए मजबूत नौसेना’ विषय का जीवंत चित्रण करेगी। इस झांकी में पांचवीं शताब्दी ईस्वी की पारंपरिक नौका शामिल होगी, जिसे अब आइएनएसवी कौंडिन्य नाम दिया गया है।समारोह की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय युद्ध स्मारक जाने से होगी, जहां वह शहीदों को पूरे राष्ट्र की ओर से श्रद्धांजलि देने के लिए पुष्पचक्र अर्पित करेंगे।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और मुख्य अतिथियों के ‘पारंपरिक बग्गी’ में कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने की संभावना है। करीब 100 सांस्कृतिक कलाकार परेड की शुरुआत करेंगे, जिसका विषय ‘विविधता में एकता’ होगा। यह परेड संगीतमय वाद्यों का भव्य प्रदर्शन होगी जो देश की एकता और समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करेगी। 129 हेलीकाप्टर यूनिट के ध्वज फार्मेशन में चार एमआई-17 चार हेलीकाप्टर पुष्प वर्षा करेंगे। इसके बाद परेड की शुरुआत होगी और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सलामी लेंगी। परेड का नेतृत्व परेड कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल भावनिश कुमार, जनरल आफिसर कमांडिंग, दिल्ली एरिया करेंगे, जो दूसरे पीढ़ी के अधिकारी हैं। सर्वोच्च वीरता पुरस्कारों के गौरवशाली विजेता भी इसमें शामिल होंगे। इस दल में परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर (मानद कैप्टन) योगेंद्र सिंह यादव (सेवानिवृत्त) और सूबेदार मेजर संजय कुमार शामिल होंगे। अशोक चक्र विजेता मेजर जनरल सीए पिथावालिया (सेवानिवृत्त) और कर्नल डी श्रीराम कुमार भी दल का हिस्सा होंगे।

परेड में यूरोपीय संघ (ईयू) की एक छोटी सैन्य टुकड़ी भी शामिल होगी। पहली बार, परेड में भारतीय सेना का चरणबद्ध ‘बैटल ऐरे फार्मेट’ प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें हवाई घटक भी शामिल होगा। इसमें एक उच्च गतिशीलता वाला टोही वाहन और भारत का पहला स्वदेश निर्मित बख्तरबंद हल्का विशेष वाहन शामिल होगा। अधिकारियों के मुताबिक हवाई सहायता स्वदेशी ध्रुव एडवांस्ड लाइट हेलीकाप्टर और इसका सशस्त्र संस्करण, रुद्र, प्रहार ‘फार्मेशन’ में प्रदान करेंगे। ये युद्धक्षेत्र की रणनीति का प्रदर्शन करेंगे। इसके बाद, सलामी मंच के सामने से टी-90 भीष्म और मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन अपाचे एएच-64ई और आसमान में प्रचंड लाइट काम्बैट हेलीकाप्टर गुजरेंगे। अन्य मेकनाइज्ड कालम में बीएमपी-दो इंफैंट्री काम्बैट व्हीकल के साथ नाग मिसाइल सिस्टम (ट्रैक्ड) एमके-2 शामिल होंगे।

साथ ही अग्रणी स्वदेशी ‘प्लेटफार्म’, जैसे विमान वाही पोत आइएनएस विक्रांत और आइएनएस उदयगिरि भी शामिल होंगे। झांकी में आइएनएसवी तारिणी द्वारा ‘नाविका सागर परिक्रमा-दो’ अभियान के दौरान अपनाए गए परिक्रमा मार्ग का भी चित्रण होगा। इसके अलावा, मुंबई में समुद्री कौशल सिखाने वाली गैर-सरकारी संस्था सी कैडेट्स कार्प्स के युवा कैडेट भी झांकी के साथ मार्च करेंगे। भारतीय वायुसेना की टुकड़ी चार अधिकारियों और 144 एयरमेन का होगा। टुकड़ी कमांडर स्क्वाड्रन लीडर जगदेश कुमार होंगे, जबकि स्क्वाड्रन लीडर निकिता चौधरी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट प्रखर चंद्राकर और फ्लाइट लेफ्टिनेंट दिनेश सुपरन्यूमेररी अधिकारी के रूप में होंगे। अधिकारियों ने बताया कि इस मार्चिंग दस्ते के साथ हवाई फ्लाई-पास्ट भी होगा, जिसमें दो राफेल, दो मिग-29, दो सुखोई-30 और एक जगुआर विमान ‘स्पीयरहेड’ फार्मेशन में उड़ान भरेंगे, जो ‘सिंदूर फार्मेशन’ का प्रतीक होगा। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) अपनी हाइपरसोनिक ग्लाइड मिसाइल एलआर-एएसएचएम का प्रदर्शन करेगा। यह मिसाइल स्थिर और गतिशील लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम है और विभिन्न प्रकार के पेलोड ले जाने के लिए डिजाइन की गई है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के मोटरसाइकिल सवारों की संयुक्त टीम ‘डेयर डेविल्स’ दर्शकों को रोमांचित करेगी। हवाई फ्लाई-पास्ट में 29 विमान शामिल होंगे। इनमें 16 लड़ाकू विमान, चार परिवहन विमान और नौ हेलीकाप्टर होंगे। इसमें राफेल, सुखोई-30 एमकेआई, मिग-29 और जगुआर विमान शामिल हैं। साथ ही रणनीतिक विमान सी-130 और सी-295 और भारतीय नौसेना का पी-8आई विमान भी शामिल होगा। फॉर्मेशन में अर्जन, वज्रांग, वरुण और विजय शामिल होंगे।

डीआरआइ ने 55 करोड़ रुपए मूल्य का मेफेड्रोन जब्त किया

नई दिल्ली, 25 जनवरी (भाषा)।

राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआइ) ने एक गुप्त मेफेड्रोन विनिर्माण प्रयोगशाला का भंडाफोड़ किया है और चार लोगों को गिरफ्तार कर 55 करोड़ रुपए मूल्य का मादक पदार्थ जब्त किया है। वित्त मंत्रालय ने रविवार को यह जानकारी दी। उसने बताया कि डीआरआइ ने ‘सहयाद्रि चेकमेट’ नामक एक अभियान चलाया और सहयाद्रि पर्वतमाला के सुदूरवर्ती इलाके में एक गुप्त सचल मेफेड्रोन विनिर्माण प्रयोगशाला का भंडाफोड़ किया। उसने बताया कि डीआरआइ ने इस अभियान में चार लोगों को गिरफ्तार किया है।

वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा, ‘विभिन्न रूपों में कुल 21.912 किलोग्राम मेफेड्रोन जब्त किया गया, जिसमें 11.848 किलोग्राम तरल रूप में, 9.326 किलोग्राम अर्ध-तरल रूप में और 738 ग्राम क्रिस्टलीय रूप में है। इसके अतिरिक्त, लगभग 15 किलोग्राम तैयार एनडीपीएस पदार्थ बनाने में सक्षम 71.5 किलोग्राम कच्चा माल भी जब्त किया गया। जब्त किए गए मादक पदार्थ का अवैध बाजार मूल्य लगभग 55 करोड़ रुपए होने का अनुमान है।’ मंत्रालय ने कहा कि अवैध प्रयोगशाला को इस तरह से बनाया गया था कि पकड़े जाने से बच जाने के लिए उसे बार-बार स्थानांतरित किया जा सके।